1. मङ्गलम्

1. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । तत्त्वं पुषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।।

अर्थ :- प्रस्तुत श्लोक ईशावास्य० उपनिषद में संकलित तथा मंगलम् पाठ से लिया गया है। इसमें सत्य के विषय मे कहा गया । की संसार के मोह माया के जाल में फँस जाने के कारण विद्वान व्यक्ति भी सत्य की प्राप्ति नहीं कर पाता।

इस श्लोक में कहा गया है कि सत्य का मुख सोने के पात्र से ढ़का हुआ है। इसलिए आप हे प्रभु इस आवरण को हटा दो ताकि सत्य और धर्म को जान सकु ।।

2. अणोरणीयान् महतो महीयान् आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् । तमक्रतुः पश्यति वीतशोको सत्येन पन्था धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ।।

अर्थ :- प्रस्तुत श्लोक कंठोपनिषद से संकलित तथा मंगलम् पाठ से लिया गया है। इसमें आत्मा के स्वरुप एवं निवास के विषय में बताया गया है। आत्मा छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी होती है जो जीवो के हृदय रुपी गुफा में रहती है। जिसे तुक्ष्य बुद्धि वाला आत्मा के ज्ञान से प्रभावित होकर शोक रहित हो जाता है।

3. सत्यमेव जयते नानृतं येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम् ॥

अर्थ :- प्रस्तुत श्लोक मुण्डकोपनिषद् से संकलित तथा मंगलम् पाठ से लिया गया है जिससे जीवन की कामनाओ तथा सत्य और असत्य के बारे में बताया गया है की सत्य की जृत होत है असत्य की नहं। सत्य से ह देवताओ का मागम विस्तार होता है। जिसे ऋषि गण कामनाओ को पाना चाहते है। वह सत्य का परम स्थान है।

4. यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे - ऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय । तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥

अर्थः - प्रस्तुत श्लोक मुण्डकोपिनिषद् से सकंलित तथा मंगलम् पाठ से लिया गया है। जिसमें बताया गया है की जिस प्रकार नदियाँ बहते हुए समुद्र में अपने नाम रूप को त्यागकर मिल जाती है। उसी प्रकार विद्यान लोग अपने नाम रूप को त्यागकर श्रेष्ट परमात्मा को प्राप्त एक आकार हो जाता है।

PDFSARTHI.COM

5. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्, आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाति मृत्युमेति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।।

अर्थ :- प्रस्तुत श्लोक श्वेतारावतरः पनिषद् से संकलित तथा मंगलम् पाठ से लिया गया है। जिसमे बताया गया है की मुझे ही परम् पुरूष जानो जो आदित्य वर्ण के रूप मे अंधकार के आगे प्रकाश के रूप मे हूँ जिसे जानकर मृत्यु को भी पार कर जाता है। इसके अलावा कोई दुसरा रास्ता नही है।

लघु उत्तरीय

प्रश्न 1. आत्मा के स्वरूप का वर्णन करें ?

उतर - परमात्मा ने इस संसार की रचना की लेकिन इसका आनंद वे अकेले नहीं ले सकते। इसलिए उन्होंने अपने स्वरूप को आत्माओं में बाँटा। अब जो गुण परमात्मा के थे वे ही आत्मा के बन गए। जो बड़ों से भी बड़ा एवं छोटों से भी छोटा होता है। जो इस सत्य को समझ लेता है। वह सदा के लिए सुखी हो जाता है।

2. विद्वान् परमात्मा के पास क्या छोड़कर जाते हैं? अथवा, नदियाँ समुद्र में कैसे मिलती हैं?

उतर - जिस प्रकार बहती हुई नदी अपने अंतिम पड़ाव में समुद्र में मिलकर अपना नाम और रूप छोड़कर विलीन होकर सागरमय हो जाती है उसी प्रकार विद्वान् पुरुष भी अपने रूप और नाम दोनों को छोड़कर परम पिता परमेश्वर के स्वरूप से मिलकर एकाकार हो जाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि अहंकार का भाव त्याग देने से अपने लक्ष्य से मिलना आसान हो जाता है।

3. नदी और विद्वान् में क्या समानता है?

उतर - नदी अपने प्रवाह के अंतिम पड़ाव में जब समुद्र में मिल जाती है तो उसका रूप और नाम समाप्त हो जाता है। उसका स्वरूप सागरमय हो जाता है। उसी प्रकार विद्वान लोग अपने को ब्रह्म में मिलाना चाहता है और इसके लिए प्रयासरत होता है। और जब वह ब्रह्म में मिल जाता है तो वह भी अपने रूप और नाम को त्याग देता है और ब्रह्म में विलीन हो जाता है।

4. आत्मा का स्वरूप कैसा है, वह कहाँ रहती है?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - कठोपनिषद् में आत्मा के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा की गई है। मानवों के हृदय में आत्मा का स्थान बताया गया जो अणु से भी छोटा और महान् से भी महान् है। जो इसका रहस्य समझता है वह शोकरहित हो जाता है।

5. 'मंगलम्' पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप बतायें।

उत्तर - 'मंगलम्' पाठ में सत्य की अवधारणा के बारे में बताया गया है। सत्य का मुख हिरण्यमय प्रात्र से ढँका हुआ है। सत्य और धर्म की वास्तविक अवस्था के दर्शन हेतु सूर्य से प्रार्थना की गई है कि वे इसे हटा दें। सत्य के रास्ते पर चलने वाला मानव अपने जीवन में व्याप्त सभी शोकों को पार कर जाता है तथा संसार की श्रेष्ठतम अवस्था पाकर अपना जन्म कृतकृत्य कर लेता है।

6. महान् लोग संसाररूपी सागर को कैसे पार करते हैं ?

उत्तर - ज्ञानी का जीवन प्रकाशमय और अज्ञानी का जीवन अंधकारमय होता है। जो मनुष्य इस ज्ञान और अज्ञान के बीच के रहस्य को समझ जाते हैं वे मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते है एवं इस संसार से ब्रह्म की प्राप्ति कर मुक्त हो जाते हैं। पुनः इस जन्म-मरण के चक्कर में नहीं पड़ते अर्थात् इनकी आत्मा परमात्मा में मिल एकाकार हो जाती है।

7. विद्वान् मृत्यु को कैसे पराजित करते हैं?

उत्तर - विद्वान् पुरुष अपनी अल्पज्ञता को स्वीकार कर दूसरों को अधिक ज्ञानी (प्रकाशस्वरूप) मानते हैं तथा इसी विचार को धारण कर मृत्यु को वश में कर लेते हैं क्योंकि मृत्यु को पार करने का अलग मार्ग नहीं है।

8. 'मङ्गलम्' पाठ का पाँच वाक्यों में वर्णन करें।

उत्तर - वैदिक वाङ्मय के अंतिम भाग में उपनिषदों का स्थान आता है जिसमें जीवन-दर्शन के सिद्धांतों का निरूपण किया गया है। आत्मा और प्रकृति के संयोग से इस जगत् की उत्पति हुई है। परम ज्ञान की प्राप्ति ही इस जीवन का लक्ष्य है। सत्य के स्वरूप का चिंतन, आत्मा की विशेषता, सत्यमेव जयते, विद्वान् पुरुष का दिव्यलोकगमन तथा परम ज्ञान पाकर मृत्यु को वश में करना आदि इस पाठ के मुख्य विषय हैं। इस पाठ के माध्यम से उपनिषदों में आदर्श जीवनशैली का वर्णन किया गया है।

1. मङ्गलम् पाठ कहाँ से संकलित है?

PDFSARTHI.COM

(A) वेद से

(B) पुराण में

(C) उपनिषद् से

(D) वेदाङ्ग से

Ans – (C)

2. महान से भी महान क्या है?

(A) आत्मा

(B) देवता

(C) ऋषि

(D) दानव

Ans – (A)

3. सूक्ष्म से सूक्ष्म कौन है?

6. उपनिषद् किसका अंतिम भाग है?

(A) साहित्य

(B) संस्कृत

(C) वैदिक साहित्य

(D) गीता

Ans – (C)

7. 'मंगलम्' पाठ में किस प्रकार के मंत्र है?

PDF SARTHI.COM

(A) पद्यात्मक

(B) गद्यात्मक

(C) संकलनात्मक

(D) नाट्यात्मक

Ans – (A)

8. उपनिषद् किसका सिद्धांत प्रकट करता है?

(A) पुराण का

(B) दर्शन का

(C) ईश्वर का

(D) आत्मा का

Ans – (B)

9. किसे वश में नहीं किया जा सकता है?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) विद्या

(D) सिंह

Ans – (A)

10. विद्वान शोक रहित होकर किसको देखता है?

(A) आत्मा

PDF SARTHI.COM

(B) विद्या

(C) परमात्मा

(D) मानव

Ans – (C)

11. सत्य से किसका रास्ता प्रशस्त होता है?

(A) घर का

(B) देवलोक

(C) विद्यालय

(D) युद्ध का

Ans – (B)

12. यह संपूर्ण संसार किसके द्वारा अनुशासित है?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) साहित्य

(D) इनमें नहीं

Ans – (B)

13. 'वेदा हमेतं पुरुष महान्तम् ..... विद्यतेऽयनाय। मंत्र किस उपनिषद् से लिया गया है।

(A) कठोपनिषद् से

(B) श्वेताश्वेतरोपनिषद् से

PDF SARTHI.COM

(C) मुण्डकोपनिषद् से

(D) ईशावास्योपनिषद् से

Ans – (B)

14. अणोरणीयान् महतो ..... महिमानमात्मनः। मन्त्र किस उपनिषद् से संगृहीत है?

(A) मुण्डकोपनिषद् से

(B) कठोपनिषद् से

(C) श्वेताश्वतरोपनिषद् से

(D) ईशावास्योपनिषद् से

Ans – (B)

15. नदियाँ नाम और रूप को छोड़कर किस में मिलती है?

(A) समुद्र में

(B) मानसरोवर में

(C) तालाब में

(D) झील में

Ans – (A)

16. किसकी विजय नहीं होती है?

(A) सत्य की

(B) असत्य की

(C) धर्म की

PDF SARTHI.COM

D) सत्य और असत्य दोनों की

Ans – (B)

17. किनकी महिमा का गायन हुआ है?

(A) विद्वान

(B) आत्मा

(C) समुद्र

(D) परमात्मा

Ans – (D)

18. सबसे बड़ा खजाना क्या है?

(A) धन

(B) विद्या

(C) स्वर्ण

(D) सत्य

Ans – (D)

19. ईश्वर क्या है?

(A) धन

(B) सत्य

(C) समुद्र

(D) असत्य

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

20. ईशावास्योपनिषद् में किसके विषय में कहा गया है?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) मानव

(D) सत्य

Ans – (D)

21. कठोपनिषद् में किसके बारे में कहा गया है?

(A) परमात्मा

(B) मोक्ष

(C) माया मोह

(D) धन

Ans – (B)

22. 'श्वेताश्रोपनिषद्' में किसके बारे में कहा गया है?

(A) परमात्मा

(B) आत्मा

(C) विद्वान्

(D) नदियाँ

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

23. किसके प्रभाव से विद्वान शोक रहित होते हैं?

(A) धन

(B) मन

(C) इंद्रिय

(D) जन

Ans – (C)

24. 'सत्यमार्ग' से विद्वान कहाँ जाते हैं?

(A) देवलोक

(C) परलोक

(B) यमलोक

(D) पाताललोक

Ans – (A)

25. कौन अपने नाम और रूप को छोड़कर समुद्र में मिल जाता है?

(A) समुद्र

(B) झरना

(C) नदियाँ

(D) मार्ग

Ans – (C)

26. साधक किसको पार करते हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) मृत्यु को

(B) अमरता को

(C) सत्य को

(D) जीवन को

Ans – (A)

27. सत्य धर्म के लिए किसको हटा दें?

(A) आवरण को

(B) असत्य को

(C) सत्य को

(D) हिरण्मयेन पात्र को

Ans – (D)

28. सत्य का मुख किस पात्र से ढका है ?

(A) स्वर्ण

(B) शस्त्र

(C) शास्त्र

(D) विद्या

Ans – (A)

29. नदियाँ क्या छोड़कर समुद्र में मिल जाती है?

(A) स्वरूप

PDF SARTHI.COM

(B) नाम

(C) काम

(D) जल

Ans – (B)

30. प्राणियों के हृदयरूपी गुफा में कौन बंद है?

(A) देव:

(B) राक्षसम्

(C) आत्मा

(D) शरीरम्

Ans – (C)

31. नदियाँ कहाँ जाकर मिलती है?

(A) सरोवर में

(B) समुद्र में

(C) तालाब में

(D) नगर में

Ans – (B)

32. किसकी जय होती है?

(A) क्रोध

(B) मोह

PDF SARTHI.COM

(C) असत्य

(D) सत्य

Ans – (D)

33. किसका मुख सोने के पात्र से बंद है?

(A) सत्य का

(B) असत्य का

(C) दर्शन का

(D) मानव का

Ans – (A)

34. ब्राह्मण का मुख किससे ढ़का है?

(A) रुपया से

(B) लोहा से

(C) सोने से

(D) मिट्टी से

Ans – (C)

35. विद्वान अपना नाम छोड़कर किसमें मिल जाता है?

(A) आत्मा

(B) जल

(C) परमात्मा

PDF SARTHI.COM

(D) हवा में

Ans – (C)

36. ऋषिलोग देवलोक की प्राप्ति के लिए किस मार्ग को अपनाते हैं?

(A) जलमार्ग

(B) सत्यमार्ग

(C) वायुमार्ग

(D) असत्यमार्ग

Ans – (B)

37. हिरण्ययेन पात्रेण ..... सत्यधर्माय दृष्टये। किस उपनिषद् का मंत्र है?

(A) कठोपनिषद्

(B) मुण्डकोपनिषद्

(C) ईशावास्योपनिषद्

(D) गीता

Ans – (C)

38. उपनिषद् के अंतिम भाग में किसका सिद्धांत है?

(A) दर्शनशास्त्र

(B) पुराण

(C) गीता

(D) अर्थशास्त्र

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

39. 'आदित्य' का पर्यायवाची क्या है?

(A) चन्द्र

(B) सरोवर

(C) सूर्य

(D) ईश्वर

Ans – (C)

40. 'सत्यमेव जयते' किस उपनिषद् का मूलमंत्र है?

(A) मुण्डकोपनिषद्

(B) ईशावास्योपनिषद्

(C) कठोपनिषद्

(D) केनोपनिषद्

Ans – (A)

41. किसकी गुफा में आत्मा निहित है?

(A) पर्वतीय गुफा में

(B) कृत्रिम गुफा में

(C) जीवों के शरीर रुपी गुफा में

(D) किसी में नहीं

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

42. 'मंगलम्' पाठ में कुल कितने मंत्र (पद्य) हैं?

(A) पाँच

(B) तीन

(C) चार

(D) छः

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

2. पटलीपुत्रवैभवम्

[बिहारराज्यस्य राजधानीनगरं पाटलिपुत्रं सर्वेषु कालेषु महत्वमधारयत् । अस्येतिहासः सार्धसहस्रद्वयवर्षपरिमितः वर्तते। अत्र धार्मिकक्षेत्रं राजनितिक्षेत्रम् उद्योगक्षेत्रं च विशेषेण ध्यानाकर्षकम् । वैदेशिकाः यात्रिणः मेगास्थनीज फाह्यान हुयेनसांग -इत्सिंगप्रभृतयः पाटलिपुत्रस्य वर्णनं स्व स्व संस्मरणग्रन्थेषु चक्रुः । पाठेऽस्मिन् पाटलिपुत्रवैभवस्य सामान्यः परिचयो वर्तते ।]

(बिहार राज्य की राजधानी नगर पटना सभी कालों में महत्व धारण किया या महत्वपूर्ण रहा। इसका इतिहास लगभग 2500 वर्ष पुरानी है। यहां धार्मिक , राजनीतिक और उद्योग क्षेत्र पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया। विदेशी यात्रियों मेगास्थनीज, फाह्यान, ह्वयेसांग और इत्सिंग इत्यादि पटना का वर्णन अपने-अपने संस्मरण ग्रन्थों में किये हैं। इस पाठ में पटना के वैभव का सामान्य परिचय हैं ।]

प्राचीनेषु भारतीयेषु नगरेष्वन्यतमं पाटलिपुत्रमनुगङ्गं वसद्विचित्रं महानगरं बभूव । तद्विषये दामोदरगुप्तो नाम कविः कुट्टनीमताख्ये काव्ये कथयति-

अस्ति महीतलतिलकं सरस्वतीकुलगृहं महानगरम् । नाम्ना पाटलिपुत्रं परिभूतपुरन्दरस्थानम् ।।

प्राचीन भारतीय नगरों में गंगा नदी के किनारे बसा पटना एक विचित्र महानगर हुए। इसके विषय में दामोदर गुप्त नामक महाकवि कुट्टनीमताख्य काव्य में कहते हैं, कि "पृथ्वी का तिलक और विद्वानों का निजावास पाटलिपुत्र नामक महानगर स्वर्ग के जैसा परिपूर्ण स्थान है।"

इतिहासे श्रूयते यत् गङ्गायास्तीरे बुद्धकाले पाटलिग्रामः स्थितः आसीत् । यत्र च भगवान् बुद्धः बहुकृत्वः समागतः। तेन कथितमासीत् यद् ग्रामोऽयं महानगरं भविष्यति किन्तु कलहस्य अग्निदाहस्य जलपूरस्य च भयात् सर्वदाक्रान्तं भविष्यति । कालान्तरेण पाटलिग्रामः एव पाटलिपुत्रमिति कथितः । चन्द्रगुप्तमौर्यस्य काले अस्य नगरस्य शोभा रक्षाव्यवस्था च अत्युत्कृष्टासीदिति यूनानराजदूतः मेगास्थनीजः स्वसंस्मरणेषु निरूपयति । अस्य नगरस्य वैभवं प्रियदर्शिनः अशोकस्य समये सुतरां समृद्धम् ।

इतिहास में सुने जाते हैं, कि गंगा के किनारे भगवान बुद्ध के समय में पाटलिग्राम स्थित था। और यहां भगवान बुद्ध अनेक बार आए । उनके द्वारा कहा गया था, कि यह ग्राम महानगर होगी लेकिन कलह, अग्निदाह और बाढ़ के भय

PDFSARTHI.COM

से हमेशा घिरी रहेगी। समय के बदलने से पाटलीग्राम ही (पटना) या पाटलिपुत्र ऐसा कहलाया। चंद्रगुप्तमौर्य के समय में इस नगर का शोभा और रक्षाव्यवस्था बहुत अच्छी थी यूनान के राजदूत मेगास्थनीज अपने स्मरण ग्रन्थों में लिखा है। इस नगर का वैभव और देखने में प्रिय सम्राट अशोक के समय में और अधिक समृद्ध था ।

बहुकालं पाटलिपुत्रस्य प्राचीना सरस्वतीपरम्परा प्रावर्तत इति राजशेखरः स्वकाव्यमीमांसानामके कविशिक्षाप्रमुखे ग्रन्थे सादरं स्मरति ।

बहुत हाल तक पटना का सरस्वती परंपरा चलती रही, ऐसा राजशेखर अपने काव्यमीमांसा नामक कवि शिक्षा प्रमुख ग्रंथ में आदर सहित स्मरण करते हैं।

अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनिपिङ्गलाविह व्याडिः । वररूचिपतञ्जली इह परीक्षिताः ख्यातिमुपजग्मुः ।।

यहां वर्ष - उपवर्ष महर्षि पाणिनी, पिंगल, व्याडि, वररूचि, पतंजलि आदि विद्वानों ने अध्ययन कर संसार में ख्याति (यश) अर्जित किये ।

कतिपयेषु प्राचीनसंस्कृतग्रन्थेषु पुराणादिषु पाटलिपुत्रस्य नामान्तरं पुष्पपुरं कुसुमपुरं वा प्राप्यते । अनेन ज्ञायते यत् नगरस्यास्य समीपे पुष्पाणां बहुलमुत्पादनं भवति स्म । पाटलिपत्रमिति शब्दोऽपि पाटलपुष्पाणां पुत्तलिकारचनामाश्रित्य प्रचलितः । शरत्काले नगरेऽस्मिन् कौमुदीमहोत्सवः इति महान् समारोहः गुप्तवंशशासनकाले अतीव प्रचलितः । तत्र सर्वे जनाः आनन्दमग्नाः अभूवन् । सम्प्रति दुर्गापूजावसरे तादृशः एव समारोहः दृश्यते ।

कइयों प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों, पुराणों आदि में पाटलिपुत्र का बदलाव हुआ नाम पुष्पपुर या कुसुमपुर मिलते हैं। इससे ज्ञात होता है, कि इस नगर के समीप में फूलों का बहुत अधिक उत्पादन होता था। यह "पाटलिपुत्र" शब्द भी गुलाब फूलों के पंखुड़ियों का आश्रय लेकर प्रचलित हुआ। शरद काल में इस नगर में कौमुदी महोत्सव जैसा महान समारोह गुप्तवंश के शासनकाल में अत्यंत प्रचलित था। वहां सभी लोग आनंदमगन होते थे। आजकल दुर्गा पूजा के अवसर पर वैसा ही समारोह को देखे जाते हैं।

कालचक्रवशात् यद्यपि मध्यकाले पाटलिपुत्रं वर्षसहस्रपरिमितं जीर्णतामन्वभूत् । तस्य सङ्केतः अनेकेषु साहित्यग्रन्थेषु मुद्राराक्षसादिषु लभ्यते। मुगलवंशकाले अस्य नगरस्य समुद्धारो जातः । आंग्लशासनकाले च पाटलिपुत्रस्य सुतरां विकासो जातः । नगरमिदं मध्यकाले एव पटनेति नाम्ना प्रसिद्धिमगात् । अयं च शब्दः पत्तनमिति शब्दात् निर्गतः । नगरस्य पालिका देवी पटनदेवीति अद्यापि पूज्यते ।

PDFSARTHI.COM

कालचक्र के वश से यद्यपि मध्यकाल में पटना लगभग हजार वर्ष जर्जर अवस्था में रहा। जिसका संकेत अनेक साहित्य ग्रन्थों, मुद्राराक्षस आदि नाटकों में मिलते हैं। मुगलवंश के समय में इस नगर के समुचित उद्धार हुआ। और अंग्रेजी शासन काल में पटना का और अधिक विकास हुआ यह नगर मध्यकाल में ही "पटना" इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। और यह शब्द "पत्तनम्" शब्द से निकाला है। नगर की पालिका देवी पटन देवी आज भी पूजी जाती हैं।

सम्प्रति पाटलिपुत्रम् (पटना नाम नगरम्) अति विशालं वर्तते बिहारस्य राजधानी चास्ति । अनुदिनं नगरस्य विस्तारः भवति । अस्योत्तरस्यां दिशि गङ्गा नदी प्रवहति । तस्या उपरि गाँधीसेतुर्नाम एशियामहादेशस्य दीर्घतमः सेतुः किञ्च रेलयानसेतुरपि निर्मीयमानो वर्तते । नगरेऽस्मिन् उत्कृष्टः संग्रहालयः, उच्चन्यायालयः, सचिवालयः, गोलगृहम्, तारामण्डलम्, जैविकोद्यानम्, मौर्यकालिकः अवशेषः, महावीरमन्दिरम् - इत्येते दर्शनीयाः सन्ति । प्राचीनपटनानगरे सिखसम्प्रदायस्य पूजनीयं स्थलं दशमगुरोः गोविन्दसिंहस्य जन्मस्थानं गुरूद्वारेति नाम्ना प्रसिद्धं वर्तते । तत्र देशस्यास्य तीर्थयात्रिणः दर्शनार्थमायान्ति ।

इस समय पटना बहुत विशाल है और बिहार राज्य की राजधानी है। दिन-प्रतिदिन नगर का विस्तार होता है। इसके उत्तर दिशा में गंगा नदी बहती है। उसके ऊपर गांधी सेतु नामक एशिया महादेश के सबसे बड़ी सेतु (पुल) और कुछ रेलयान सेतु भी निर्माणाधीन हैं। इस नगर में उत्कृष्ट संग्रहालय, उच्चन्यायालय, सचिवालय, गोलघर, तारामंडल, जैविक उद्यान, मौर्यकालिक अवशेष, महावीर मंदिर इत्यादि दर्शन के योग्य हैं। प्राचीन पटना नगर में सिख संप्रदाय के पूजनीय स्थल दशम गुरु गोविंद सिंह के जन्म स्थान "गुरुद्वारा" इस नाम से प्रसिद्ध है। जहां इस देश के तीर्थयात्रियों दर्शन के लिए आते हैं।

एवं पाटलिपुत्रं प्राचीनकालात् अद्यावधि विभिन्नेषु क्षेत्रेषु वैभवं धारयति सर्वं च संकलितरूपेण संग्रहालये दर्शनीयमिति । पर्यटनमानचित्रे नगरमिदं महत्वपूर्णम् ।

इस प्रकार पटना प्राचीन काल से आज तक विभिन्न क्षेत्रों में वैभव धारण की हुई है और सभी संकलित रूप से संग्रहालय में दर्शनीय है। पर्यटन के मानचित्र पर यह नगर महत्वपूर्ण है।

1. प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में पाटलिपुत्र की ख्याति किस रूप में थी ?

उत्तर- प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में और पुराणों में पाटलिपुत्र का नाम पुष्पपुर या कुसुमपुर माना जाता है। इस नगर के समीप पाटल पुष्पों का उत्पादन होता था । सभवतः पाटलिपुत्र शब्द भी यहाँ पाटल पुष्पों के पल्लवित होने के

PDFSARTHI.COM

कारण प्रचारित है । शरत काल में कौमुदी महोत्सव होता था। यह महोत्सव दुर्गापूजा के असवर-सा दृष्टिगत होता था।

2. पाटलिपुत्र नगर के वैभव का वर्णन करें।

उत्तर- पाटलिपुत्र प्राचीनकाल से ही अपनी वैभव परम्परा के लिए विख्यात रही है। विदेशी यानी लोग आकर अपने संस्मरणों में यहाँ की अनेक उत्कृष्ट सम्पदाओं का वर्णन किया है । मेगास्थनीज ने लिखा है कि चन्द्रगुप्तमौर्य काल में यहाँ की शोभा और रक्षा व्यवस्था अति उत्कृष्ट थी अशोक काल में यहाँ निरन्तर समृद्धि रही। कवि राजशेखर ने अपनी रचना काव्यमीमांसा में ऐसी ही बात लिखी है कि यहाँ बड़े-बड़े कवि-वैयाकरण-भाष्यकार यहाँ परीक्षित हुए। आज पाटलिपुत्र नगर 'पटना' नाम से जाना जाता है जहाँ संग्रहालय, गोलघर, जैविक उद्यान इत्यादि दर्शनीय स्थल हैं। इस प्रकार पाटलिपुत्र प्राचीनकाल से आज तक विभिन्न क्षेत्रों में वैभव धारण करता है जिसका संकलित रूप संग्रहालय में देखने योग्य है।

3. पाटलिपुत्रवैभवम् पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर- इसमें बिहार की राजधानी पटना के प्राचीन महत्त्व का निरूपण करने के साथ ऐतिहासिक परम्परा से आधुनिक राजधानी के प्रसिद्ध स्थलों का भी निरूपण किया गया है। इस पाठ को कण्ठाग्र करके छात्र किसी वाक्–प्रतिस्पर्धा में भाग ले सकते हैं।

4.कवि दामोदर गुप्त के अनुसार पाटलिपुत्र कैसा नगर है ?

उत्तर- कवि दामोदर गुप्त के अनुसार पाटलिपुत्र (पटना) महानगर पृथ्वी पर बसे नगरों में श्रेष्ठ है। यहाँ सरस्वती के वंशज यानि विद्वान लोग वसते हैं। कवि ने इस महानगर की तुलना इन्द्र की भरी-पुरी नगरी से की है।

5. पाटलिपुत्र को शिक्षा का प्राचीन केंद्र क्यों माना जाता है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर- राजशेखर-रचित काव्यमीमांसा 'काव्य' से हमें जानकारी मिलती है कि पाटलिपुत्र शिक्षा का एक प्राचीन केंद्र था। यहाँ संस्कृत के अनेक विद्वान हुए । पाणिनी, पिङ्गल, वररुचि तथा पतञ्जलि की परीक्षा यहीं ली गई थी और यहीं उन्होंने ख्याति प्राप्त की थी।

6. चंद्रगुप्त मौर्य तथा अशोक के समय पाटलिपुत्र कैसा नगर था ?

उत्तर- चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पाटलिपुत्र की रक्षा-व्यवस्था काफी मजबूत थी। यह सुंदर नगर था। अशोक के शासनकाल में इस नगर का वैभव और अधिक समृद्ध हुआ ।

7. पाटलिपुत्र के प्राचीन महोत्सव का वर्णन करें।

उत्तर- पाटलिपुत्र से शरतकाल में कौमुदी महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता था। सभी नगरवासी आनंदमग्न हो जाते थे। इस समारोह का विशेष प्रचलन गुप्तवंश के शासनकाल में था । आज़कल जिस तरह दुर्गापूजा मनाई जाती है, उसी प्रकार प्राचीनकाल में कौमुदी महोत्सव मनाया जाता था।

8. सिख संप्रदाय के लोगों के लिए पटना नगर क्यों महत्त्वपूर्ण है ?

उत्तर- सिख संप्रदाय के लोगों के लिए प्राचीन पटना नगर में पूजनीय स्थल अवस्थित है। यहाँ उनके दसवें गुरु गोंविद सिंहजी का जन्म-स्थान है। यह स्थल गुरुद्वारा के नाम से जाना जाता है । देश-विदेश से सिख संप्रदाय के अलावा अन्य संप्रदाय के तीर्थयात्री भी यहाँ दर्शन के लिए आते हैं।

9. लेखक 'पाटलिपुत्र वैभवम्' पाठ से हमें क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर- लेखक का कहना है कि प्राचीन काल में पाटलिपुत्र एक महान नगर था, जहाँ शिक्षा, वैभव और समृद्धि थी। मध्यकाल में इसकी स्थिति ठीक नहीं थी। मुगलकाल में इस नगर का पुनः उद्धार हुआ तथा अंग्रेजी के शासन काल से लेकर वर्तमान में इस नगर का अत्यधिक विकास हो रहा है।

PDFSARTHI.COM

10. प्राचीन पाटलिपुत्र में शिक्षा के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं ?

उत्तर- प्रस्तुत पाठ में लेखक ने बताया है कि दामोदर नामक कवि से हमें जानकारी मिलती है कि सरस्वती के वंशज यहाँ रहते थे । राजशेखर कवि के अनुसार पाणिनी, पिंगल, वररूचि आदि महान विद्वानों की परीक्षा यहाँ ली जाती थी। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन पाटलिपुत्र शिक्षा का एक महान केंद्र था।

11. लेखक के विचार में प्राचीन काल से आज तक पाटलिपुत्र किस प्रकार का नगर रहा है ?

उत्तर- लेखक के विचार से पाटलिपुत्र नगर प्राचीन काल से लेकर आज तक राजनैतिक, धार्मिक, औद्योगिक और शिक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में वैभव धारण करता रहा है और यहाँ इनका संकलित रूप से दर्शन किया जा सकता है। यहाँ के लोग कई उत्सव मनाते आए हैं। पाटलिपुत्रवासी पटनदेवी की पूजा करते हैं । पाटलिपुत्र एक महान नगर रहा है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. पाटलिपुत्र पटना के नाम से कब से प्रसिद्ध हुआ?

(A) मुगलवंश काल में

(B) गुप्तवंश काल में

(C) मध्यकाल में

(D) अंग्रेजों के शासन काल में

Ans – (C)

2. किसने कहा पाटलिपुत्र की नगर शोभा देखने में प्रिय था?

(A) मेगास्थनीज

PDF SARTHI.COM

(B) फाह्यान

(C) बुद्ध

(D) अशोक

Ans – (A)

3. पटना का पुराना नाम क्या है?

(A) पुष्पपुर

(B) पटना साहिब

(C) पटना

(D) पर्वतपुर

Ans – (A)

4. मध्यकाल में पटना लगभग कितने वर्षों तक जीर्ण - शीर्ण रहा?

(A) 100

(B) 500

(C) 1000

(D) 700

Ans – (C)

5. पटना के उत्तर दिशा में कौन-सी नदी है?

PDF SARTHI.COM

(A) गंगा

(B) कोशी

(C) पुनपुन

(D) सोन

Ans – (A)

6. पाटलिपुत्र में कौन बार-बार आये थे?

(A) महावीर

(B) दशरथ

(C) भगवान बुद्ध

(D) अकबर

Ans – (C)

7. पटना नगर की पालिका देवी कौन हैं?

(A) शीतला देवी

(B) काली

(C) पटन देवी

(D) गौरी

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

8. पटना किस नदी के किनारे अवस्थित है

(A) यमुना

(B) सोन

(C) गंगा

(D) फल्गु

Ans – (C)

9. पटना में कौमुदी महोत्सव कब मनाया जाता था?

(A) गुप्त वंशकाल में

(B) मुगलवंश काल में

(C) अशोक के समय में

(D) अंग्रेजों के समय में

Ans – (A)

10. मेगास्थनीज पटना किसके समय में आया था?

(A) अशोक के समय में

(B) मुगलवंश काल में

(C) चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में

(D) अंग्रेजों के समय में

Ans (C)

PDF SARTHI.COM

11. 'पाटलपुष्पों की पुत्तलिका' रचना के आधार पर पटना का कौन-सा नाम है?

(A) पुष्पपुर

(C) पाटलिपुत्र

(B) कुसुमपुर

(D) पटना

Ans – (C)

12. बिहार की राजधानी कहाँ है?

(A) पटना

(B) भागलपुर

(C) गया

(D) वैशाली

Ans – (A)

13. कौमुदी महोत्सव किस अवसर पर दिखाई पड़ती है?

(A) छठ

(B) दुर्गापूजा

(C) वसंतपंचमी

PDF SARTHI.COM

(D) गणेशपूजा

Ans – (B)

14. किस नदी पर गाँधी सेतु सड़क मार्ग बना है?

(A) सोन

(B) गंगा

(D) गंडक

(C) यमुना

Ans – (B)

15. 'योगसूत्र' के रचनाकार कौन हैं?

(A) पाणिनि

(B) वररुचि

(C) पतंजली

(D) भास

Ans – (C)

16. शरत् काल में कौन-सा महोत्सव होता था?

(A) दुर्गापूजा

(B) सरस्वती पूजा

PDF SARTHI.COM

(C) गणेशोत्सव

(D) कौमुदी

Ans – (D)

17. कौमुदी महोत्सव किस वंश में प्रचलित था?

(A) राजवंश

(B) गुप्तवंश

(C) पुरु

(D) अशोक

Ans – (B)

18. व्याकरण के रचनाकार कौन हैं?

(A) पिंगल

(B) पाणिनी

(C) भास

(D) वररुचि

Ans – (B)

19. 'पटनदेवी' कहाँ अवस्थित है?

(A) वैशाली

PDF SARTHI.COM

(B) राजगृह

(C) नालंदा

(D) पटना

Ans – (B)

20. एशिया महादेश का लम्बा पुल (सेतु) कहाँ है?

(A) नालंदा

(B). दरभंगा

(C) पटना

(D) सीवान

Ans – (C)

21. 'गोलघर' कहाँ है?

(A) हाजीपुर

(B) नालंदा

(C) पटना

(D) वैशाली

Ans – (C)

22. गुरुगोविंद सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?

PDF SARTHI.COM

(A) पटना

(B) वैशाली

(C) नालंदा

(D) गया

Ans – (A)

23. मुगलकाल में किसका उद्धार हुआ?

(A) भोजपुर

(B) पाटलिपुत्र

(C) गया

(D) वैशाली

Ans – (B)

24. गोविंद सिंह सिख सम्प्रदाय के कौन से गुरु थे?

(A) 7 वें

(B) 8 वें

(C) 9 वें

(D) 10 वें

Ans – (D)

PDFSARTHI.COM

25. गाँधी सेतु कहाँ है?

(A) भागलपुर

(B) पाटलिपुत्र

(C) गया

(D) बक्सर

Ans(B)

26. 'कुट्टनीमतम् काव्य के कवि कौन हैं

(A) राजशेखरः

(B) दामोदर गुप्तः

(C) विशाखदत्तः

(D) कालिदासः

Ans –(B)

27. यूनान का राजदूत कौन था?

(A) फाह्यान

(B) हुयेनसांग

(C) मेगास्थनीज

(D) इत्सिंग

Ans (C)

28. राजशेखर की रचना कौन-सी है?

PDF SARTHI.COM

(A) काव्यमीमांसा

(B) कुट्टनीमत

(C) मुद्राराक्षस

(D) यात्रा संस्मरण

Ans – (A)

29. कौमुदी महोत्सव किस ऋतु में मनाया जाता था?

(A) वसन्त ऋतु में

(B) वर्षा ऋतु में

(C) ग्रीष्म ऋतु में

(D) शरत ऋतु में

Ans – (D)

30. किसके समय में पाटलिपुत्र अधिक समृद्ध था?

(A) चन्द्रगुप्त

(B) अशोक

(C) बुद्ध

(D) मेगास्थनीज

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

31. अस्ति महीतलतिलकं ..... परिभूतपुरन्दरस्थानम ॥ कहाँ से लिया गया है?

(A) मंगलम्

(B) नीतिश्लोक

(C) पाटलिपुत्रवैभवम्

(D) अलसकथा

Ans (C)

32. 'काव्यमीमांसा' के रचनाकार कौन हैं?

(A) मम्मट

(B) राजशेखर

(C) दामोदर गुप्त

(D) चाणक्य

Ans – (B)

33. प्राचीनकाल में शिक्षा का केंद्र कहाँ था?

(A) वैशाली

(B) तक्षशिला

(C) नालंदा

(D) पाटलिपुत्र

Ans – (D)

PDFSARTHI.COM

34. किस काल का शासन उत्कर्ष काल माना जाता है?

(A) अशोक

(B) मध्यकाल

(C) गुप्तकाल

(D) वर्तमानकाल

Ans – (C)

35. दामोदर गुप्त ने किस काव्य की रचना किये हैं?

(A) काव्य मीमांशा

(B) कुट्टनीमतरणी

(C) गीता

(D) रामायण

Ans – (B)

36. विद्वानों ने पृथ्वी का तिलक किसे कहा है?

(A) वैशाली

(B) दिल्ली

(C) पालिए

(D) गया

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

37. 'इंद्रलोक' किस नगर को कहा गया है?

(A) गया

(B) वैशाली

(C) भागलपुर

(D) पाटलिपुत्र

Ans – (D)

38. स्वर्ग से भी सुंदर कौन-सा स्थान है?

(A) पाटलिपुत्र

(B) दिल्ली

(C) बनारस

(D) वैशाली

Ans – (A)

39. गौतम बुद्ध के समय पटना का क्या नाम था?

(A) पाटलिपुत्र

(B) पटना

(C) पाटलिग्राम

(D) पुष्पपुर

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

40. भगवान बुद्ध भविष्य में किस नगर को महानगर बनेगा कहा?

(A) वैशाली

(B) राजगृह

(C) भागलपुर

(D) पाटलिपुत्र

Ans – (D)

41. सरस्वती का कुलगृह कौन-सा महानगर था?

(A) भागलपुर

(B) नालन्दा

(C) पाटलिपुत्र

(D) दरभंगा

Ans – (C)

42. एशिया महादेश का सबसे लम्बा पुल किस नदी पर बना है?

(A) यमुना

(B) गंगा

(C) ब्रह्मपुत्र

(D) सोन

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

43. 'मुद्राराक्षस' ग्रन्थ में किस शहर की प्राचीनता का संकेत है?

(A) मुजफ्फरपुर

(B) भागलपुर

(C) पाटलिपुत्र

(D) राँची

Ans – (C)

44. गुरुगोविन्द सिंह का जन्म स्थान किस नाम से प्रसिद्ध है?

(A) गुरुग्राम

(B) गुरुघर

(C) गुरगाँव

(D) गुरुद्वारा

Ans – (D)

45. किसके काल में पाटलिपुत्र की रक्षा-व्यवस्था उत्कृष्ट थी?

(A) चन्द्रगुप्त मौर्य

(B) समुद्रगुप्त

(C) कुमारगुप्त

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

46. सिक्खों के दसवें गुरु कौन थे?

(A) गुरुनानक

(B) गुरु तेगबहादुर

(C) गुरु गोविन्द सिंह

(D) गुरु रामदास

Ans – (C)

47. पाटलिपुत्र किस प्रांत की राजधानी थी?

(A) बिहार

(B) केरल

(C) झारखंड

(D) पश्चिम बंगाल

Ans – (A)

48. 'पाटलिपुत्र वैभवम्' पाठ में किस शहर का वर्णन है?

(A) भागलपुर

(B) वाराणसी

(C) पटना

PDF SARTHI.COM

(D) इलाहाबाद

Ans – (C)

49. पटना का इतिहास कितना पुराना है?

(A) 200 वर्ष

(B) 2000 वर्ष

(C) 2500 वर्ष

(D) 1500 वर्ष

Ans – (C)

50. 'पटना' शब्द किस शब्द से बना है?

(A) पटनदेवी

(C) पत्तन

(B) पाटलि

(D) पाटन

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

3.अलसकथा

अयं पाठः विद्यापतिकृतस्य कथाग्रन्थस्य पुरूषपरीक्षेतिनामकस्य अंशविशेषो वर्तते । पुरुषपरीक्षा सरलसंस्कृतभाषायां कथारूपेण विभिन्नानां मानवगुणानां महत्वम् वर्णयति, दोषाणां च निराकरणाय शिक्षां ददाति । विद्यापतिः लोकप्रियः मैथिलीकविः आसीत् । अपि च बहूनां संस्कृतग्रन्थानां निर्मातापि विद्यापतिरासीत् इति तस्य विशिष्टता संस्कृतविषयेऽपि प्रभूता अस्ति । प्रस्तुते पाठे आलस्यनामकस्य दोषस्य निरूपणे व्यंग्यात्मिका कथा प्रस्तुता विद्यते । नीतिकाराः आलस्यं रिपुरूपं मन्यन्ते ।

यह पाठ विद्यापति जी द्वारा रचित पुरुष परीक्षा नमक कथा ग्रंथ का विशेष अंश हैं। पुरुष परीक्षा सरल संस्कृत भाषा में कथा के रूप से विभिन्न मानवीय गुणों के महत्व का वर्णन करती है। और दोषों को निराकरण या दूर करने के लिए शिक्षा देती है। विद्यापति लोकप्रिय मैथिली कवि थे। और भी बहुत संस्कृत ग्रन्थों का निर्माता भी विद्यापति थे, ऐसी उसकी विशिष्टता संस्कृत विषय में भी बहुत हैं। प्रस्तुत पाठ में आलस्य नामक दोष के निरूपण में व्यंग्य स्वरूप कथा प्रस्तुत हैं। नीतिकार लोग अलसी को दुश्मन के स्वरूप मानते हैं।

आसीत् मिथिलायां वीरेश्वरो नाम मन्त्री । स च स्वभावाद् दानशीलः कारूणिकश्च सर्वेभ्योदुर्गतभ्योऽनाथेभ्यश्च प्रत्यहमिच्छाभोजनं दापयति तन्मध्येऽलसेभ्योऽप्यन्नवस्त्रे दापयति । यतः –

मिथिला में वीरेश्वर नामक मंत्री थे। और वे स्वभाव से दानशील और दयावान थे। सभी संकटग्रस्तों और अनाथों को प्रतिदिन इच्छानुसार भोजन दिलाते थे । क्योंकि -

निर्गतीनां च सर्वेषामलसः प्रथमो मतः । किञ्चिन्न क्षमते कर्तुं जाठरेणाऽपि वह्निना ।।

संकटग्रस्तों में आलसियों का प्रथम स्थान हैं। क्योंकि वे पेट की भूख रूपी ज्वाला से तप्त होकर भी कुछ नहीं करना चाहते हैं।

ततोऽलसपुरूषाणां तत्रेष्टलाभं श्रुत्वा बहवस्तुन्दपरिमृजास्तत्र वर्तुलीबभूवुः यतः –

इसके बाद आलसी पुरुषों के वहां इच्छित लाभ को सुनकर बहुत से तोंद बड़े हुए लोग जमा हो गये। क्योंकि -

स्थितिः सौकर्यमूला हि सर्वेषामपि संहते । सजातीनां सुखं दृष्ट्वा के न धावन्ति जन्तवः ।।

PDFSARTHI.COM

अपने अनुकूल स्थिति सभी जीव चाहते हैं। अपने जाति के सुख को देखकर कौन जंतु उस ओर नहीं दौड़ते हैं? अर्थात् सभी उस ओर दौड़ते हैं।

पश्चादलसानां सुखं दृष्ट्वा धूर्ता अपि कृत्रिममालस्यं दर्शयित्वा भोज्यं गृह्णन्ति । तदनन्तरमलसशालायां बहुद्रव्यव्ययं दृष्ट्वा तन्नियोगिपुरूषैः परामृष्टम् यदक्षमबुद्ध्या करूणया केवलमलसेभ्यः स्वामी वस्तूनि दापयति, कपटेनाऽनलसा अपि गृह्णन्ति इत्यस्माकं प्रमादः । यदि भवति तदालसपुरूषाणां परीक्षां कुर्मः इति परामृश्य प्रसुप्तेषु अलसशालायां तन्नियोगिपुरूषाः वह्निं दापयित्वा निरूपयामासुः ।

इसके पश्चात आलसियों के सुख को देखकर कपटी भी बनावटी अलस्य दिखाकर भोजन ग्रहण करने लगा। इसके बाद आलसियों के घर बहुत धन के खर्च को देखकर उन राजपुरुषों ने विचार किया यदि अक्षम (थोड़ा) बुद्धि अथवा दया से स्वामी केवल आलसियों को वस्तुएं देते हैं और कपट से अनआलसी भी ग्रहण कर रहें हैं यह हमारी अलस्य है। यदि होता है तब आलसी पुरुषों का परीक्षा करनी चाहिए । ऐसा विचार कर सोए हुए आलसियों के घर में उन राजपुरुषों ने आग लगाकर हल्ला कर दिया।

ततो गृहलग्नं प्रवृद्धमग्निं दृष्ट्वा धूर्ताः सर्वे पलायिताः । पश्चादीषदलसा अपि पलायिताः । चत्वारः पुरुषास्तत्रैव सुप्ताः परस्परमालपन्ति । एकेन वस्त्रावृतमुखेनोक्तम् - अहो कथमयं कोलाहलः ? द्वितीयेनोक्तम् तर्व्यते यदस्मिन् गृहे अग्निर्लग्नोऽस्ति । तृतीयेनोक्तम् कोऽपि तथा धार्मिको नास्ति य इदानीं जलार्द्रैर्वासोभिः कटैर्वास्मान् प्रावृणोति ? चतुर्थेनोक्तम् अये वाचालः। कति वचनानि वक्तुं शक्नुथ ? तूष्णीं कथं न तिष्ठथ ?

- इसके बाद घर में लगी बढ़ती या फैलती हुई आग को देखकर सभी कपटी भाग गए। इसके पश्चात थोड़ी आलसी भी भाग गए। चार पुरुष वही सोये हुए आपस में बातचीत करते हैं। एक द्वारा वस्त्र से ढँके मुख से बोला गया अरे! यह कैसी हल्ला ? दूसरे द्वारा बोला गया लगता है, कि इस घर में आग लगी है। तीसरे द्वारा बोला गया कोई भी ऐसा धार्मिक नहीं है, जो इस समय हमें जल से भींगे हुई चटाई से ढँक दें। तब चौथे द्वारा कहा गया अरे! वाचालों कितना बोलने में सकते हो ? चुपचाप क्यों नहीं रहते हो ।

ततश्चतुर्णामपि तेषामेवं परस्परालापं श्रुत्वा वह्निं च प्रवृद्धमेषामुपरि पतिष्यन्तं दृष्ट्वा नियोगिपुरूषैर्वधभयेन चत्वारोऽप्यलसाः केशेष्वावाकृष्य गृहीत्वा गृहाद् बहिःकृताः । पश्चात्तानालोक्य तैर्नियोगिभिः पठितम् -पतिरेव गतिः स्त्रीणां बालानां जननी गतिः । नालसानां गतिः काचिल्लोके कारूणिकं बिना ।। पश्चात्तेषु चतुर्व्वलसेषु ततोऽप्यधिकतरं वस्तु मन्त्री दापयामास ।।

PDFSARTHI.COM

इसके पश्चात् उन चारों में वैसे ही परस्पर बातचीत को सुनकर और बढ़ती हुई अग्नि को उसके ऊपर गिरते हुए देखकर उन राजपुरुषों ने वध के भय से चारों आलसियों को बाल पकड़कर खींचते हुए घर से बाहर किया। इसके पश्चात् उनको देखकर उन राजपुरुषों द्वारा पढ़ा गया - स्त्रियों की गति पति से और बालकों की गति माता से होती है। परंतु आलसियों के दयावानों के बिना संसार में कोई गति नहीं है। इसके बाद उन चारों को मंत्री द्वारा अधिक से अधिक धन दिया गया।

1. 'अलसकथा' पाठ में किसका वर्णन है ?

उत्तर - मैथिल कवि विद्यापति ने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रंथ लिखा है जिससे उद्धृत 'अलस कथा' में आलस्य के निवारण की प्रेरणा और इस संसार की लोक नीतियों और अनेक पक्षों पर व्यंग्यात्मक दृष्टि डाली गयी है। इस पाठ में मुख्य रूप से मिथिला के मंत्री वीरेश्वर और चार आलसियों का वर्णन किया गया है।

2. चारों आलसी पुरुष आग से किस प्रकार बचना चाहते थे ?

उत्तर - चारों आलसी पुरुष आग लगने पर भी घर से नहीं भागे। शोरगुल सुनकर वे जान गए थे कि घर में आग लगी हुई है। वे चाहते थे कि कोई धार्मिक एवं दयालु व्यक्ति आकर आग पर जल, वस्त्र या कंबल डाल दे, जिससे आग बुझ जाए और वे लोग बच जाएँ।

3. "अलसकथा' का क्या संदेश है ?

उत्तर - अलसकथा का संदेश है कि आलस्य एक महान् रोग है। आलसी का सहायक प्रायः कोई भी नहीं होता। जीवन में विकास के लिए व्यक्ति का कर्मठ होना अत्यावश्यक है। आलस्य शरीर में रहनेवाला महान् शत्रु है जिससे अपना, परिवार का और समाज का विनाश अवश्य ही होता है। यदि जीवन में विकास की इच्छा. रखते हैं तब आलस्य त्यागकर उद्यम को प्रेरित हों।

4. आलसशाला के कर्मियों ने आलसियों को आग से कैसे और क्यों निकाला ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - जब चार आलसी परुष आग लगने पर भी घर से नहीं भागे तब एक योगी पुरुष ने आकर उनके केशों को पकड़कर उन्हें ढकेलते हुए बाहर किया। क्योकिं उन्हें वास्तविक आलसियों की पहचान हो चुकी थी। एवं उनके प्राण का दायित्व भी उन्ही के ऊपर था। इस प्रकार आलसी पुरुष आग से बचे।

5. किनकी क्या-क्या गतियाँ हैं ? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर - गति को यहाँ विशेष रूप से विश्लेषित किया गया है। स्त्री, पुरुष एवं बच्चों की गतियाँ अलग-अलग हैं। स्त्रियों की गति पति हैं, बच्चों की गति माँ है तथा आलसियों की गति कारुणिकता (दयालुता) है। अर्थात् स्त्रियों की जीवनभंगिमा उसके पति पर निर्भर करती है। बच्चों की जीवनवृत्ति उसकी माँ ही होती है। आलसियों की जीवनवृत्ति दयालुओं पर ही निर्भर होती है।

6. अलसकथा पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर - यह पाठ विद्यापति द्वारा रचित पुरुषपरीक्षा नामक कथाग्रन्थ से संकलित एक उपदेशात्मक लघु कथा है। विद्यापति ने मैथिली, अवहट्ट तथा संस्कृत तीनों भाषाओं में ग्रन्थ-रचना की थी। पुरुषपरीक्षा में धर्म, अर्थ, काम इत्यादि विषयों से सम्बद्ध अनेक मनोरंजक कथाएँ दी गयी हैं। अलसकथा में आलस्य के निवारण की प्रेरणा दी गयी है। इस पाठ से संसार की विचित्र गतिविधि का भी परिचय मिलता है।

7. "अलसकथा' पाठ के लेखक कौन है तथा इससे क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - मैथिली कवि विद्यापति रचित "अलसकथा" में आलसियों के माध्यम से शिक्षा दी गयी है कि उनका भरण-पोषण करुणाशीलों के बिना संभव नहीं है। आलसी काम नहीं करते, ऐसी स्थिति में कोई दयावान् ही उनकी व्यवस्था कर सकता है। अतएव आत्मनिर्भर न होकर दूसरे पर वे निर्भर हो जाते हैं।

8. 'अलसकथा' पाठ में वास्तविक आलसियों की पहचान कैसे हुई?

उत्तर - जब अलसशाला में भोजन वस्त्रादि पाने वाले लोगों में धूर्तों और कम आलसी लोगों की भी संख्या बढ़ने लगी तो व्यय अधिक होने लगा। तब मंत्री वीरेश्वर के अधिकारियों ने सच्चे आलसी का पता लगाने के लिए अलसशाला में आग लगवा दिया जिससे धूर्त और कम आलसी लोग भाग गए और जो वास्तविक में जो चार आलसी थे सिर्फ वहीं बचे रहे।

PDFSARTHI.COM

9. अलसशाला में आग लगने पर क्या हुआ ?

उत्तर - सही आलसी का पता लगाने के लिए जब मंत्री वीरेश्वर के नियोगी पुरुषों ने अलसशाला में आग लगा दी तो सबसे पहले कम आलसी लोग अपनी जान बचाकर भागे । तत्पश्चात् धूर्तों ने भी वहाँ से भागने में ही अपनी भलाई सोची और केवल चार आलसी ही बचे जो वास्तविक आलसी थे।

10. अलसशाला के कर्मियों ने आलसियों की परीक्षा क्यों ली ?

उत्तर - आलसियों की गरीब अवस्था को देखकर मिथिला के मंत्री वीरेश्वर ने अलसशाला का निर्माण करवा दिया जहाँ वे आलसियों को भोजन और वस्त्र देते थे। सहज सुलभ भोजन और वस्त्र को देखकर धूर्त और कम आलसी लोग भी वहाँ जाकर भोजनादि प्राप्त करने लगे। इस स्थिति में अधिक व्यय होने लगा। तब अलसशाला के कर्मियों ने वास्तविक आलसी कौन है इसकी परीक्षा हेतु अलसशाला में आग लगवा दिया।

11. विद्यापति कौन थे? उन्होंने किस ग्रंथ की रचना की तथा 'अलस कथा' में किसकी कहानी है? छः वाक्यों में लिखें।

उत्तर - विद्यापति बिहार के मिथिला प्रदेश के एक सुविख्यात है। मैथिली भाषा के अतिरिक्त संस्कृत भाषा पर भी उनका अधिकार है तथा उन्होंने 'पुरुषपरीक्षा' नामक एक कथाग्रंथ लिखा है जिसका एक अंश विशेष 'अलसकथा' शीर्षक पाठ से पाठ्य पुस्तक में संकलित है। 'अलसकथा' पाठ में चार आलसियों की कथा वर्णित है जिनके भरण पोषण के लिए मंत्री वीरेश्वर ने अलसशाला का निर्माण करवाया। जहाँ कुछ धूर्त और कम आलसी भी भोजन वस्त्र प्राप्त करने लगे जिससे आवश्यकता से अधिक व्यय होने लगा। तब सच्चे आलसी का पता लगाने के लिए अलसशाला में आग लगा कर सच्चे आलसियों का पता लगाया गया।

12. मंत्री वीरेश्वर की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर - मंत्री वीरेश्वर स्वभाव से दयालु और दानशील थे। वह अनाथों और निर्धनों को उनकी इच्छा के अनुसार भोजन तथा वस्त्र देते थे। उन्होंने आलसियों को भोजन तथा वस्त्र देने के लिए अलसशाला का निर्माण करवाया था।

13. 'अलसकथा' का सारांश लिखें ।

PDFSARTHI.COM

उत्तर -'अलसकथा' विद्यापति रचित 'पुरुष परीक्षा' कथासंग्रह से संकलित है मिथिला में वीरेश्वर नाम का एक मंत्री था। वह स्वभाव से दानी एवंदयावान् था। वह संकटग्रस्तों, निर्धनों तथा अनाथों को इच्छाभर भोजन, वस्त्र दिया करता था । उसका मानना था कि आलसी के लिए हर कष्ट सहज होता है किन्तु परिश्रम असहज तब आलसी लोगों का इच्छानुकूल लाभ सुनकर कुछ लोग सुख प्राप्त करने की इच्छा से कृत्रिम आलसी के रूप में मुफ्त भोजन ग्रहण करने लगे। इसके बाद आलसियों पर अधिक खर्च होते जानकर किसी ने सलाह दी कि सिर्फ आलसी के लिए अन्न-वस्त्र देने की व्यवस्था है, लेकिन कुछ धूर्त भी आलसी होने का स्वांग रचकर लाभान्वित हो रहे हैं। इसलिए इन आलसियों के आलस्य की परीक्षा ली जाए। ऐसा विचार करके आलसियों के घर में आग लगा दी गई। घर में आग लगी देखकर सभी धूर्त भाग गए, लेकिन चारों आलसी कपड़ों से मुँह ढके सोए रहे। अगलगी के कारण लोग शोर-गुल मचाने लगे

14. चारों आलसियों का सम्वाद अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर - जब रात्रि काल में नियोगी पुरुषों द्वारा अलसशाला में आग लगा दी गयी तो जो वास्तविक आलसी थे वे वहीं उसी अवस्था में पड़े रहे और आपस में बात करते रहे। पहला बोला कि ये कैसा कोलाहल हो रहा है तो दूसरा आलसी बोला कि लगता है कि अलसशाला में आग लग गयी है। तो तीसरा आलसी बोला कि कोई भी धार्मिक पुरुष नहीं बचा जो हमलोगों पर कोई भींगा कपड़ा डाल दे। इस पर चौथे आलसी ने कहा कि तुमलोग इतनी बातचीत क्यों कर रहे हो चुपचाप पड़े रहो।

15. 'अलसकथा' पाठ के आधार पर लेखक के विचार स्पष्ट करें।

उत्तर - 'अलसकथा' पाठ में लेखक विद्यापति ने अपने विचार को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि आलसी व्यक्ति बिना परिश्रम किए हुए जीवन व्यतीत करना चाहता है। कारूणिक व्यक्ति के बिना वह अपने को मौत से भी नहीं बचा पाता है। आलस्य शत्र के समान है।

16. अलसकथा का वर्णय विषय क्या है ?

उत्तर - विद्यापति द्वारा रचित कथाग्रंथ 'पुरुष परीक्षा' नामक पुस्तक से लिया गया 'अलसकथा' मानव महत्व एवं दोषों के निराकरण की शिक्षा देता है। आलसियों को दान देने की इच्छा रखनेवाले बीरेश्वर ने यह जानने की उत्कंठा प्रकट की थी कि आलसी जीवन जीने की कला का कैसे निर्वहन करते हैं। इष्ट लाभ के लिए मेहनती भी आलसी का रूप लेकर पहुँचने लगते हैं। उनकी परीक्षा के लिए दानगृह में आग लगा दी जाती है। आलसी भागने के बजाय

PDFSARTHI.COM

गीले कपड़े से ढकने, घर में आग लगी है, यहाँ कोई धार्मिक नहीं है आदि की चर्चा करते हैं। आलसी केवल करूणा के पात्र होते हैं।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1.' पुरुष परीक्षा' ग्रंथ में किसके गुणों का वर्णन है ?

(A) दानव

(B) मानव

(C) देवता

(D) पशु

Ans : B

2. मैथिली भाषा के कवि कौन थे ?

(A) प्रेमचंद

(B) दिनकर

(C) मैथलीशरण गुप्त

(D) विद्यापति

Ans : D

3. कौन परीश्रम नहीं करना चाहता है ?

(A) परीश्रमी

(B) मूर्ख

(C) विद्वान्

PDF SARTHI.COM

(D) आलसी

Ans : D

4. भूखा रहना कौन पसंद करता है ?

(A) परीश्रमी

(B) आलसी

(C) मूर्ख

(D) विद्वान

Ans : B

5. पतिरेव गतिः..... कारुणिकं बिना | किस पाठ से लिया गया है ?

(A) संस्कारा

(B) मंगलम

(C) शास्त्रकारा

(D) अलसकथा

Ans : D

6. स्त्रियों का रक्षक कौन होता है ?

(A) पुत्र

(B) पति

(C) माता

(D) पिता

PDF SARTHI.COM

Ans : B

7. चारो आलसियों को क्या पकड़कर बाहर निकाल दिया ?

(A) हाथ

(B) पैर

(C) केश

(D) कान

Ans : C

8. आलसियों का रक्षक कौन होता है ?

(A) बलवान

(B) दयावान

(C) पिता

(D) पुत्र

Ans : B

9. चारों आलसियों को कैसे बाहर किया गया ?

(A) पैर पकड़कर

(B) हाथ पकड़कर

(C) केश पकड़कर

(D) बाँह पकड़कर

PDF SARTHI.COM

Ans : C

10. आलसियों के घर में आग कौन लगवाता है ?

(A) राजा

(B) मंत्री

(C) शत्रु

(D) योगिपुरुष

Ans : D

11. अलसकथान्तर्गत मिथिला में कौन मंत्री थे ?

(A) तपेश्वर

(B) भुवनेश्वर

(C) वीरेश्वर

(D) महेश्वर

Ans : C

12. अलसकथा पाठ कहाँ से लिया गया है ?

(A) पुरुषपरीक्षा

(B) नीतिश्लोक

(C) भारतमहिमा

(D) व्याघ्रपथिक कथा

Ans : A

PDFSARTHI.COM

13 . अलसकथा' पाठ किस प्रकार की कथा है?

(A) पद्यात्मक

(B) व्यंग्यात्मक

(C) रसात्मक

(D) कथात्मक

Ans : B

14. अलसशाला में आग क्यों लगाई गई ?

(A) आलसियों को भगाने के लिए

(B) आलसियों की परीक्षा करने के लिए

(C) अलसशाला की सम्पत्ति को हड़पने के लिए

(D) इनमें से किसी के लिए नहीं

Ans : B

15. अलस शाला में आग लगने पर भी कितने लोग नहीं भागे ?

(A) तीन

(B) पौच

(C) चार

(D) छः

Ans : C

16. 'पुरुषपरीक्षा' किस रूप में विभिन्न मानवगुणों के महत्त्व का वर्णन करता है?

PDF SARTHI.COM

(A) पद्य रूप

(B) श्लोक रूप

(C) नाटक रूप

(D) कथा रूप

Ans : D

17. 'पुरुषपरीक्षा' किस भाषा में लिखित है ?

(A) संस्कृत

(B) हिन्दी

(C) मैथिली

(D) अवधी

Ans : A

18. घर में लगी आग को देखकर कौन लोग पलायमान हो गये ?

(A) आलसी लोग

(B) समझदार लोग

(C) फुर्तीले लोग

(D) धूर्त लोग

Ans : D

19. अरे कैसा हल्ला है ? किसने बोला ?

(A) पहला आलसी

PDF SARTHI.COM

(B) दूसरा आलसी

(C) मंत्री

(D) लेखक

Ans : A

20. 'पुरुषपरीक्षा' क्या शिक्षा देती है ?

(A) गुण निराकरण

(B) दर्शन

(C) दोष निराकरण

(D) सत्य

Ans : C

21. आलसियों को प्रतिदिन इच्छा अनुसार भोजन कौन दिलवाता था ?

(A) विद्यापति

(B) वीरेश्वर

(C) अलसशाला का कर्मचारी

(D) मिथिला का राजा

Ans : B

22.' तर्कयन्न यदस्मिन् गृहे अग्निर्लंग्नोऽस्ति ।' अलसकथा पाठ में यह किसकी उक्ति है ?

(A) पहले आलसी की

(B) तीसरे आलसी की

PDFSARTHI.COM

(C) दूसरे आलसी की

(D) चौथे आलसी की

Ans : C

23. सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?

(A) क्षमा

(B) आलस्य

(C) क्रोध

(D) लोभ

Ans : B

24. वास्तविक आलसियों की संख्या कितनी थी ?

(A) 5

(B) 6

(C) 4

(D) 3

Ans : C

25. इस संसार में आलसियों का रक्षक (गति) कौन हैं?

(A) जननी

(B) कारुणिक

(C) पति

PDF SARTHI.COM

(D) धार्मिक

Ans : B

26. घर में आग लगने पर कौन नहीं भागा ?

(A) राजा

(B) सैनिक

(C) मंत्री

(D) आलसी

Ans : D

27. " कोई धार्मिक पुरुष नहीं है" ऐसा किस पुरुष ने कहा ?

(A) द्वितीय

(B) तृतीय

(C) प्रथम

(D) चतुर्थ

Ans : B

28. वीरेश्वर अनाथों को क्या देता था ?

(A) भोजन

(B) विद्या

(C) पैसा

(D) कलम

PDF SARTHI.COM

Ans : A

29. अरे वाचाल ! कितना बोलते हो ? किस पुरुष का कथन है ?

(A) चतुर्थ

(B) द्वितीय

(C) तृतीय

(D) प्रथम

Ans : A

30. विद्यापति कौन थे ?

(A) लेखक

(B) कवि

(C) राजा लोग

(D) मंत्री

Ans : B

PDF SARTHI.COM

4 संस्कृत साहित्ये लेखिका: (संस्कृत साहित्य की लेखिकाएँ)

समाजस्य यानं पुरुषैः नारीभिश्च चलति। साहित्येऽपि उभयोः समानं महत्वम्। अधुना सर्वभाषासु साहित्यरचनायां स्त्रियोऽपि तत्पराः सन्ति यशश्च लभन्ते।

समाज की गाड़ी पुरूषों और स्त्रीयों के द्वारा चलती है। साहित्य में भी दोनां का समान महत्व है। आजकल सभी भाषाओं की साहित्य रचना में स्त्रियाँ भी तत्पर हैं और यश भी पा रही है।

संस्कृतसाहित्ये प्राचीनकालादेव साहित्यसमृद्धौ योगदानं न्यूनाधिकं प्राप्यते। पाठेऽस्मिन्नतिप्रसिद्धानां लेखिकानामेव चर्चा वर्तते येन साहित्यनिधिपूरणे तासां योगदानं ज्ञायेत।

संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही साहित्य को समृद्ध करने में दोनों का योगदान कम-अधिक के रूप में प्राप्त होता रहा है। इस पाठ में अति प्रसिद्ध लेखिकाओं का ही चर्चा है जिससे साहित्यरूपी खजाना को भरने में उन स्त्रीयों का योगदान के बारे में जानकारी होती है।

विपुलं संस्कृतसाहित्यं विभिन्नैः कविभिः शास्त्रकारैश्च संवर्धितम्। वैदिकालादारभ्य शास्त्राणां काव्यानांञ्च रचने संरक्षणे यथा पुरुषाः दत्तचिताः अभवन् तथैव स्त्रिऽपि दत्तावधानाः प्राप्यन्ते। वैदिकयुगे मन्त्राणां दर्शका न केवला ऋषयः, प्रत्युत ऋषिका अपि सन्ति। ऋग्वेदे चतुर्विंशतिरथर्ववेदे च पञ्च ऋषिकाः मन्त्रदर्शनवत्यो निर्दिश्यन्ते यथा- यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, वागाम्भृणी इत्यादयः।

विशाल संस्कृत साहित्य अनेक कवियों तथा शास्त्रकारों द्वारा अत्यधिक समृद्ध किया गया। वैदिक काल के आरंभ से ही शास्त्रों तथा काव्यों की रचना और संरक्षण में पुरूष के समान स्त्रीयाँ भी सावधान थी। वैदिक युग में ऋषि एवं ऋषि-पत्नी दोनों ही मंत्रों की रचना करते थे। ऋगवेद में चौबीस और अथर्ववेद में पाँच ऋषि-पत्नियाँ उल्लिखित हैं- यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, वागाम्भृणी आदि-आदि।

बृहदारण्यकोपनिषदि याज्ञवल्क्यस्य पत्नी मैत्रेयी दार्शनिकरुचिमती वर्णिता यां याज्ञवल्क्य आत्मतत्वं शिक्षयति। जनकस्य सभायां शास्त्रार्थकुशला गार्गी वाचक्नवी तिष्ठति स्म। महाभारतेऽपि जीवनपर्यन्तं वेदान्तानुशीलनपरायाः सुलभाया वर्णनं लभ्यते।

वृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी दार्शनिक रूप में वर्णित की गई है। जिनको याज्ञवल्क्य जी ने आत्मतत्व की शिक्षा देते हैं। जनक की सभा में शास्त्रार्थ कुशल गार्गी नामक विदुषी रहती थी। महाभारत में भी जीवन-पर्यन्त वेदान्त अध्ययन में स्त्रियाँ रही। यह बात आसानी से वर्णन में मलती है।

लौकिकसंस्कृतसाहित्ये प्रायेण चत्वारिंशत्कवयित्रीणां सार्धशतं पद्यानि स्फुटरूपेण इतस्ततो लभ्यन्ते। तासु विजयाङ्का

PDFSARTHI.COM

प्रथम-कल्पा वर्तते। सा च श्यामवर्णासीदिति पद्येनानेन स्फुटीभवति-

लौकिक संस्कृत साहित्य में प्रायः चालीस कवयित्रीयों का डेढ़ सौ पदें स्पष्टरूप से जहाँ-तहाँ प्राप्त हैं। उनमें विजयाङ्का का प्रथम कल्प है। वह श्यामवर्ण की थी। यह इस पद से स्पष्ट होता है।

नीलोत्पलदलश्यामां विजयाङ्कामजानता।
वृथैव दण्डिना प्रोक्ता 'सर्वशुक्ला सरस्वती'।।

नीले कमल के समान श्यामवर्ण की विजयाङ्का को न जानते हुए सरस्वती को सर्वशुक्ला दण्डी द्वारा व्यर्थ ही कहा गया।

तस्याः कालः अष्टमशतकमित्यनुमीयते। चालुक्यवंशीयस्य चन्द्रादित्यस्य राज्ञी विजयभट्टारिकैव विजयाङ्का इति मन्यते। किञ्च शीला भट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा-प्रभृतयो दक्षिणभारतीयाः संस्कृतलेखिकाः स्वस्फुटपद्यैः प्रसिद्धाः।

उनका समय आठवीं शताब्दी अनुमान किया जाता है। अनेक विद्वानों का मानना है कि चालुक्यवंश के राजा चन्द्रादित्य की रानी विजय भट्टारिका ही विजयाङ्का है। कुछ और शीला भट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा आदि दक्षिण भारतीय संस्कृत लेखिकाओं की कविताएँ प्रसिद्ध है।

विजयनगरराज्यस्य नरेशाः संस्कृतभाषासंरक्षणाय कृतप्रयासा आसन्निति विदितमेव। तेषामन्तःपुरेऽपि संस्कृतरचनाकुशलाः राज्ञयोऽभवन्। कम्पणरायस्य (चतुर्दशशतकम्) राज्ञी गंगादेवी 'मधुराविजयम्' इति महाकाव्यं स्वस्वामिनो (मदुरै)- विजयघटनामाश्रित्यारचयत्। तत्रालङ्काराणां संनिवेशः आवर्जको वर्तते।

विजयनगर के राजा ने संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए जितना प्रयास किया, वह ज्ञात ही है। उनके अन्तःपुर में संस्कृत के कुशल रचनाकार हुए। चौदहवीं शताब्दी में कम्पन राय की रानी गंगा देवी मधुरा विजयम् नामक महाकाव्य की अपने स्वामी विजयघटना के आश्रय में रचना की। उसमें अलंकारां का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

तस्मिन्नेव राज्ये षोडशशतके शासनं कुर्वतः अच्युतरायस्य राज्ञी तिरुमलाम्बा वरदाम्बिकापरिणय- नामकं प्रौढ़ं चम्पूकाव्यमरचयत्। तत्र संस्कृतगद्यस्य छटा समस्तपदावल्या ललितपदविन्यासेन चातीव शोभते। संस्कृतसाहित्ये प्रयुक्तं दीर्घतमं समस्तपदमपि तत्रैव लभ्यते।

उनके ही राज्य में सोलहवीं शताब्दी में राज्य करते हुए अच्युत राय की रानी तिरूमलाम्बा ने वरदाम्बिका परिणय नामक विशाल चम्पुकाव्य की रचना की। उसमें संस्कृत गद्य की छटा तथा सुन्दर पदविन्यास अति रमणीय हैं। संस्कृत साहित्य में लम्बे समस्त पद का प्रयोग उसी में हुआ है।

आधुनिककाले संस्कृतलेखिकासु पण्डिता क्षमाराव (1890-1953 ई०) नामधेया विदुषी अतीव प्रसिद्धा। तया स्वपितुः शंकरपाण्डुरंगपण्डितस्य महतो विदुषो जीवनचरितं 'शंकरचरितम्' इति रचितम्।

PDFSARTHI.COM

आधुनिक काल में संस्कृत लेखिकाओं में पंडित क्षमाराव नाम की विदुषी बहुत प्रसिद्ध है। उन्होनें अपने पिता पंडित शंकर पाण्डुरंग की महान विद्वता जीवन चरित पर 'शंकर चरितम्' की रचना की।

गान्धिदर्शनप्रभाविता सा सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथामुक्तावली, विचित्रपरिषद्यात्रा, ग्रामज्योतिः इत्यादीन् अनेकान् पद्य-पद्यग्रन्थान् प्रणीतवती। वर्तमानकाले लेखनरतासु कवयित्रीषु पुष्पादीक्षित-वनमाला भवालकर – मिथिलेश कुमारी मिश्र-प्रभृतयोऽनुदिनं संस्कृतसाहित्यं पूरयन्ति।

गाँधी दर्शन से प्रभावित होकर उन्होने सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथा मुवक्काली, विचित्र परिषद्यात्रा, ग्रामज्योति इत्यादि अनेक गद्य-पद्य की रचना की। इस समय लेखन कार्य में संलग्न कवित्रियों में पुष्पादीक्षित, वनमाला भवालकर, मिथिलेश कुमारी मिश्र आदि आए दिन संस्कृत साहित्य को पूरा करते है।

1. इस पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर - इस पाठ के द्वारा संस्कृत साहित्य के विकास में महिलाओं के योगदान के बारे में ज्ञात होता है। वैदिक युग से आधुनिक समय तक ऋषिकाएँ, कवयित्री, लेखिकाएँ संस्कृतसाहित्य के संवर्धन में अतुलनीय सहभागिता प्रदान करती रही हैं। संस्कृत लेखिकाओं की सुदीर्घ परम्परा है। संस्कृत भाषा के उन्नयन एवं पल्लवन में पुरुषों के समतुल्य महिलाएँ भी चलती रही हैं।

2. 'सर्व शुक्ला सरस्वती किसे कहा गया है', और क्यों ?

उत्तर- सर्वशुक्ला सरस्वती, विजयाङ्का को कहा गया है। लौकिक संस्कृत में विजयाङ्का की भूमिका सराहनीय है। उसके पदों की सौष्ठवता देखने में बनती है। । एक असाधारण लेखिका की पराकाष्ठता से प्रभावित होकर ही दण्डी ने उसे अद्भुत सर्वशुक्ला सरस्वती कहा है। विजयाङ्का श्याम वर्ण की थी किन्तु उसकी कृत्तियाँ ज्योतिर्मय थीं। नीलकमल की पंखुड़ियों की तरह विजयाङ्का अपनी रचना में लेखन कला की आभा बिखेरती है ।

3. संस्कृतसाहित्य में दक्षिण भारतीय महिलाओं के योगदानों का वर्णन करें ।

उत्तर - चालुक्य वंश की महारानी विजयभट्टारिका ने विजयाङ्का की रचना कर लौकिक संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लगभग चालीस दक्षिण भरतीय महिलाओं ने एक सौ पचास संस्कृत काव्यों की रचना की है। इन महिलाओं में गंगादेवी, तिरुमलाम्बा, शीलाभट्टारिका, देवकुमारिका, राम भद्राम्बा आदि प्रमुख हैं। इनकी रचनाएँ पद्य में हैं

PDFSARTHI.COM

4. संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर-संस्कृत की सेवा जिस प्रकार पुरुषों ने की है उसी प्रकार महिलाओं ने भी वैदिक युग से आज तक इसमें भाग लिया है। प्रायः इस विषय की उपेक्षा हुई है। प्रस्तुत पाठ में संक्षिप्त रूप से संस्कृत की प्रमुख लेखिकाओं का उल्लेख किया गया है। उनके योगदान संस्कृत साहित्य के इतिहास में अमर है।

5. संस्कृतसाहित्य में आधुनिक समय के लेखिकाओं के योगदानों की चर्चा करें ।

उत्तर- संस्कृतसाहित्य में आधुनिक समय की लेखिकाओं में पण्डितां क्षमाराव अति प्रसिद्ध हैं। उन्होंने शंकरचरितम्, सत्याग्रहगीता, मीरालहरी, कथामुक्तावली, 'विचित्र-परिषदयात्रा, ग्रामज्योति इत्यादि अनेक गद्य-पद्य ग्रन्थों की रचना की। वर्तमानकाल में लेखनरत कवियित्रों में पुष्पा दीक्षित, वनमाला भवालकर, मिथिलेश कुमारी मिश्र आदि प्रतिदिन संस्कृतसाहित्य को समृद्ध कर रही है।

6. शास्त्र - लेखन एवं रचना-संरक्षण में वैदिककालीन महिलाओं के योगदानों की चर्चा करें।

उत्तर - वैदिककाल में शास्त्र लेखन एवं रचना-संरक्षण में पुरुषों की तरह महिलाओं ने भी काफी योगदान दिया है। ऋग्वेद में चौबीस और अथर्ववेद में पाँच महिलाओं का योगदान है। यमी, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी और वागाम्भृणी वैदिककालीन ऋषिकाएँ भी मंत्रों की दर्शिकाएँ थी ।

7. 'संस्कृतसाहित्ये' लेखिकाः पाठ के आधार पर लेखक के संदेश को स्पष्ट करें।

उत्तर-संस्कृतसाहित्ये लेखिका पाठ में लेखक का स्पष्ट संदेश है कि महिला और पुरुष दोनों के योगदान से ही समाज की गाड़ी चलती है। साहित्य में भी दोनों का समान महत्त्व है। इस पाठ में अति प्रसिद्ध लेखिकाओं की चर्चा है, जिन्होंने साहित्यरूपी खजाने को भरने में अपना योगदान दिया है।

8. संस्कृतसाहित्य में विजयनगर राज्य के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- विजयनगर राज्य के राजाओं ने संस्कृतसाहित्य के संरक्षण के लिए जो प्रयास किए थे वे सर्वविदित है। उनके अंतःपुर में भी संस्कृत-रचना में कुशल रानियाँ हुईं। इनमें कम्पणराय की रानी गंगादेवी तथा अच्युताराय की रानी तिरुमलाम्बा प्रसिद्ध हैं। इन दोनों रानियों की रचनाओं में समस्त पदावली और ललित पद-विन्यास के कारण संस्कृत-गद्य शोभित होता है।

PDFSARTHI.COM

9. 'संस्कृत साहित्ये लेखिकाः पाठ में लेखक ने क्या विचार व्यक्त किए हैं ?

उत्तर- 'संस्कृतसाहित्ये लेखिका पाठ में लेखक का विचार है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक महिलाओं ने संस्कृत साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है दक्षिण भारत की महान साहित्यकार महिलाओं ने भी संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाया ।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. आधुनिक काल को संस्कृत कवयित्री कौन हैं?

(A) तिरुमलम्बा

(B) विजयाङ्का

(C) सुलभा

(D) पण्डिता क्षमा राव

Ans – (D)

2. वर्तमान काल की संस्कृत लेखिका कौन हैं?

(A) गङ्गा देवी

(B) सुलभा

(C) मिथिलेश कुमारी मिश्रा

(D) विजयाङ्का

Ans – (C)

3. 'संस्कृतसाहित्ये लेखिका:' किस प्रकार का पाठ है?

(A) कथा

PDF SARTHI.COM

(B) नाटक

(C) वार्तालाप

(D) निबंध

Ans – (D)

4. अथर्ववेद में कितने ऋषि-पत्नियों का वर्णन है?

(A) 20

(B) 25

(C) 24

(D) 5

Ans – (D)

5. लौकिक संस्कृत साहित्य में कितने कवयित्रियों का वर्णन है?

(A) 30

(B) 40

(C) 25

(D) 50

Ans – (B)

6. लौकिक संस्कृत साहित्य में कवयित्रियों के कितने पद्य है?

(A) 150

(B) 100

PDF SARTHI.COM

(C) 200

(D) 250

Ans – (A)

7. विजयांका का काल किस शताब्दी में माना गया है?

(A) 10 वीं

(B) 12वीं

(C) 8 वीं

(D) 9 वीं

Ans – (C)

8. पण्डिता क्षमा राव द्वारा रचित 'सत्याग्रह गीता किसके दर्शन द्वारा प्रभावित है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जवाहरलाल नेहरू

(C) रानी लक्ष्मीबाई

(D) इन्दिरा गाँधी

Ans – (A)

9. पण्डित क्षमाराव के पिता कौन थे?

(A) पंडित शंकर पांडुरंग

(B) पावल्य

(C) अच्युतराय

PDF SARTHI.COM

(D) कम्पनराय

Ans – (A)

10. क्षमाराव ने किसकी रचना की?

(A) मधुराविजयम्

(B) ग्रामज्योति

(C) शंकरचितम्

(D) नीतिश्लोक

Ans – (C)

11. याज्ञवल्क्य की पत्नी कौन थीं?

(A) मैत्रेयी

(B) सुलभा

(C) देवकुमारिका

(D) रामभद्राम्बा

Ans – (A)

12. याज्ञवल्क्य ने आत्मतत्व को शिक्षा किसको दी थी?

(A) मैत्रेयी को

(B) गार्गी को

(C) सुलभा को

(D) रामभद्राम्बा को

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

13. याज्ञवल्क्य ने किसकी शिक्षा दी हैं?

(A) ब्रह्म तत्व

(B) संस्कृत साहित्य

(C) आत्मतत्व

(D) गीता

Ans – (C)

14. चालुक्य वंश के राजा कौन थे?

(A) आदित्य

(B) दण्डी

(C) कम्पनराय

(D) चन्द्रादित्य

Ans – (D)

15. चंद्रादित्य की रानी कौन थी?

(A) विजयांका

(B) विजयभट्टारिका

(D) मैत्रेयी

Ans – (B)

16. विजयनगर का राजा किस भाषा का संरक्षण का प्रयास किया?

(A) संस्कृत

PDF SARTHI.COM

(B) हिन्दी

(C) कम्

(D) बला

Ans – (A)

17. मधुराविजयम्' महाकाव्य की रचनाकार कौन थी?

(A) विजयांका

(B) गंगादेवी

(C) रामभद्राम्बा

(D) गार्गी

Ans – (B)

18. 'गंगादेवी' के पति कौन थे?

(A) दण्डी

(B) जनक

(C) चंद्रादित्य

(D) कम्पनराय

Ans – (D)

19. 'कम्पनराय' की पत्नी कौन थी?-

(A) गंगादेवी

(B) विजयांका

PDF SARTHI.COM

(C) विजयभट्टारिका

(D) गार्गी

Ans – (A)

20. अच्युतराय की पत्नी कौन थी?

(A) गार्गी

(B) विजयांका

(C) तिरुमलाम्बा

(D) गंगादेवी

Ans – (C)

21. वरदाम्बिका परिणय नामक चम्काव्य के रचनाकार कौन है?

(A) तिरुमलाम्बा

(B) विजयांका

(C) गार्गी

(D) गंगादेवी

Ans – (A)

22. आधुनिक काल की संस्कृत लेखिकाओं में कौन अतीव प्रसिद्ध है?

(A) विभाराव

(B) आभाराव

(C) क्षमाराव

(D) रमाराव

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

23. वनमाला भवालकर किस काल की संस्कृति - कवयित्री थी ?

(A) प्राचीनकाल

(B) अति प्राचीनकाल

(C) मध्यकाल

(D) वर्तमान काल

Ans – (D)

24. विजय भट्टारिका किसकी पत्नी थी?

(A) चन्द्रादित्य

(B) चन्द्रगुप्त

(C) चन्द्रकिशोर

(D) चन्द्रशेखर

Ans – (A)

25. ऋग्वेद में कितनी मन्त्रदर्शनवती ऋषिकाओं का उल्लेख है?

(A) पञ्च

(B) चतुर्विंशतिः

(C) विंशतिः

(D) चत्वारिंशत्

Ans – (B)

26. महाभारत में किस लेखिका का उल्लेख मिलता है?

PDF SARTHI.COM

(A) गार्गी का

(B) मैत्रेयी का

(C) सुलभा का

(D) यमी का

Ans – (B)

27. गङ्गा देवी का समय क्या है?

(A) चौदहवीं सदी

(B) आठवीं सदी

(C) नवमीं सदी

(D) बारहवीं सदी

Ans – (A)

28. समाज की गाड़ी किससे चलती है?

(A) भाई और बहन

(B) पुरुष और नारी

(C) राजा और मंत्री

(D) दोस्त

Ans – (B)

29. सभी भाषाओं के साहित्य में कौन तत्पर है?

(A) पुरुष

(B) मंत्री

PDF SARTHI.COM

(C) स्त्रियाँ

(D) राजा

Ans – (C)

30. मैत्रेयी किनकी पत्नी थी?

(A) शंकराचार्य

(B) याज्ञवल्क्य

(C) दुर्वासा

(D) परशुराम

Ans – (B)

31. विजयांका किस वर्ण की थी?

(A) श्यामवर्ण

(B) श्वेत वर्ण

(C) रक्तवर्ण

(D) हरित वर्ण

Ans – (A)

32. 'नीलोत्पलदलश्यामा' किसे कहा गया है?

(A) मैत्रेयी

(B) विजयांका

PDF SARTHI.COM

(C) गार्गी

(D) यमी

Ans – (B)

33. नीलोत्पलदलश्यामा ..... सरस्वती ॥ श्लोक कहाँ से लिया गया है?

(A) अलसकथा

(B) भारत महिमा

(C) नीतिश्लोक

(D) संस्कृतसाहित्ये लेखिका

Ans – (B)

34. लौकिक संस्कृत के प्रथम कवयित्री कौन थी?

(B) विजयभट्टारिका

(C) विजयांका

(D) मैत्रेयी

Ans – (C)

35. 'श्यामवर्ण' कौन थी?

(A) गंगा देवी

(B) विजयांका

(C) गार्गी

(D) यमो

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

36. दण्डी ने सर्वशुक्ला किसे कहा?

(A) विजयांका

(B) गंगा देवी

(C) विजयभट्टारिका

(D) शीला

Ans – (A)

37. 'आत्मतत्व' की शिक्षा किसे देते हैं?

(A) इंद्राणी को

(B) गार्गी को

(C) यमी को

(D) मैत्रेयी को

Ans – (D)

38. दार्शनिक रूप में कौन वर्णित है?

(A) यमी

(B) मैत्रेयी

(C) अपाला

(D) गार्गी

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

39. 'गार्गी' किनके सभा में विदुषी थी?

(A) चंद्रगुप्त

(B) अशोक

(C) जनक

(D) दशरथ

Ans – (C)

40. गंगा देवी ने किस महाकाव्य की रचना की थी?

(A) शंकरचरितम्

(B) वरदाम्बिकापरिणयम्

(C) मधुराविजयम्

(D) कथामुक्तावली

Ans – (C)

41.'अच्युत राय' कहाँ के राजा थे?

(A) काशी के

(B) दरभंगा के

(C) चित्तौड़गढ़ के

(D) विजयनगर के

Ans – (D)

42. अच्युत राय का काल क्या है?

PDF SARTHI.COM

(A) अष्टमशतक

(B) चतुर्दशशतक

(C) पोडशशतक

(D) एकादशशतक

Ans – (C)

43. ऋग्वेद में कितनी महिला ऋषिकाओं का वर्णन प्राप्त है?

(A) 24

(C) 23

(B) 25

(D) 26

Ans – (A)

44. 'शंकरचरित' के रचनाकार कौन है?

(A) पण्डिता क्षमाराव

(B) वनमाला भालकर

(C) विजयांका

(D) मिथिलेश कुमारी मिश्र

Ans – (A)

45. सर्व शुक्ला सरस्वती' किसकी उक्ति है?

PDF SARTHI.COM

(A) याज्ञवल्क्य

(B) जनक

(C) बाणभट्ट

(D) दण्डी

Ans – (D)

46. जनक की सभा में शास्त्रार्थ कुशला कौन थी?

(A) सुलभा

(B) गार्गी

(C) मैत्रेयी

(D) यमी

Ans – (B)

47. दक्षिण भारतीय संस्कृत लेखिका कौन हैं?

(A) शीला भट्टारिका

(B) रामभद्राम्बा

(C) देवकुमारिका

(D) सभी

Ans – (D)

48. लौकिक संस्कृति साहित्य में लगभग कितनी कवयित्रियों के पद्य मिलते हैं?

PDFSARTHI.COM

(A) तीस

(C) चार सौ

(B) चौबीस

(D) चालीस

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

5. भारतमहिमा (भारत की महिमा)

महिमा- बड़ाई, गौरव

(अस्माकं देशः भारतवर्षमिति कथ्यते। अस्य महिमा सर्वत्र गीयते। पाठेऽस्मिन् विष्णुपुराणात् भागवतपुराणात् च प्रथमं द्वितीयं च क्रमशः पद्यं गृहीतमस्ति। अवशिष्टानि पद्यान्यध्यक्षेण निर्मीय प्रस्तावितानि। भारतं प्रति भक्तिरस्माकं कर्तव्यरूपेण वर्तते।)

हमारे देश को भारतवर्ष कहा जाता है। इसकी महिमा सब जगह गायी जाती है। इस पाठ में विष्णुपुराण और भागवत पुराण से क्रमशः प्रथम और द्वितीय पद्य लिया गया है। बचे अन्य पदों को निर्माण कर प्रस्तुत किये गये हैं। भारत के प्रति भक्ति हमारा कर्तव्य है।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

अर्थ- देवता लोग गीत गाते हुए कहते हैं कि वे लोग धन्य हैं, जिनका जन्म भारत देश में होता है। यह भूमि स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने योग्य साधन-स्वरूप है। इसलिए यहाँ जन्म लेनेवाले को देवता के समान कहा गया है।

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'विष्णुपुराण' से संकलित तथा 'भारतमहिमा' पाठ से उद्धृत है। इसमें भारत देश की विशेषताओं के बारे में कहा गया है।

यह देश धरती पर स्वर्ग के समान माना जाता है। पुराणकार का कहना है कि यह भूमि स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाली है। यहाँ जन्म लेनेवाले देवतुल्य माने जाते हैं क्योंकि यहाँ राम-कृष्ण जैसे देवताओं ने जन्म ग्रहण कर यह सिद्ध कर दिया है। इसलिए इस देश में जन्म लेनेवाले को देवता रूप में माना जाता है।

अहो अमीषां किमकारि शोभनं
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे
मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः ।।

अर्थ- देवता लोग इस देश के गुण-गान करते हुए कहते हैं कि अहो! ईश्वर के द्वारा कितना सुदंर बनाया गया, जिससे मनुष्य भारत भूमि पर हरि के सेवा योग्य बन जाता है। मेरी भी इच्छा भारत भूमि पर जन्म लेने को है। अर्थात् जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, वहीं भारत भूमि पर जन्म लेते हैं।

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'भागवतपुराण' से संकलित तथा 'भारतमहिमा' पाठ से उद्धृत है। इसमें भारत देश की

PDFSARTHI.COM

महानता के बारे में कहा गया है।

पुराणकार का कहना है कि भारत ही ऐसा देश है जहाँ भगवान भी जन्म लेने की इच्छा प्रकट करते हैं। इस देश में जन्म लेनेवाले मनुष्य धन्यवाद के पात्र होते हैं क्योंकि श्रीहरी के सेवा के इच्छुक होते हैं। जिन लोगों ने यहाँ जन्म लिया, उनमें स्वयं भगवान भी हैं इन्हीं विशेषताओं के कारण देवता इस देश के गुणगान करते हैं।

इयं निर्मला वत्सला मातृभूमिः
प्रसिद्धं सदा भारतं वर्षमेतत्।
विभिन्ना जना धर्मजातिप्रभेदै-
रिहैकत्वभावं वहन्तो वसन्ति।।

अर्थ- यह भारत वर्ष प्रसिद्ध है। यह भारत भूमि हमेशा पवित्र और ममतामयी है। यहाँ भिन्न-भिन्न धर्म जाति के लोग भेद किये बिना एकता के भाव में रहते हैं।

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'भारतमहिमा' पाठ से उद्धृत है। इसमें भारत देश की विशेषताओं के बारे में कहा गया है। विद्धानों का कहना है कि भारत ही ऐसा देश है जहाँ विभिन्न जाति के लोग आपस में मिलजुल कर एकता का परिचय देते हैं। यहाँ के निवासियों ने शत्रुओं के साथ मित्रता का व्यवहार किया है। भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के होते हुए भी सभी भाई-भाई के समान एक साथ रहते हैं।

विशालास्मदीया धरा भारतीया
सदा सेविता सागरै रम्यरूपा।
वनैः पर्वतैर्निर्झरैर्भव्यभूति-
र्वहन्तीभिरेषा शुभा चापगाभिः ।।

अर्थ- हमारी भारत भूमि विशाल, मनोहर तथा बहुत सुंदर ऐश्वर्य वाली है। यह सागरों, वनों, पर्वतों, झरनों और बहती हुई नदियों से हमेशा सुशोभित है।

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'भारतमहिमा' पाठ से लिया गया है। इसमें भारत की विशालता एवं प्राकृतिक संपदा के संबंध में प्रकाश डाला गया है।

भारत एक विशाल देश है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत प्रहरी के समान है, दक्षिण में हिन्द महासागर पाँव पखार रहा है। गंगा, यमुना तथा बह्मपुत्र जैसी नदियाँ अपने जल से यहाँ की भूमि सींचती है, तो वनों से मुल्यवान लकड़ीयाँ एवं फल-फूल प्राप्त होते हैं। अतः भारत देश सभी प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण है।

जगद्गौरवं भारतं शोभनीयं

PDFSARTHI.COM

सदास्माभिरेतत्तथा पूजनीयम्।

भवेद् देशभक्तिः समेषां जनानां

परादर्शरूपा सदावर्जनीया।।

अर्थ- यह भारत देश शोभनीय और संसार का गौरव है और यह भूमि हमलोगों के द्वारा हमेशा पूजनीय है। यहाँ के सभी लोगों की देशभक्ति सदैव आकर्षणीय, श्रेष्ठ और आदर्श स्वरूप है।

व्याख्या- प्रस्तुत श्लोक 'भारतमहिमा' पाठ से लिया गया है। इसमें देशभक्ति की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है। कवि का कहना है कि हमारी देश भक्ति इतनी मधुर है कि विश्व इसके समक्ष नतमस्तक है। हर व्यक्ति में देशभक्ति की तीव्र भावना है। सभी देश की रक्षा के लिए तन-मन-धन से समर्पित है। इसके आर्दश आचरण के कारण हमेशा शोभनिय और पुजनिय है।

1. मातृभूमि का वर्णन किस रूप में किया गया है ? पठित पाठ के आधार पर लिखें।

उत्तर – हिमालय की गोद में बसा हुआ 'भारत निश्चय ही स्वर्ग-सा सुन्दर है । कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एकता एवं समदर्शिता का भाव दृष्टिगत होता है। यह मातृभूमि निर्मल एवं ममतामयी है । यहाँ लोग धर्म, जाति के भेदों को भूलकर एक भाव से रहते हैं। विविध पर्व-त्योहार यहाँ की एकता को एकसूत्र में पिरोये रहते हैं। इसकी भूमि विशाल एवं रम्यरूपा है। यह सागरों, पर्वतों एवं झरनों को धारण करते हुए नदियों के द्वारा सदा सेवित है।

2.भारतमहिमा का वर्णन पठित पाठ के आधार पर करें। अथवा, 'भारत पहिमा' पाठ का सारांश प्रस्तुत करें।

उत्तर – भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य स्वर्ग-सा है। यह देवताओं, ऋषियों एवं महापुरुषों की अवतरण भूमि है। इसकी महिमा का वर्णन विष्णुपुराण एवं भागवतपुराण में देखने को मिलता है। भारतभूमि पर अवतरित होनेवाला मनुष्य

PDFSARTHI.COM

निश्चय ही धन्य है। हमारी भारत भूमि विशाल, रम्यरूपा और कल्याणप्रद है। अत्यन्त शोभनीय और संसार का गौरव भारत हम सबों के द्वारा सदैव पूजनीय है । यहाँ धर्म, जाति के भेदों को भूलकर एकता एवं सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया जाता है। हम भारतीय सदैव कहते हैं-वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी ही हमारा परिवार है।

3. भारत महिमा पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर – इस पाठ में भारत के महत्त्व के वर्णन से सम्बद्ध पुराणों के दो पद्य तथा तीन आधुनिक पद्य दिये गये हैं। हमारे देश भारतवर्ष को प्राचीन काल से इतना महत्त्व दिया गया था कि देवगण भी यहाँ जन्म लेने के लिए तरसते थे। इसकी प्राकृतिक सुषमा अनेक प्रदूषणकारी तथा विध्वंसक क्रियाओं के बाद भी अनुपम है । इसका निरूपण इन पद्यों में प्रस्तुत है।

4. देवता लोग किस देश का गुणगान करते हैं और क्यों ?

उत्तर – देवता लोग भारत देश का गुणगान करते हैं, क्योंकि भारतीय भूमि स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त करने का साधन है। मनुष्य भारत भूमि पर जन्म लेकर भगवान हरी की सेवा के योग्य बन जाते हैं।

5. भारत भूमि कैसी है तथा यहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं ?

उत्तर – भारतवर्ष अति प्रसिद्ध देश है तथा यहाँ की भूमि सदैव पवित्र और . ममतामयी है । यहाँ विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग एकता भाव को धारण करते हुए निवास करते हैं।

6. भारतीयों की विशेषताओं का वर्णन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर – भारत में जन्म लेकर लोग धन्य होते हैं और हरि की सेवा करते हैं। उन्हें स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होता है। भारतीय धर्म और जाति के भेदभावों को न मानते हुए एकता के भाव से रहते हैं। सभी भारतीयों की देशभक्ति आकर्षक है और दूसरों के लिए आदर्श रूपी है।

7. भारतमहिमा पाठ का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर – भारतमहिमा पाठ में पौराणिक और आधुनिक पद्य संकलित हैं, इन सभी पद्यों का उद्देश्य भारत और भारतीयों की विशेषताओं का वर्णन करना है। इनमें भारत की सुंदरता एवं भव्यता और भारतीयों की देशभक्ति आदि की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया गया है।

8. भारतमहिमा पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है ? अथवा, 'भारतमहिमा' पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ? पाँच वाक्यों में उत्तर दें।

उत्तर – भारतमहिमा पाठ से यह संदेश मिलता है कि हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। हम भारतीयों को हरि की सेवा करने का मौका मिला है, और मोक्ष की प्राप्ति का भी अवसर मिला है । हमें देशभक्त होना चाहिए और अन्य भारतीयों से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'भारत महिमा' पाठ का द्वितीय श्लोक किस पुराण से संकलित है?

(A) विष्णु पुराण से

(B) भागवत पुराण से

(C) पद्मपुराण से

(D) वायु पुराण से

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

2. भारतभूमि पर जन्म लेने वालों का किससे तुलना की गई है?

(A) दानव

(B) देवता

(C) पशु

(D) नेता

Ans – (B)

3. भारतभूमि का गान कौन करते हैं?

(A) दानवगण

(B) मूर्ख लोग

(C) नेता लोग

(D) देवतागण

Ans – (D)

4. भारत महिमा पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(A) कालिदास

(B) महर्षि वेदव्यास

(C) विदूरः

(D) वाल्मीकिः

Ans – (B)

5. भारतभूमि किससे सेवित है?

PDF SARTHI.COM

(A) क्षेत्र

(B) कमल

(C) सागर पर्वत निर्झर

(D) शत्रु

Ans – (C)

6. भारत की महिमा कहाँ गायी जाती है?

(A) मंदिर

(B) सर्वत्र

(C) एकत्र

(D) प्राचीन

Ans – (B)

7. भारत के उत्तर में कौन प्रहरी की तरह विराजमान है?

(A) गंगा

(B) हिमालय

(C) सागर

(D) मंत्री

Ans – (B)

8. भारत महिमा पाठ का प्रथम श्लोक किस पुराण से लिया गया है?

(A) भागवत पुराण

PDF SARTHI.COM

(B) शिव पुराण

(C) विष्णु पुराण

(D) गणेश पुराण

Ans – (C)

9. हमलोगों के लिए सदा कौन पूजनीय है?

(A) क्षेत्र

(B) भारत

(C) छात्र

(D) युद्ध

Ans – (B)

10. देवगण क्या गाते हैं?

(A) गीता

(B) रामायण

(C) महाभारत

(D) गीत

Ans – (D)

11. भारत में जन्म लेने वाला किनकी सेवा करते हैं?

(A) दानव

(B) मानव

PDF SARTHI.COM

(C) पशु

(D) श्रीहरि

Ans – (D)

12. भगवान कहाँ जन्म लेना चाहते हैं?

(A) भारत में

(B) विदेश में

(C) घर में

(D) आकाश में

Ans – (A)

13. किसके गीत देवता भी गाते हैं?

(A) भारत वर्ष के

(B) स्वीडन के

(C) बंगलादेश के

(D) पाकिस्तान के

Ans – (A)

14. गायन्ति देवाः ..... पुरुषाः सुरत्वात्। किस पाठ से लिया गया है?

(A) संस्काराः

(B) मंगलम्

(C) भारत महिमा

PDF SARTHI.COM

(D) दयानन्द

Ans – (C)

15. मोक्ष प्रदान करने वाली भूमि कौन है?

(A) भारत

(B) श्रीलंका

(C) चीन

(D) इराक

Ans – (A)

16. अहो अमीषां ..... स्पृहा हिनः ॥ किस पुराण से लिया गया है?

(A) भागवत पुराण

(B) शिव पुराण

(C) महाभारत

(D) रामायण

Ans – (A)

17. पुराण के रचनाकार कौन हैं?

(A) वाल्मीकि

(B) वेदव्यास

(C) कालिदास

(D) चाणक्य

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

18. हम सबों का कर्तव्य क्या है?

(A) राष्ट्रभक्ति

(B) देशभक्ति

(C) मित्रभक्ति

(D) शत्रुभक्ति

Ans – (A)

19. आधुनिक गीत के रचनाकार कौन हैं?

(A) मिथिलेस कुमारी मिश्र

(B) उमाशंकर मिश्र

(C) डा० रामविलास चौधरी

(D) डा० गिरिजानन्दन मिश्र

Ans – (B)

20. यहाँ के लोग किस भाव से रहते हैं?

(A) अनेकता

(B) एकता

(C) शत्रुवत

(D) मूर्खवत्

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

21. कौन-सी भूमि पवित्र और ममतामयी है?

(A) वन भूमि

(B) जल

(C) भारतभूमि

(D) अमेरिका

Ans – (C)

22. अयं निर्मला ..... वहन्तो वसन्ति।। किस पाठ से लिया गया है?

(A) भारत महिमा

(B) नीतिश्लोक

(C) शास्त्रकारा

(D) मंगलम्

Ans – (A)

23. हमलोगों की देशभक्ति कैसी होनी चाहिए?

(A) अपकार

(B) आदर्श

(C) अनादर्श

(D) घमंड

Ans – (B)

24. कितने पुराण हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) 10

(B) 11

(C) 18

(D) 15

Ans – (C)

25. किस देश में देवता बार-बार जन्म लेना चाहते हैं?

(A) भारत

(B) यूनान

(C) नेपाल

(D) भूटान

Ans – (A)

26. 'स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते' किस देश को कहा गया है?

(A) भारतवर्ष को

(B) जापान को

(C) यूनान की

(D) श्रीलंका को

Ans – (A)

27. 'सदा ..... सागरै रम्यरूपा।' रिक्त स्थान में कौन सा पद होगा ? (A) सेविता

(B) वन्दिता

PDF SARTHI.COM

(C) नन्दिता

(D) बोधिता

Ans – (A)

28. किसकी महिमा सर्वत्र गायी जाती है?

(A) श्रीलंका

(B) भूटान

(C) भारत

(D) बांग्लादेश

Ans – (C)

29. भारत की शोभा से कौन प्रसन्न होते हैं?

(A) ईश्वर

(B) दैत्य

(C) आलसी

(D) क्रोधी

Ans – (A)

30. गायन्ति देवाः ..... पुरुषाः सुरत्वात्। यह पद्य किस पुराण से उद्धृत है?

(A) नारद पुराण

(B) विष्णु पुराण

(C) भागवत् पुराण

PDF SARTHI.COM

(D) गरुड़ पुराण

Ans – (B)

31. भारतभूमि कैसी है?

(A) विशाल

(B) निर्मला

(C) वत्सला

(D) (A), (B) और (C) तीनों

Ans – (D)

32. 'भारतमहिमा' पाठ में कुल कितने पद्य हैं?

(A) चार

(B) छः

(C) पाँच

(D) सात

Ans – (C)

33. 'भारतमहिमा' पाठ में किस देश की महिमा का वर्णन किया गया है?

(A) नेपाल

(C) भारत

(B) श्रीलंका

PDF SARTHI.COM

(D) अमेरिका

Ans – (C)

34. 'भवन्ति पुरुषाः सुरत्वात्।

(A) ते

(C) देवा:

(B) भूय:

(D) गायन्ति

Ans – (B)

35. विभिन्न जाति और धर्म के लोग भारत में कैसे रहते हैं?

(A) एकत्व भाव से

(B) वैमनस्य भाव से

(C) शत्रुत्व भाव से

(D) कपट भाव से

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

6. भारतीयसंस्काराः (भारतीयों के संस्कार)

भारतीयसंस्कृतेः अन्यतमं वैशिष्ट्यं विद्यते यत् जीवने इह समये समये संस्कारा अनुष्ठिता भवन्ति। अद्य संस्कारशब्दः सीमितो व्यङ्ग्यरूपः प्रयुज्यते किन्तु संस्कृतेरुपकरणमिदं भारतस्य व्यक्तित्वं रचयति।

भारतीय संस्कृति की अत्यधिक विशिष्टता है कि इस जीवन में समय-समय पर संस्कारों के अनुष्ठान होते हैं। आज संस्कार शब्द सीमित होकर व्यंग्य रूप में प्रयोग किए जाते हैं किन्तु संस्कृति के रूप में यह भारत के व्यक्तित्व की रचना करता है।

विदेशे निवसन्तो भारतीयाः संस्कारान् प्रति उन्मुखा जिज्ञासवश्च। पाठेऽस्मिन् तेषां संस्काराणां संक्षिप्तः परिचयो महत्वञ्च निरूपितम्।

विदेश में बसे भारतीय लोग संस्कारों के प्रति उन्मुख जिज्ञासु हैं। इस पाठ में संस्कारों का संक्षिप्त परिचय और महत्व निरूपित किये गये हैं।

भारतीयजीवने प्राचीनकालतः संस्काराः महत्वमधारयन्।

प्राचीनसंस्कृतेरभिज्ञानं संस्कारेभ्यो जायते। अत्र ऋषीणां कल्पनासीत् यत् जीवनस्य सर्वेषु मुख्यावसरेषु वेदमन्त्राणां पाठः, आशीर्वादः, होमः, परिवारसदस्यानां सम्मेलनं च भवेत्।

भारतीय जीवन में प्राचीन काल से ही संस्कारों के महत्व को धारण किये हुए हैं। प्राचीन संस्कृति का ज्ञान संस्कार से होता है। यहाँ ऋषियों की कल्पना थी कि जीवन के सभी मुख्य अवसरों पर वेदमंत्रों का पाठ, बड़े लोगों का आशीर्वाद , हवन और परिवार के सदस्यो का सम्मेलन होना चाहिए।

तत् सर्वं संस्काराणामनुष्ठाने संभवति। एवं संस्काराः महत्वं धारयन्ति। किञ्च संस्कारस्य मौलिकः अर्थः परिमार्जनरूपः गुणाधानरूपश्च न विस्मर्यते। अतः संस्काराः मानवस्य क्रमशः परिमार्जने दोषापनयने गुणाधाने च योगदानं कुर्वन्ति।

ऐसा सभी संस्कार के अवसर पर ही संभव है। इस प्रकार संस्कार के महत्व को धारण करता है। किन्तु संस्कार का मौलिक अर्थ शुद्ध होना और गुणों का ग्रहण करना, रूप को नही भूलना चाहिए। इसलिए सभी संस्कार मानव के क्रम से शुद्ध करने में, दोषों को दूर करने में और गुणों को ग्रहण करने में योगदान करता है।

संस्काराः प्रायेण पञ्चविधाः सन्ति- जन्मपूर्वास्त्रयः, शैशवाः षट्, शैक्षणिकाः पञ्च, गृहस्थसंस्कारः विवाहरूपः एकः, मरणोत्तरसंस्कारश्चैकः। एवं षोडश संस्काराः भवन्ति।

संस्कार प्रायः पाँच प्रकार के हैं- जन्म से पूर्व तीन, बचपन में छः, शिक्षा काल में पाँच, गृहस्थ जीवन में संस्कार विवाह रूप एक और मरने के बाद एक संस्कार है। इस प्रकार सोलह संस्कार होते हैं।

PDFSARTHI.COM

जन्मपूर्वसंस्कारेषु गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोनयनं चेति त्रयो भवन्ति। अत्र गर्भरक्षा, गर्भस्थस्य संस्कारारोपणम्, गर्भवत्याश्च प्रसन्नता चेति प्रयोजनं कल्पितमस्ति। शैशवसंस्कारेषु जातकर्म, नामकरणम्, निष्क्रमणम्, अन्नप्राशनम्, चूडाकर्म, कर्णवेधश्चेति क्रमशो भवन्ति।

जन्म से पूर्व के संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन और सीमांत ये तीन होते हैं। यहाँ गर्भ रक्षा, गर्भस्थ शिशु का संस्कार विधान और गर्भवती स्त्री की प्रसन्नता के लिए ये सब आयोजन किये जाते हैं। बचपन के संस्कारों में जातकर्म, नामकरण, बाहर निकलना, अन्न-ग्रहण, चूडाकर्म और कर्णवेध – ये सब क्रम से होते हैं। शिक्षासंस्कारेषु अक्षरारम्भः, उपनयनम्, वेदारम्भः, **केशान्तः समावत्तश्चेति संस्काराः प्रकल्पिताः।** अक्षरारम्भे अक्षरलेखनम् अंकलेखनं च शिशुः प्रारभते। उपनयनसंस्कारस्य अर्थः गुरुणा शिष्यस्य स्व गृहे नयनं भवति। तत्र शिष्यः शिक्षानियमान् पालयन् अध्ययनं करोति। ते नियमाः बह्मचर्यव्रते समाविष्टाः।

शिक्षा संस्कारों में अक्षराम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त और समापवर्तन संस्कार होते हैं। अक्षराम्भ में अक्षर-लेखन और अंक-लेखन बच्चा आरम्भ करता है। उपनयन संस्कार का अर्थ गुरू के द्वारा शिष्य को अपने घर में लाना होता है। वहाँ शिष्य शिक्षा नियमों का पालन करते हुए अध्ययन करते हैं। तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं।

प्राचीनकाले शिष्यः ब्रह्मचारी इति कथ्यते स्म। गुरुगृहे एव शिष्यः वेदारम्भं करोति स्म। वेदानां महत्वं प्राचीनशिक्षायाम् उत्कृष्टं मन्यते स्म। केशान्तसंस्कारे गुरुगृहे एव शिष्यस्य प्रथमं क्षौरकर्म भवति स्म। अत्र गोदानं मुख्यं कर्म। अतः साहित्यग्रन्थेषु अस्य नामान्तरं गोदानसंस्कारोऽपि लभ्यते।

प्राचीन काल में शिष्य को ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरू के घर में ही शिष्य वेदारम्भ करते थे। वेदों का महत्व प्राचीन शिक्षा में श्रेष्ठ माना जाता था। केशान्त संस्कार में गुरू के घर में ही शिष्य का प्रथम मुण्डन होता था। इसमें गोदान मुख्य कर्म होता था। अतः साहित्य ग्रंथों में इसका दूसरा नाम गोदान संस्कार भी मिलता है।

समापत्तनसंस्कारस्योद्देश्यं शिष्यस्य गुरुगृहात् गृहस्थजीवने प्रवेशः। शिक्षावसाने गुरुः शिष्यान् उपदिश्य गृहं प्रेषयति। उपदेशेषु प्रायेण जीवनस्य धर्माः प्रतिपाद्यन्ते। यथा- सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः इत्यादि।

समापवर्तन संस्कार का उद्देश्य शिष्य का गुरू के घर से अलग होकर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना होता था। शिक्षा की समाप्ति पर गुरु शिष्यां को उपदेश देकर भेजते थे। उपदेशों में प्रायः जीवन के कर्तव्यों को बताया जाता था। जैसे- सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, अपनी विद्वता पर घमंड मत करो इत्यादि।

विवाहसंस्कारपूर्वकमेव मनुष्यः वस्तुतो गृहस्थजीवनं प्रविशति। विवाहः पवित्रसंस्कारः मतः यत्र नानाविधानि कर्मकाण्डानि भवन्ति। तेषु वाग्दानम्, मण्डपनिर्माणम्, वधूगृहे वरपक्षस्य स्वागतम्, वरवध्वोः परस्परं निरीक्षणम्, कन्यादानम्, अग्निस्थापनम्, पाणिग्रहणम्, लाजाहोमः, सप्तपदी, सिन्दूरदानम् इत्यादि।

PDFSARTHI.COM

विवाह संस्कार होने के बाद ही व्यक्ति गृहस्थ जीवन आरंभ करता है। विवाह को पवित्र संस्कार माना गया है, इसमें अनेक प्रकार के कर्मकांड होते हैं। उनमें वाक्दान, मण्डपनिर्माण, वधू के घर वरपक्ष का स्वागत, वर-वधू का निरीक्षण, कन्यादान, अग्नि की स्थापना, पाणिग्रहण, धान के लावे से हवन, सप्तपदी, सिन्दूरदान आदि।

सर्वत्र समानरूपेण विवाहसंस्कारस्य प्रायेण आयोजनं भवति। तदनन्तरं गर्भाधानादयः संस्काराः पुनरावर्तन्ते जीवनचक्रं च भ्रमति। मरणादनन्तरम् अन्त्येष्टिसंस्कारः अनुष्ठीयते। एवं भारतीयजीवनदर्शनस्य महत्त्वपूर्णमुपादानं संस्कारः इति।

वैवाहिक परंपरा सभी जगह एक जैसा ही है। इसके बाद गर्भाधान संस्कार तथा अन्य संस्कार होते हैं। मृत्यु के बाद दाह-संस्कार किया जाता है। इस प्रकार भारतीय जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण स्रोत ये संस्कार हैं।

1. भारतीय संस्कार का वर्णन किस रूप में हुआ है ?

उत्तर- भारतीय संस्कृति अनूठी है। जन्म के पूर्व संस्कार से लेकर मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि संस्कार का अनुपम उदाहरण संसार के अन्य देशों में नहीं है। यहाँ की संस्कृति की विशेषता है कि जीवन में यहाँ समय-समय पर संस्कार मनाये जाते हैं। आज संस्कार सीमित एवं व्यंग्य रूप में प्रयोग किये जा रहे हैं । संस्कार व्यक्तित्व की रचना करता है। प्राचीन संस्कृति का ज्ञान संस्कार से ही उत्पन्न होता है । संस्कार मानव में क्रमशः परिमार्जन दोषों को दूर करने और गुणों के समावेश करने में योगदान करते हैं

2. भारतीय जीवन में संस्कार का क्या महत्व है ?

उत्तर- भारतीय जीवन में प्राचीन काल से ही संस्कार ने अपने महत्व को संजाये रखा हुआ है। यहाँ ऋषियों की कल्पना थी कि जीवन के सभी मुख्य अवसरों में वेदमंत्रों का पाठ, वरिष्ठों का आशीर्वाद, हवन एवं परिवार के सदस्यों का सम्मेलन होना चाहिए। संस्कार दोषों का परिमार्जन करता है। भारतीय जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण स्रोत स्वरूप संस्कार है।

3. भारतीय संस्काराः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर- भारतीय जीवन-दर्शन में चौल कर्म (मुंडन), उपनयन, विवाह आदि संस्कारों की प्रसिद्धि है। छात्रगण संस्कारों का अर्थ तथा उनके महत्त्व को जान सकें, इसलिए इस स्वतंत्र पाठ को रखा गया है जिससे उन्हें भारतीय संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष का व्यवस्थित परिचय मिल सके ।

4. 'भारतीयसंस्काराः' पाठ के आधार पर ऋषियों की कल्पना का वर्णन करें।

उत्तर- ऋषियों की कल्पना थी कि जीवन के प्रायः सभी मुख्य अवसरों पर वेदमंत्रों का पाठ, बड़े लोगों का आशीर्वाद, हवन और परिवार के सदस्यों का सम्मेलन होना चाहिए। ऐसा करने से संस्कारों का पालन होता है।

5. संस्कार कितने प्रकार के हैं और कौन-कौन ?

उत्तर- संस्कार सोलह प्रकार के हैं। इन सोलह संस्कारों को मुख्य पाँच प्रकारों में बाँटा गया है-तीन जन्म से पूर्ववाले संस्कार, छह शैशव संस्कार, पाँच शिक्षा-संबंधी संस्कार, एक विवाह के रूप में गृहस्थ संस्कार तथा एक मृत्यु के बाद अंत्येष्टि संस्कार । कुल मिलाकर सोलह संस्कार हैं।

6. शिक्षासंस्कार का वर्णन करें।

उत्तर- शिक्षासंस्कारों में अक्षरारंभ, उपनयन, वेदारंभ, मुण्डनसंस्कार और समापवर्तन संस्कार आदि आते हैं। अक्षरारंभ में बच्चा अक्षर-लेखन और अंक-लेखन आरंभ करता है। उपनयनसंस्कार में गुरु के द्वारा शिष्य को अपने घर में लाना होता है। वहाँ शिष्य शिक्षा नियमों का पालन करते हुए अध्ययन करते थे । गुरु के घर में ही शिष्य वेदारंभ किया करते थे। केशान्त (मुण्डन) संस्कार में गुरु के घर में प्रथम क्षौरकर्म, अर्थात मुण्डन होता था। समापवर्तन संस्कार का उद्देश्य शिष्य का गुरु के घर से अलग होकर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना होता था।

7.विवाहसंस्कार का वर्णन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर- विवाहसंस्कार से ही लोग गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है। विवाह को एक पवित्र संस्कार माना गया है, जिसमें अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड होते हैं । उनमें वाग्दान, मण्डप-निर्माण, वधू के घर में वर पक्ष का स्वागत, वर-वधू का परस्पर निरीक्षण, कन्यादान, अग्निस्थापन, पाणिग्रहण, लाजाहोम, सिन्दूरदान इत्यादि कई कर्मकांड शामिल हैं। सभी क्षेत्रों में समान रूप से विवाहसंस्कार का आयोजन होता है।

8.'भारतीयसंस्काराः' पाठ में लेखक का क्या संदेश है ?

उत्तर- 'भारतीयसंस्काराः' पाठ में लेखक का संदेश है कि भारतीयों के व्यक्तित्व का निर्माण संस्कारों से होता है। जीवन में सही समय पर संस्कारों का अनुष्ठान होना चाहिए । विदेशी भी भारतीय संस्कारों के प्रति उन्मुख और जिज्ञासु है ।

9. 'भारतीयसंस्काराः' पाठ में लेखक का क्या विचार है ?

उत्तर- भारतीयसंस्कार पाठ में लेखक का विचार है कि मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण सुसंस्कार से ही होता है इसलिए विदेशी भी सुसंस्कारों के प्रति उन्मुख और जिज्ञासु है।

10. 'भारतीयसंस्काराः' पाठ में लेखक क्या शिक्षा देना चाहता है ?

उत्तर- लेखक इस पाठ से हमें यह शिक्षा देना चाहता है कि संस्कारों के पालन से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। संस्कारों का उचित समय पर पालन करने से गुण बढ़ते हैं और दोषों का नाश होता है। भारतीय संस्कृति की विशेषता संस्कारों के कारण ही है । लेखक हमें सुसंस्कारों का पालन करने का संदेश देते हैं।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. संस्कार प्राय: कितने प्रकार के हैं?

(A) पाँच

PDFSARTHI.COM

(B) छः

(C) तीन

(D) बारह

Ans – (A)

2. केशांत संस्कार किसके अंतर्गत होता है?

(A) जन्म के बाद

(B) जन्म से पूर्व

(C) विवाह

(D) शिक्षाकाल

Ans – (D)

3. चुड़ाकर्म संस्कार किसके अंतर्गत होते हैं?

(A) जन्म से पूर्व

(B) गुरु के घर

(C) शैशवावस्था

(D) मरने के बाद

Ans – (C)

4. शिक्षा संस्कार कितने हैं?

(A) 5

(B) 4

PDF SARTHI.COM

(C) 3

(D) 6

Ans – (A)

5. मण्डप का निर्माण किस संस्कार में होता है?

(A) विवाह

(B) छात्र काल

(C) जन्म से पूर्व

(D) जन्म के बाद

Ans (A)

6. कन्यादान किस संस्कार में होता है?

(A) छात्र काल

(B) विवाह

(C) शिक्षा काल

(D) जन्म से

Ans – (A)

7. मरने के बाद कौन संस्कार होता है?

(A) दाह संस्कार

(B) वेदारम्भ

(C) लिखना

(D) मुंडन

PDF SARTHI.COM

Ans – (D)

8. जन्मपूर्व संस्कार कितने हैं?

(A) पट्

(B) पञ्च

(C) एक

(D) त्रय:

Ans(D)

9. 'नामाकरण' किस संस्कार में होते हैं?

(A) गृहस्थ

(B) विवाह

(C) बचपन में

(D) मरने के बाद

Ans – (C)

10. गृहस्थ काल में कितने संस्कार होते हैं?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

11. 'सप्तपदी' क्रिया किस संस्कार में होते हैं?

(A) शिक्षा

(B) जन्मपूर्व

(D) विवाह

(C) जन्मपश्चात्

Ans – (B)

12. बचपन में कितने संस्कार होते हैं?

(A) सात

(B) छः

(C) पाँच

(D) दो

Ans – (B)

13. गर्भधारण किस संस्कार में होते हैं?

(A) जन्म से पूर्व

(B) जन्म के बाद

(C) गृहस्थ

(D) विवाह

Ans – (A)

14. भारतीय दर्शन का महत्वपूर्ण उपादान क्या है?

PDFSARTHI.COM

(A) ज्ञान

(B) दान

(C) संस्कार

(D) परिश्रम

Ans (C)

15. भारतीय दर्शन का महत्वपूर्ण स्रोत क्या है?

(A) संस्कार

(B) क्रीड़ा

(C) विद्या

(D) विद्यालय

Ans – (A)

16. प्राचीन संस्कृति की पहचान किससे होती है?

(A) धर्मों से

(B) संस्कारों से

(C) कर्मों से

(D) धन से

Ans – (A)

17. सीमन्तोन्नयन किस प्रकार का संस्कार है?

(A) जन्मपूर्व संस्कार

(B) शैशव संस्कार

PDF SARTHI.COM

(C) शैक्षणिक संस्कार

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (A)

18. प्राचीन काल में शिष्यों को क्या कहा जाता था?

(A) छात्र

(B) ब्रह्मचारी

(C) धनुर्धारी

(D) अन्तेवासी

Ans – (B)

19. गुरु शिष्य को कहाँ ले जाते हैं?

(A) वन में

(B) घर

(C) नदी

(D) विदेश

Ans(B)

20. शिक्षा नियमों का पालन कौन करते हैं?

(A) गुरु

(B) मित्र

(C) शिष्य

PDF SARTHI.COM

(D) शत्रु

Ans – (C)

21. गुरु शिष्यों को क्या देकर घर भेजते थे?

(A) धन

(B) उपदेश

(C) वस्त्र

(D) कलम

Ans – (B)

22. प्राचीन काल में शिष्य वेदारम्भ कहाँ करते थे?

(A) पिता के घर

(B) माता के घर

(C) विद्यालय में

(D) गुरु के घर

Ans – (D)

23. भारतीय संस्कृति का परिचय किसमें दिखाई पड़ता हैं?

(A) समाज में

(C) दानव

(B) संस्कार

(D) विवाह

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

24. अंतिम शिक्षा संस्कार का नाम क्या है? |

(A) उपनयनम्

(B) समावर्त्तनम्

(C) अक्षरारभ्यः

(D) वेदारम्भः

Ans – (B)

25. पाणिग्रहण किस संस्कार में होता है?

(A) शैक्षणिक संस्कार

(B) शैशव संस्कार

(C) विवाह संस्कार

(D) जन्म पूर्व संस्कार

Ans – (C)

26. 'विवाह संस्कार' के अन्तर्गत क्या नहीं आता है?

(A) गोदान

(B) वाग्दान

(C) कन्यादान

(D) सिन्दूरदान

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

27. कब गुरु शिष्यों को उपदेश देकर घर भेजते थे?

(A) शिक्षा के मध्य में

(B) शिक्षा के आरंभ में

(C) शिक्षा के अवसान में

(D) शिक्षारंभ के पूर्व में

Ans – (C)

28. शिष्य का पहला क्षौरकर्म कहाँ होता था?

(A) गुरु के घर पर

(B) पिता के घर पर

(C) पितामह के घर पर

(D) मातामह के घर पर

Ans – (A)

29. चरित्र का निर्माण किससे होता है?

(A) संस्कारों से

(B) वैर-भावना से

(C) अशांति से

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

30. अंत्येष्टि संस्कार कब होता है?

PDF SARTHI.COM

(A) मरने के बाद

(B) जन्म के पहले

(C) शिक्षा प्राप्त करते समय

(D) विवाह के पहले

Ans – (A)

31. 'गोदान' किस संस्कार का मुख्य कर्म है?

(A) विवाह

(C) अक्षरारम्भ

(B) केशान्त

(D) अंत्येष्टि

Ans – (B)

32. साहित्य ग्रंथों में केशांत संस्कार का नामान्तर क्या है?

(A) उपनयन

(B) समावर्त्तन

(C) वेदारम्भ

(D) गोदान

Ans – (D)

33. 'वाग्दान' किस संस्कार में होता है?

(A) उपनयन

PDF SARTHI.COM

(B) विवाह

(C) पुंसवन

(D) निष्क्रमण

Ans – (B)

34. 'पुंसवन' संस्कार कब होता है?

(A) मरणोपरान्त

(B) जन्मोपरान्त

(C) जन्म के पहले

(D) गृहस्थाश्रम में

Ans – (C)

35. भारतीय संस्कृति में कितने संस्कार होते हैं?

(A) बारह

(B) चौदह

(C) सोलह

(D) ग्यारह

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

7. नीतिश्लोकाः

अयं पाठः सुप्रसिद्धस्य ग्रन्थस्य महाभारतस्य उद्योगपर्वणः अंशविशेष (अध्यायाः 33-40) रूपायाः विदुरनीतेः संकलितः। युद्धम् आसन्नं प्राप्य धृतराष्ट्रो मन्त्रिप्रवरं विदुरं स्वचित्तस्य शान्तये कांश्चित् प्रश्नान् नीतिविषयकान् पृच्छति।

यह पाठ सुप्रसिद्ध ग्रन्थ महाभारत के उधोगपर्व के अंश विशेष (अध्याय 33-40) रूप में विदुरनीति से संकलित है। युद्ध निकट पाकर धृतराष्ट्र ने मंत्री श्रेष्ठ विदुर को अपने चित की शन्ति के लिए कुछ प्रश्न पुछे।

तेषां समुचितमुत्तरं विदुरो ददाति। तदेव प्रश्नोत्तररूपं ग्रन्थरत्नं विदुरनीतिः। इयमपि भगवदीतेव महाभारतस्याङ्गमपि स्वतन्त्रग्रन्थरूपा वर्तते।

पूछे गये प्रश्नों का उत्तर विदुरनीति देते हैं। वहीं प्रश्नोत्तर रूप ग्रन्थरत्न विदुरनीति है। यह भी भागवत् की तरह महाभारत का अंग स्वतंत्र ग्रन्थ रूप में है।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते।।1।।

जिसके कर्म को शर्दी, गर्मी, भय, भावुकता, समपन्नता अथवा विपन्नता बाधा नहीं डालता है, उसे ही पंडित कहा गया है।

तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम् ।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते ।।2।।

सभी जीवों के आत्मा के रहस्य को जानने वाले, सभी कर्म के योग को जानने वाले और मनुष्यों में उपाय जानने वाले व्यक्ति को पंडित कहा जाता है।

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहुभाषते ।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः ।।3।।

जो व्यक्ति बिना बुलाए किसी के यहाँ जाता है, बिना पूछे बोलता है और अविश्वासीयों पर विश्वास कर लेता है, उसे मुर्ख कहा गया है।

एको धर्मः परं श्रेयः क्षमैका शान्तिरुत्तमा।
विद्यैका परमा तृप्तिः अहिंसैका सुखावहा ।।4।।

एक ही धर्म सबसे श्रेष्ठ है। क्षमा शांति का उतम उपाय है। विद्या से संतुष्टि प्राप्त होती है और अहिंसा से सुख प्राप्त होती है।

PDFSARTHI.COM

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ।। 5 ।।

नरक के तीन द्वार है- काम, क्रोध और लोभ। इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए।

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ।। 6 ।।

एश्वर्य चाहने वाले व्यक्ति को निद्रा ;अधिक सोनाद्धए तन्द्रा ;उंघनाद्धए डर, क्रोध, आलस्य और किसी काम को देर तक करना। इन छः दोषों को त्याग देना चाहिए।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते ।

मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ।। 7।।

सत्य से धर्म की रक्षा होती है। अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है। श्रृंगार से रूप की रक्षा होती है। अच्छे आचरण से कुल ;परिवारद्ध की रक्षा होती है।

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः ।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।। 8।।

हे राजन! सदैव प्रिय बोलने वाले और सुनने वाले पुरूष आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन अप्रिय ही सही उचित बोलने वाले कठिन है।

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः ।

स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः ।। 9।।

स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी होती हैं। इन्ही से परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ती है। यह महापुरूषों को जन्म देनेवाली होती है। इसलिए स्त्रियाँ विशेष रूप से रक्षा करने योग्य होती है।

अकीर्तिं विनयो हन्ति हन्त्यनर्थं पराक्रमः ।

हन्ति नित्यं क्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यलक्षणम् ।। 10।।

विनम्रता बदनामी को दुर करती है, पौरूष या पराक्रम अनर्थ को दुर करता है, क्षमा क्रोध को दुर करता है और अच्छा आचरण बुरी आदतों को दुर करता है।

1. पण्डित किसे कहा गया है ? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर- महात्मा विदुर ने पण्डित की व्याख्या बड़े ही रोचक ढंग से की है। उनके मतानुसार पण्डित का अभिप्राय ब्राह्मण या विद्वान से नहीं है। धर्म एवं कर्म प्रवचनीय पण्डित सर्वत्र नहीं होते हैं। जिसका कार्य शीत, ऊष्ण, भय, प्रेम समृद्धि अथवा असमृद्धि में बाधा नहीं पहुँचाता है वही पण्डित है। सभी जीवों के तत्व को जानने वाला, अपने कर्म को योग की तरह जानने वाला ही पण्डित है।

2. नीच मनुष्य कौन है ? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर- नीच मनुष्य का अभिप्राय निम्न जाति में जन्म लेने वाले से नहीं है। सत् और असत् कर्मों में संलग्न रहने वाला मनुष्य भी नीच की श्रेणी में नहीं आता है। जो बिना बुलाये हुए किसी सभा में प्रवेश करता है, बिना पूछे हुए बहुत बोलता है. नहीं विश्वास करने पर भी बहुत विश्वास करता है। ऐसा पुरुष ही नीच श्रेणी में आता है।

3.नीतिश्लोकाः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर- इस पाठ में व्यासरचित महाभारत के उद्योग पर्व के अन्तर्गत आठ अध्यायों की प्रसिद्ध विदुरनीति से संकलित दस श्लोक हैं । महाभारत युद्ध के आरंभ में धृतराष्ट्र ने अपनी चित्तशान्ति के लिए विदुर से परामर्श किया था । विदुर ने उन्हें स्वार्थपरक नीति त्याग कर राजनीति के शाश्वत पारमार्थिक उपदेश दिये थे । इन्हें "विदुरनीति" कहते हैं। इन श्लोकों में विदुर के अमूल्य उपदेश भरे हुए हैं।

4. 'नीतिश्लोकाः' पाठ के आधार पर स्त्रियों को क्या विशेषताएँ हैं ?

उत्तर- स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी हैं। ये पूजनीया तथा महाभाग्यशाली हैं। ये पुण्यमयी और घर को प्रकाशित करनेवाली कही गई हैं। अतएव स्त्रियाँ विशेष रूप से रक्षा करने योग्य होती हैं।

5. उन्नति की इच्छा रखनेवाले मनुष्यों को क्या करना चाहिए ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर- उन्नति की इच्छा रखनेवाले मनुष्यों को निद्रा (अधिक सोना) तथा तंद्रा (ऊँघना) को त्याग देना चाहिए । इतना ही नहीं भय, क्रोध, आलस्य और काम को टालने की आदत को भी सदा के लिए छोड़ देना चाहिए । नीतिश्लोकाः पाठ में महात्मा विदुर का कथन है कि ये छः दोष अवश्य ही छोड़ देना चाहिए ।

6. 'नीतिश्लोकाः' पाठ के आधार पर सुलभ और दुर्लभ कौन है ?

उत्तर- सदा प्रिय बोलनेवाले, अर्थात जो अच्छा लगे वही बोलनेवाले मनुष्य सुलभ हैं। अप्रिय और जीवन को सही मार्ग पर ले जानेवाले वचन बोलने वाले तथा सुनने वाले मनुष्य दोनों ही प्रायः दुर्लभ हैं।

7. 'नीतिश्लोकाः' पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर- 'नीतिश्लोकाः' पाठ महात्मा विदुर-रचित 'विदुर-नीति' ग्रंथ से उद्धृत है। इस ग्रंथ में महाभारत तथा भागवत गीता में समान चित्त को शांत करनेवाला आध्यात्मिक श्लोक है। इन श्लोकों में जीवन के यथार्थ पक्ष का वर्णन किया गया है। इससे संदेश मिलता है कि सत्य ही सर्वश्रेष्ठ है। सत्य मार्ग से कदापि विचलित नहीं होना चाहिए।

8. 'नीतिश्लोकाः' पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर- विदुर-नीति ग्रंथ से नीतिश्लोकाः पाठ उद्धृत है। इसमें महात्मा विदुर मन को शांत करने के लिए कुछ श्लोक लिखे हैं । इन श्लोकों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सांसारिक सुख क्षणिक और आध्यात्मिक सुख स्थायी है। सुंदर आचरण से हम बुरे आचरण को समाप्त कर सकते हैं। काम, क्रोध, लोभ और मोह को नष्ट करके नरक गमन से बच सकते हैं।

9. 'नीति श्लोकाः पाठ में मूढ़चेतानराधम किसे कहा गया है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर- जिन व्यक्तियों का स्वाभिमान मरा हुआ होता है, जो बिना बुलाए किसी के यहाँ जाता है, बिना कुछ पूछे बक-बक करता है। जो अविश्वसनीय पर विश्वास करता है ऐसा मूर्ख हृदयवाला मनुष्यों में नीच होता है। अर्थात् ऐसी ही व्यक्ति को 'नीतिश्लोकाः' पाठ में मूढचेतानराधम कहा गया है।

10. 'नीति श्लोका' पाठ के आधार पर मनुष्य के षड् दोषों का हिन्दी में वर्णन करें।

उत्तर- मनुष्य के छः प्रकार के दोष निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता ऐश्वर्य प्राप्ति में बाधक बनने वाले होते हैं। नीतिकार का कहना है कि जिसमें ये दोष पाए जाते हैं वह चाहते हुए भी सुख की प्राप्ति नहीं कर सकता है, क्योंकि अधिक निद्रा के कारण वह कोई काम समय पर नहीं कर पाता है तो तन्द्रावश हर काम में पीछे रह जाता है। भय अर्थात डर के कारण काम आरंभ नहीं करता है तो क्रोध के कारण बना काम भी बिगडता है। इसी प्रकार आलस्य के कारण समय का दुरुपयोग होता है तो दीर्घसूत्रता अथवा काम को कल पर छोड़ने के कारण काम का बोझ बढ़ जाता है । फलतः वह जीवन के हर क्षेत्र में पीछे रह जाता है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'नीतिश्लोकाः पाठ किससे संकलित है?

(A) चाणक्यनीति

(B) भासनीति

(C) कृष्णनीति

(D) विदुर नीति

Ans – (D)

2. 'नीतिश्लोकाः पाठ किस ग्रंथ से लिया गया है?

(A) महाभारत

(B) रामायण

PDF SARTHI.COM

(C) काव्यमीमांसा

(D) मेघदूतम्

Ans – (A)

3. 'नीतिश्लोकाः पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(A) अर्जुन

(B) भीष्म

(C) विदूर

(D) कर्ण

Ans – (C)

4. 'नीतिश्लोकाः पाठ में कितने श्लोक है?

(A) 5

(B) 10

(C) 8

(D) 6

Ans – (B)

5. विदूर किसके प्रश्नों का उत्तर देता है?

(A) दुर्योधन

(B) भीष्म

(C) कृष्ण

PDF SARTHI.COM

(D) धृतराष्ट्र

Ans – (D)

6. विदुर कौन था?

(A) राजा

(B) मंत्री

(C) सैनिक

(D) सेनापति

Ans – (B)

7. 'विदुरनीति' के रचनाकार कौन हैं?

(A) चाणक्य

(B) मनु

(C) वाल्मीकि

(D) विदूर

Ans – (D)

8. 'विदुरनीति' किस ग्रंथ का अंश विशेष है?

(A) रामायण का

(B) महाभारत का

(C) उपनिषद् का

(D) वेद का

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

9. विनय को कौन मारता है?

(A) सुकीर्ति

(B) अपकृति

(C) अकीर्ति

(D) अनाकीर्ति

Ans – (C)

10. कैसे पुरुष सभी जगह सुलभ होते हैं?

(A) सत्यवादी

(B) कटुवादी

(C) प्रियवादी

(D) यथार्थवादी

Ans – (C)

11. बिना बुल्दार कौन आता है

(A) सज्जन

(B) दुर्जन

(C) मूर्ख

(D) इनमें से कोई

Ans – (C)

12. सभी जीवों सत्य को जाननेवाला कौन है?

PDF SARTHI.COM

(A) पण्डित

(B) राजा

(C) मंत्री

(D) छात्र

Ans – (A)

13. बिना पूछे बोलने वाला कौन होता है?

(A) मूर्ख

(B) विद्वान

(C) राजा

(D) मंत्री

Ans – (A)

14. काम, क्रोध और लोभ किसके द्वार हैं?

(A) स्वर्ग

(B) नरक

(C) विद्यालय

(D) गाँव

Ans – (B)

15. धर्म की रक्षा किससे होती है?

(A) सत्य से

PDF SARTHI.COM

(B) विद्या से

(C) वृत्ति से

(D) इनमें से किसी से नहीं

Ans – (A)

16. नरक के कितने द्वार हैं?

(A) तीन

(B) दो

(C) एक

(D) चार

Ans – (A)

17. 'विनय' किसको मारता है?

(A) यश

(B) अपयश

(C) क्षमा

(D) शत्रु

Ans – (B)

18. 'सुख' किसे कहा गया है?

(A) हिंसा

(B) क्रोध

PDF SARTHI.COM

(C) अहिंसा

(D) क्षमा

Ans – (C)

19. कुल (वंश) की रक्षा किससे होती है?

(A) रूप

(B) योग

(C) चरित्र

(D) समाज

Ans – (C)

20. कौन सबसे श्रेष्ठ है?

(A) विद्या

(B) क्रोध

(C) योग

(D) धर्म

Ans – (D)

21. दोष कितने है?

(A) चार

(B) छः

(C) पाँच

PDF SARTHI.COM

(D) तीन

Ans – (B)

22. घर की लक्ष्मी कौन है?

(A) धन

(B) स्वर्ण

(C) स्त्रियाँ

(D) पिता

Ans – (C)

23. पराक्रम से किसका नाश होता है?

(A) अनर्थ

(B) अर्थ

(C) क्रोध

(D) सत्य

Ans – (A)

24. सुंदर आचरण से किसका नाश होता है?

(A) धन

(B) कुलक्षण

(C) सत्य

(D) अनर्थ

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

25. किसकी रक्षा विशेष रूप से होनी चाहिए?

(A) क्रोध

(B) धन

(C) स्त्रियाँ

(D) शत्रु

Ans – (C)

26. धृतराष्ट्र किससे प्रश्नोत्तर करता है?

(A) भीष्म

(B) विदूर

(C) कृष्ण

(D) दुर्योधन

Ans – (B)

27. प्रश्नोत्तर के रूप में कौन ग्रंथ है?

(A) रघुवंश

(B) अलसकथा

(C) विदूर नीति

(D) भारत महिमा

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

28. उत्तम शांति क्या है?

(A) सत्य

(B) क्षमा

(C) विद्या

(D) लक्ष्मी

Ans – (B)

29. 'नराधम' किस पर विश्वास करता है?

(A) अविश्वासी

(B) विश्वासी

(C) मित्र

(D) राजा

Ans – (A)

30. विद्या की रक्षा किससे होती है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) क्षमा

(D) योग

Ans – (D)

31. सभी प्राणियों को जानने वाला कौन होता है ?

PDF SARTHI.COM

(A) मूर्ख

(B) पण्डित

(C) राजा

(D) शिष्य

Ans – (B)

32. क्षमा किससे मारता है ?

(A) अक्रोध

(B) असल्य

(C) क्रोध

(D) मित्र

Ans – (C)

33. मृजया (उबटन) से किसकी रक्षा होती है?

(A) रूप

(B) यश

(C) सत्य

(D) क्रोध

Ans – (A)

34. 'नीतिश्लोकाः' पाठ के आधार पर अविश्वासी पर विश्वास कौन करता है ?

(A) अधम

PDF SARTHI.COM

(B) पण्डित

(C) मध्यम

(D) उत्तम

Ans – (A)

35. 'सुखावहा' क्या है ?

(A) धर्मः

(B) अहिंसा

(C) विद्या

(D) क्षमा

Ans – (B)

36. नीतिश्लोकाः' पाठ महाभारत के किस पर्व से संकलित हैं?

(A) वन पर्व

(B) उद्योग पर्व

(C) शांति पर्व

(D) भीष्म पर्व

Ans – (B)

37. महाराज धृतराष्ट्र के प्रश्नों का समुचित उत्तर कौन देते हैं?

(A) मंत्री विदुर

(B) दुर्योधन

PDF SARTHI.COM

(C) अर्जुन

(D) कृष्ण

Ans – (A)

38. 'अपृष्टो बहुभाषते' किस पाठ की उक्ति है?

(A) नीतिश्लोकाः

(B) मन्दाकिनीवर्णनम्

(C) अलसकथा

(D) मंगलम्

Ans – (A)

39. परम तृप्ति देने वाली क्या है?

(A) विद्या

(B) लोभ

(C) क्रोध

(D) दीर्घसूत्रता

Ans – (A)

40. अपनी उन्नति चाहने वालों को कितने दोषों को त्याग देना चाहिए?

(A) सात

(B) छः

(C) पाँच

PDF SARTHI.COM

(D) आठ

Ans – (B)

41. रूप की रक्षा किससे होती है?

(A) सत्य से

(B) योग से

(C) मृजया से

(D) वृत्ति से

Ans – (C)

42. आचार का हनन किससे होता है?

(A) अलक्षण

(B) सुलक्षण

(C) काम

(D) क्रोध

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

8. कर्मवीर कथा (कर्मवीर की कहानी)

कर्मवीर- परिश्रमी, कर्तव्य में वीर, कर्मवान

(पाठेऽस्मिन् समाजे दलितस्य ग्रामवासिनः पुरुषस्य कथा वर्तते। कर्मवीरः असौ निजोत्साहेन विद्यां प्राप्य महत्पदं लभते, समाजे च सर्वत्र सत्कृतो भवति। कथाया मूल्यं वर्तते यत् निराशो न स्यात्, उत्साहेन सर्वं कर्तुं प्रभवेत्।)

(इस पाठ में समाज में दलित ग्रामवासी पुरूष की कहानी है। कर्मवीर लोग अपने उत्साह से विद्या को पाकर बहुत बड़ा पद को प्राप्त करते हैं। समाज में सब जगह उनका सत्कार होता है। कथा का वास्तविकता है कि मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए। उत्साह से सभी कामों में लगना चाहिए।)

अस्ति बिहारराज्यस्य दुर्गमप्राये प्रान्तरे 'भीखनटोला' नाम ग्रामः। निवसन्ति स्म तत्रातिनिर्धनाः शिक्षाविहीनाः क्लिष्टजीवनाः जनाः। तेष्वेवान्यतमस्य जनस्य परिवारो ग्रामाद् बहिःस्थितायां कुट्यां न्यवसत्। कुटी तु जीर्णप्रायत्वात् परिवारजनान् आतपमात्राद् रक्षति, न वृष्टेः।

बिहार राज्य के दुर्गम क्षेत्र में भीखनटोला नामक एक गाँव है। वहाँ बहुत गरीब शिक्षाविहीन, कठिनाई से जीवन जीने वाले लोग निवास करते थे। उन सबों में एक व्यक्ति का परिवार गाँव से बाहर से स्थित कुटियॉ में निवास करता था। झोपड़ी टुटी जैसी थी जो परिवार वालों को केवल धुप से बचाती थी, वर्षा से नहीं।

परिवारे स्वयं गृहस्वामी, तस्य भार्या तयोरेकः कनीयसी दुहिता चेत्यासन्। तस्माद् ग्रामात् क्रोशमात्रदूरं प्राथमिको विद्यालयः प्रशासनेन संस्थापितः। तत्रैको नवीनदृष्टिसम्पन्नः सामाजिकसामरस्यरसिकः शिक्षकः समागतः। भीखनटोलां द्रष्टुमागतः स कदाचित् खेलनरतं दलितबालकं विलोक्य तस्यापातरमणीयेन स्वभावेनाभिभूतः।

परिवार में स्वयं घर का मालिक, उसकी पत्नी, उसका पुत्र और छोटी बेटी थी। उस गाँव से मात्र एक कोश दुरी पर प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा स्थापित की गई। वहाँ एक नवीन विचार वाले सामाजिक समरसता के पक्षधर शिक्षक भीखनटोला देखने आए उस शिक्षक ने खेल में मग्न एक प्रमिभासम्पन्न दलित बालक को देखकर प्रभावित हो गए।

शिक्षकं बालकमेनं स्वविद्यालयमानीय स्वयं शिक्षितुमारभत। बालकोऽपि तस्य शिक्षणशैल्याकृष्टः शिक्षाकर्म जीवनस्य परमा गतिरिति मन्यमानो निरन्तरमध्यवसायेन विद्याधिगमाय निरतोऽभवत्। क्रमशः उच्चविद्यालयं गतस्तस्यैव शिक्षकस्याध्यापनेन स्वाध्यवसायेन च प्राथम्यं प्राप।

शिक्षक ने उस बालक को विद्यालय में लाकर पढ़ाना शुरू कर दिए। बालक भी उनकी पढ़ाई से प्रसन्न होकर शिक्षा को जीवन का असली धन मानकर परिश्रमपूर्वक अध्ययन करने लगा। इस प्रकार उच्च विद्यालय में जाने पर शिक्षक

PDFSARTHI.COM

के सहयोग तथा अपने परिश्रम के बल पर परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

'छात्राणामध्ययनं तपः' इति भूयोभूयः स्वविद्यागुरुणोपदिष्टोऽसौ बालकः पित्रोरर्थाभावेऽपि छात्रवृŸया कनीयश्छात्राणां शिक्षणलब्धेन धनेन च नगरगते महाविद्यालये प्रवेशमलभत। तत्रापि गुरूणां प्रियः सन् सततं पुस्तकालये स्ववर्गे च सदावहितचेतसा अकृतकालक्षेपः स्वाध्यायनिरतोऽभूत्।

पढ़ाई या शिक्षा की प्राप्ति तपस्या है। अपने गुरू से बार-बार उपदेश प्राप्त करने के फलस्वरूप पिता की निर्धनता के बावजूद छात्रवृति के सहारे माध्यमिक परीक्षा के बाद नगर के महाविद्यालय में नामांकन कराया। वहाँ भी शिक्षकों का प्रिय हो गया। हमेशा पुस्तकालय तथा अपने वर्ग में सावधानी पूर्वक मन से बिना समय नष्ट किए हुए पढ़ाई में लग गया।

महाविद्यालयस्य पुस्तकागारे बहूनां विषयाणां पुस्तकानि आत्मसादसौ कृतवान्। तत्र स्नातकपरीक्षायां विश्वविद्यालये प्रथमस्थानमवाप्य स्वमहाविद्यालयस्य ख्यातिमवर्धयत्। सर्वत्र रामप्रवेशराम इति शब्दः श्रूयते स्म नगरे विश्वविद्यालयपरिसरे च। नाजानतां पितरावस्य विद्याजन्यां प्रतिष्ठाम्।

महाविद्यालय के पुस्तकालय में अनेक प्रकार के विषयों का अध्ययन करके याद कर लिया। स्नातक के परिक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके महाविद्यालय की इज्जत बढ़ाई। सभी जगह विश्वविद्यालय में तथा नगर में रामप्रवेश राम सुनाई पड़ता था। पिता को कोई नहीं जानते हुए भी विद्यापुत्र के कारण प्रसिद्ध हो गए।

वर्षान्तरेऽसौ केन्द्रीयलोकसेवापरीक्षायामपि स्वाध्यवसायेन व्यापकविषयज्ञानेन च उन्नतं स्थानमवाप। साक्षात्कारे च समितिसदस्यास्तस्य व्यापकेन ज्ञानेन, तत्रापि तादृशे परिवारपरिवेशे कृतेन श्रमेणाभ्यासेन च परं प्रीताः अभूवन्।

वर्ष के अन्त में, इन्होंने केन्द्रीय लोकसेवा की परीक्षा में अपने परिश्रम और व्यापक ज्ञान के कारण श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। साक्षात्कार में समिति के सदस्यों को उनके ज्ञान, आर्थिक स्थिति और कठोर परिश्रम से सभी अति प्रसन्न हुए।

अद्य रामप्रवेशरामस्य प्रतिष्ठा स्वप्रान्ते केन्द्रप्रशासने च प्रभूता वर्तते। तस्य प्रशासनक्षमतां संकटकाले च निर्णयस्य सामर्थ्यं सर्वेषामावर्जकं वर्तते। नूनमसौ कर्मवीरो व्यतीत्य बाधाः प्रशासनकेन्द्रे लोकप्रियः संजातः। सत्यमुक्तम् – उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

आज रामप्रवेश राम की प्रतिष्ठा अपने राज्य में और केन्द्र सरकार में बहुत है। उसका प्रशासनिक क्षमता और संकटकाल में निर्णय की क्षमता सबों के लिए आकर्षक है। अवश्य यह कर्मवीर बाधाओं को पार कर प्रशासन क्षेत्र में लोकप्रिय हो गया है। सत्य कहा गया है- परिश्रमी व्यक्ति को ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

1.कर्मवीर कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर → कर्मवीर शब्द से ही आभास होने लगता है कि निश्चय ही कोई ऐसा कर्मवीर है जो अपनी निष्ठा, उद्यम, सेवाभाव आदि के द्वारा उत्तम पद को प्राप्त किये हुए है। प्रस्तुत पाठ में एक ऐसे ही कर्मवीर की चर्चा है जो अभावग्रस्त जीवन-यापन करते हुए भी स्नेहिल शिक्षक का सान्निध्य पाकर विविध बाधाओं से लड़ता हुआ एक दिन शीर्ष पद को प्राप्त कर लेता है। मनुष्य की जीवटता, निष्ठा, सच्चरित्रता आदि गुण उसे निश्चय ही सफलता की सीढ़ियों पर अग्रसारित करते हैं। अतः हमें भी जीवटता, 'निष्ठा आदि को आधार बनाकर सत्कर्म पर बने रहना चाहिए।

2. रामप्रवेश राम का चरित्र-चित्रण करें।

उत्तर →रामप्रवेश राम 'कर्मवीरकथा' का प्रमुख पात्र है। इनका जन्म बिहार राज्य अन्तर्गत भीखनटोला में हुआ है । कभी खेलों में संलग्न रहनेवाले रामप्रवेश राम अध्यापक का सान्निध्य पाकर, विद्याध्ययन में जुट गये। गुरु का आशीर्वाद और मेहनत उनकी सफलता की सीढ़ी बनते गये। धनाभाव के बीच भी उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा। विद्यालय स्तर से लेकर प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करते गये । केन्द्रीय लोक सेवा आयोग परीक्षा में उत्तीर्ण होकर उन्होंने समाज के समक्ष अपना आदर्श प्रस्तुत कर दिया । उनकी प्रशासन क्षमता और संकट काल में निर्णायक सामर्थ्य सभी को आकर्षित करते हैं।

3. कर्मवीरकथा पाठ का पाँच, वाक्यों में परिचय दें।

उनर→इस पाठ में एक पुरुषार्थी की कथा है जो निर्धनता एवं दलित जाति में जन्म जैसे विपरीत परिवेश में भी रहकर प्रबल इच्छाशक्ति तथा उन्नति की उत्कट कामना के कारण उच्च पद पर पहुँचता है। यह कथा किशोरों में आत्मविश्वास की ओर आत्मसम्मान उत्पन्न करती है, विजय के पथ को प्रशस्त करती है । ऐसे कर्मवीर हमारे आदर्श हैं।

4. भीखनटोला कैसा गाँव है ?

PDFSARTHI.COM

उनर उत्तर अशिक्षित हैं तथा कष्टमय जीवन बिताते हैं। कुछ अत्यंत निर्धन परिवार गाँव के बाहर टूटी कुटियाओं में रहते हैं। भीखनटोला से लगभग एक कोश की दूरी पर एक प्राथमिक विद्यालय है।

5.रामप्रवेशराम की प्रारंभिक शिक्षा के विषय में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर →रामप्रवेशराम भीखनटोला गाँव का रहनेवाला एक दलित बालक था । उस बालक को एक शिक्षक अपने विद्यालय में लाकर शिक्षा देना प्रारंभ किए। बालक रामप्रवेशराम शिक्षक की शिक्षणशैली से आकृष्ट हआ और शिक्षा को जीवन का परम गति माना । विद्या अध्ययन में रात-दिन लग गया और अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने लगा।

6. रामप्रवेशराम किस प्रकार केंद्रीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में सफल हुआ?

उत्तर →रामप्रवेशराम एक कर्मवीर एवं निर्धन छात्र था। वह कष्टकारक जीवन जीते हुए अध्ययनशील था । वह पुस्तकालयों में अध्ययन किया करता था । वह अपने से नीचे वर्ग के छात्रों को टयूशन पढ़ाकर जीवनयापन करता था । परिणामस्वरूप केंद्रीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने में सफल रहा।

7.'कर्मवीर कथा' पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर → कर्मवीर कथा पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि गाँव में रहनेवाले दलित एवं निर्धन छात्र भी मेहनत के बल पर सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकते हैं। लगन उत्साह और धैर्य से मनुष्य किसी भी कठिनाई पर विजय प्राप्त कर सकता है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. कर्मवीर कथा में किस पुरुष की वर्णन है?

(A) राजा

PDFSARTHI.COM

(B) मंत्री

(C) दलित

(D) शिक्षक

Ans – (C)

2. 'कर्मवीर कथा' किस प्रकार की कथा है?

(A) लघु कथा

(B) निबंध

(C) कथा

(D) नाटक

Ans(A)

3. कर्मवीर रामप्रवेश राम के परिवार के सदस्यों की कुल संख्या कितनी थी?

(A) चार

(B) छह

(C) आठ

(D) दस

Ans – (A)

4. कर्मवीर उत्साह से क्या प्राप्त करता है?

(A) लघुपद

(B) महत्पद

(C) शिक्षक पद

PDF SARTHI.COM

(D) लिपिक पद

Ans – (B)

5. रामप्रवेश राम कहाँ के पुस्तकालयों में पुस्तकों को आत्मसात् किया?

(A) विद्यालय

(B) महाविद्यालय

(C) गाँव

(D) नगर

Ans – (B)

6. 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी:' यह उक्ति किस पाठ से संकलित है?

(A) कर्मवीर कथा

(B) व्याघ्र पथिक कथा

(C) भारतीय संस्काराः

(D) भारत महिमा

Ans – (A)

7. भीखनटोला से कितनी दूर पर प्राथमिक विद्यालय था?

(A) दो मीटर

(C) एक कोस

(B) 2 किलोमीटर

(D) 4 कोस

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

8. किस परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया?

(A) इन्टर

(B) स्नातक

(C) स्नात्तकोत्तर

(D) मैट्रिक

Ans(B)

9. शिक्षक दलित बालक को कहाँ ले गये?

(A) दिल्ली

(B) विद्यालय

(C) क्षेत्र

(D) घर

Ans – (B)

10. रामप्रवेश के गाँव का नाम क्या है?

(A) भीखनटोला

(C) पटना

(B) रामनगर

(D) बिहार

Ans – (A)

11. कौन स्नातक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया?

PDF SARTHI.COM

(A) रामप्रवेश राम

(B) शिक्षक

(C) रामप्रवेश

(D) प्रवेश

Ans – (A)

12. गाँव में कौन आये थे?

(A) शिक्षक

(B) मंत्री

(C) डाक्टर

(D) राजा

Ans – (A)

13. परिश्रमी पुरुष क्या प्राप्त करता है?

(A) सरस्वती

(B) शांति

(C) लक्ष्मी

(D) अशांति

Ans – (C)

14. दलित पुरुष का क्या नाम था?

(A) रामजन्म राम

PDF SARTHI.COM

(B) राम

(C) प्रवेश राम

(D)रामप्रवेश राम

Ans – (D)

15. किस गाँव में निर्धन लोग रहते थे?

(A) रामपुर

(B) भीखनटोला

(C) रामनगर

(D) दिल्ली

Ans – (B)

16. बालक किसके शैली से आकृष्ट हुआ?

(A) राजा

(B) शिक्षक

(C) छात्र

(D) मुखिया

Ans – (B)

17. राम प्रवेश राम की प्रतिष्ठा कहाँ थी?

(A) अपने गाँव में

(B) अपने राज्य में

PDF SARTHI.COM

(C) अपने राज्य और केन्द्र के प्रशासन में

(D) केन्द्र के प्रशासन में

Ans – (C)

18. राम प्रवेश राम क्या कर रहा था, जब शिक्षक ने पहली बार उसको भीखन टोला में देखा?

(A) खेल रहा था

(B) खा रहा था

(C) पढ़ रहा था

(D) दौड़ रहा था *Ans*(A)

19. राम प्रवेश राम ने स्नातक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर किसकी ख्याति को बढ़ाया?

(A) अपने विद्यालय की

(B) अपने महाविद्यालय की

(C) अपने गुरु की

(D) माता-पिता की *Ans*(B)

20. कर्मवीर कौन था?

(A) राम प्रवेश राम

(B) दुर्योधन.

(C) अर्जुन

(D) वीरेश्वर

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

21. लक्ष्मी किसका वरण करती है?

(A) मूर्ख

(B) उद्योगी पुरुष

(C) लोभी

(D) क्रोधी

Ans(B)

22. भीखन टोला गाँव कहाँ है?

(A) उत्तर प्रदेश

(B) झारखण्ड

(C) बंगाल

(D) बिहार

Ans(D)

23. दलित ग्रामवासी पुरुष की कथा कौन है?

(A) कर्मवीर कथा

(B) अलस कथा

(C) व्याघ्रपथिक कथा

(D) विश्वशांति:

Ans – (A)

24. 'कर्मवीर कथा' पाठ में किसकी कथा है?

(A) राम प्रवेश राम

(B) श्याम प्रवेश राम

PDF SARTHI.COM

(C) गणेश प्रवेश राम

(D) घनश्याम राम

Ans – (A)

25. भीखन टोला देखने कौन आया था?

(A) प्रशासन

(B) अध्यापक

(C) नेता

(D) साधु

Ans – (B)

26. राम प्रवेश राम' उच्च विद्यालय में कौन-सा स्थान प्राप्त किया?

(A) पाँचवाँ

(B) तीसरा

(C) दूसरा

(D) पहला

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

9. स्वामी दयानन्दः

आधुनिकभारते समाजस्य शिक्षायाश्च महान् उद्धारकः स्वामी दयानन्दः। आर्यसमाजनामकसंस्थायाः संस्थापनेन एतस्य प्रभूतं योगदानं भारतीयसमाजे गृह्यते। भारतवर्षे राष्ट्रीयतायाः बोधोऽपि अस्य कार्यविशेषः।

आधुनिक भारत में समाज और शिक्षा के महान उद्धारक स्वामी दयानन्द हैं। आर्यसमाज नामक संस्था की स्थापना करने में इनका बहुत बड़ा योगदान भारतीय समाज में लिया जाता है। भारत वर्ष में राष्ट्रीयता का ज्ञान कराना भी इनका कार्य-विशेष माना जाता है।

समाजे अनेकाः दूषिताः प्रथा खण्डयित्वा शुद्धतत्त्वज्ञानस्य प्रचारं दयानन्दः अकरोत्। अयं पाठः स्वामिनो दयानन्दस्य परिचयं तस्य समाजोद्धरणे योगदानं च निरूपयति।

समाज में अनेक दूषित प्रथाओं को खण्डित कर वास्तविकता का ज्ञान का प्रचार दयानन्द ने किया। यह पाठ स्वामी दयानन्द के परिचय और समाज उद्धार में उनका योगदान को स्पष्ट किया है।

मध्यकाले नाना कुत्सितरीतयः भारतीयं समाजम् अदूषयन्। जातिवादकृतं वैषम्यम्, अस्पृश्यता, धर्मकार्येषु आडम्बरः, स्त्रीणामशिक्षा, विधवानां गर्हिता स्थितिः, शिक्षायाः अव्यापकता इत्यादयः दोषाः प्राचीनसमाजे आसन्। अतः अनेके दलिताः हिन्दुसमाजं तिरस्कृत्य धर्मान्तरणं स्वीकृतवन्तः।

मध्य काल में अनेक गलत रीति-रिवाजों से भारतीय समाज दूषित हो गया था। जातिवाद से किया गया विषमता, छुआ-छूत, धर्म कार्यों में आडम्बर, स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की निन्दनीय स्थिति, शिक्षा की कमी इत्यादि अनेक दोष समाज में थे। अतः अनेक दलित हिन्दू समाज अपमानित होकर धर्म परिवर्तन करना स्वीकार लिया।

एतादृशे विषमे काले ऊनविंशशतके केचन धर्मोद्धारकाः सत्यान्वेषिणः समाजस्य वैषम्यनिवारकाः भारते वर्षे प्रादुरभवन्। तेषु नूनं स्वामी दयानन्दः विचाराणां व्यापकत्वात् समाजोद्धरणस्य संकल्पाच्च शिखर-स्थानीयः।

इस प्रकार के विषम समय में उन्नसवीं सदी में कुछ धर्म उद्धारक, सत्य की खोज करने वाले तथा समाज की विषमता को दूर करने वाले भारतवर्ष में उत्पन्न हुए। उनमें अवश्य स्वामी दयानन्द के विचारों का व्यापक प्रभाव तथा समाज-उद्धार के संकल्प से उनका स्थान सर्वोच्च है।

स्वामिनः जन्म गुजरातप्रदेशस्य टंकरानामके ग्रामे 1824 ईस्वी वर्षेऽभूत्। बालकस्य नाम मूलशंकरः इति कृतम्। संस्कृतशिक्षया एवाध्ययनस्यास्य प्रारम्भो जातः। कर्मकाण्डिपरिवारे तादृश्येव व्यवस्था तदानीमासीत्। शिवोपासके परिवारे मूलशंकरस्य कृते शिवरात्रिमहापर्व उद्बोधकं जातम्।

स्वामी जी का जन्म गुजरात प्रदेश के 'टंकरा' नामक गाँव में 1824 ई0 हुआ था। बालक का नाम 'मूलशंकर' रखा

PDFSARTHI.COM

गया। संस्कृत शिक्षा से ही अध्ययन प्राप्त हुआ। उस समय कर्मकाण्डी परिवार में एसी ही व्यवस्था थी। शिव के उपासक परिवार में शिवरात्रि महापर्व मूलशंकर के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ।

रात्रिजागरणकाले मूलशंकरेण दृष्टं यत् शंकरस्य विग्रहमारुह्य मूषकाः विग्रहार्पितानि द्रव्याणि भक्षयन्ति। मूलशंकरोऽचिन्तयत् यत् विग्रहोऽयमकिंचित्करः। वस्तुतः देवः प्रतिमायां नास्ति। रात्रिजागरणं विहाय मूलशंकरः गृहं गतः। ततः एव मूलशंकरस्य मूर्तिपूजां प्रति अनास्था जाता। वर्षद्वयाभ्यन्तरे एव तस्य प्रियायाः स्वसुर्निधनं जातम्।

रात्री जागरण के समय मूलशंकर द्वारा देखा गया कि शिव की मूर्ति पर चढ़ाए गए प्रसाद को चूहा खा रहा है। मूलशंकर ने सोचा कि यह मूर्ति कुछ भी करने वाला नहीं है। वास्तव में देवता प्रतिमा में नहीं है। रात्री जागरण छोड़कर मूलशंकर घर चला गया। उसी समय से मूलशंकर के हृदय में मूर्ति पूजा के प्रति आस्था खत्म हो गया। दो वर्ष के अंदर ही उनके प्रिय बहन का निधन हो गया।

ततः मूलशंकरे वैराग्यभावः समागतः। गृहं परित्यज्य विभिन्नानां विदुषां सतां साधूनांच संगतौ रममाणोऽसौ मथुरायां विरजानन्दस्य प्रज्ञाचक्षुषः विदुषः समीपमगमत्। तस्मात् आर्षग्रन्थानामध्ययनं प्रारभत।

इसके बाद मूलशंकर में वैराग्य भाव आ गया। घर त्यागकर विभिन्न विद्वानों, सज्जनों और साधुओं की संगति में घूमते हुए वे मथुरा में विरजानन्द नामक अन्धा विद्वान के पास गये। उनसे वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

विरजानन्दस्य उपदेशात् वैदिकधर्मस्य प्रचारे सत्यस्य प्रचारे च स्वजीवनमसावर्पितवान्। यत्र-तत्र धर्माडम्बराणां खण्डनमपि च चकार। अनेके पण्डिताः तेन पराजिताः तस्य मते च दीक्षिताः।

विरजानन्द के उपदेश से उपदेशित होकर वैदिक धर्म और सत्य के प्रसार में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। जहाँ-तहाँ धर्म-आडम्बर का खण्डन भी उन्होने किया। अनेक पंडितों ने उनसे पराजित होकर उनके मत में दीक्षा प्राप्त की।

स्त्रीशिक्षायाः विधवाविवाहस्य मूर्तिपूजाखण्डनस्य अस्पृश्यतायाः बालविवाहस्य च निवारणस्य तेन महान् प्रयासः विभिनैः समाजोद्धारकैः सह कृतः। स्वसिद्धान्तानां संकलनाय सत्यार्थप्रकाशनामकं ग्रन्थं राष्ट्रभाषायां विरच्य स्वानुयायिनां स महान्तमुपकारं चकार।

स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, मूर्ति-पूजा खण्डन, छुआ-छूत और बाल-विवाह निवारण का महान प्रयास उनके द्वारा विभिन्न समाज उद्धारको के साथ किया गया। अपने सिद्धांत का संकलन करने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ को हिन्दी भाषा में रचना कर अपने अनुयायी लोगों का बहुत बड़ा उपकार किया।

किंच वेदान् प्रति सर्वेषां धर्मानुयायिनां ध्यानमाकर्षयन् स्वयं वेदभाष्याणि संस्कृतहिन्दीभाषयोः रचितवान्।

PDFSARTHI.COM

प्राचीनशिक्षायां दोषान् दर्शयित्वा नवीनां शिक्षा पद्धतिमसावदर्शत्। स्वसिद्धान्तानां कार्यान्वयनाय 1875 ईस्वी वर्षे मुम्बईनगरे आर्यसमाजसंस्थायाः स्थापनां कृत्वा अनुयायिनां कृते मूर्त्तरूपेण समाजस्य संशोधनोद्देश्यं प्रकटितवान्।

वेदों के प्रति अनुयायियों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए वेद का भाषा संस्कृत-हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा। 1875 ई0 में अपने सिद्धांत के प्रचार-प्रसार के लिए मुम्बई में आर्य-समाज की स्थापना करके अनुयायियों के समक्ष उद्देश्य प्रकट किया।

सम्प्रति आर्यसमाजस्य शाखाः प्रशाखाश्च देशे विदेशेषु च प्रायेण प्रतिनगरं वर्तन्ते। सर्वत्र समाजदूषणानि शिक्षामलानि च शोधयन्ति। शिक्षापद्धतौ गुरुकुलानां डी॰ ए॰ वी॰ (दयानन्द एंग्लो वैदिक) विद्यालयानांच समूहः स्वामिनो दयानन्दस्य मृत्योः (1883 ईस्वी) अनन्तरं प्रारब्धः तदनूयायिभिः।

वर्तमान समय में आर्यसमाज की शाखा-प्रशाखा देश तथा विदेशों के प्रायः सभी नगरों में विद्यमान है। सब जगह समाज में स्थित दोषों और गंदगियों को शुद्ध कर रहा है। शिक्षा पद्धति में गुरूकुलों का डी0 ए0 वी0 (दयानन्द-एंग्लो-वैदिक) विद्यालयों का समुह स्वामी दयानन्द की मृत्यु 1883 ई0 के बाद अनेक अनुयायियों के द्वारा प्रारंभ किया गया।

वर्तमानशिक्षापद्धतौ समाजस्य प्रवर्तने च दयानन्दस्य आर्यसमाजस्य च योगदानं सदा स्मरणीमस्ति।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में और समाज के परिवर्त्तन में दयानन्द और आर्य समाज का योगदान सदा स्मरणीय है।

1. आधनिक भारत को स्वामी दयानंद का क्या योगदान है?

उत्तर⇒ आधुनिक भारत के समाज और शिक्षा के महान उद्धारक स्वामी दयानंद हैं। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता को दूर कर एक नये समाज की स्थापना की है। जातिवाद, अस्पृश्यता, धर्मकार्यों में आडम्बर आदि अनेक विषमताएँ थीं जिनसे समाज ग्रसित था । कर्मकांडी परिवार में जन्म लेने वाले स्वामी दयानंद को शिवरात्रि पर्व की रात्रि में अपने ज्ञान का उद्बोधन हुआ । बहन के निधन के बाद इनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया । विरजानन्द का सान्निध्य पाकर वैदिक 'धर्मप्रचार एवं सत्य के प्रसार में अपने जीवन को अर्पित कर दिया। भारतवर्ष में इन्होंने राष्टीयता को लक्ष्य बनाकर भारतवासियों के लिए पथप्रदर्शक का काम किया । दूषित प्रथा को खत्म कर

PDFSARTHI.COM

शुद्ध तत्वज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। वैदिक धर्म एवं सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ की रचना कर भारतवासियों को एक नई शिक्षा नीति की ओर अभिप्रेत किया ।

2. कौन-सी घटना ने स्वामी दयानंद की जीवन दिशा को निर्धारित कर दिया?

उत्तर⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। पिताजी स्वयं संस्कृत के उत्कट विद्वान् थे। परिवार में कर्मकाण्ड के प्रति आस्था थी। एक दिन शिवरात्रि के शुभ अवसर पर रात्रि जागरण का महोत्सव हुआ। शिव की मूर्ति पर इन्होंने एक चूहे को चहलकदमी करते हुए देखा । इनके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। उसी समय इनके मन में मूर्ति पूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न हो गई। कुछ दिनों के बाद उनकी प्रिय बहन का निधन हो गया। इन घटनाओं ने ही उनकी जीवन दिशा को बदल दिया। उनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया।

3. स्वामी दयानन्दः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर⇒ उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी में आविर्भूत समाजसुधारकों में स्वामी दयानन्द अतीव प्रसिद्ध हैं। इन्होंने रूढ़िग्रस्त समाज और विकृत धार्मिक व्यवस्था पर कठोर प्रहार करके आर्य समाज की स्थापना की जिसकी शाखाएँ देश-विदेश में शिक्षा सुधार के लिए भी प्रयत्नशील रही हैं। शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार करते हुए इन्होंने आधुनिक शिक्षा के लिए डी० ए० वी० विद्यालय जैसी संस्थाओं की स्थापना को प्रेरित किया था। इनका जीवनचरित प्रस्तुत पाठ में संलिप्त रूप से दिया गया है।

4. स्वामी दयानन्द कौन थे तथा उन्होंने किस तरह के सामाजिक कार्य किए?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द एक महान समाज-सुधारक संत थे। मध्यकाल में भारत में छुआछूत, अशिक्षा, जातिभेद, धर्म में आडम्बर आदि अनेक कुप्रथाएँ फैली हुई थीं। विधवाओं को काफी कष्ट दिया जाता था। स्वामी दयानन्द ने इन सभी कुरीतियों को दूर करने के लिए आम लोगों के बीच जाकर इन कुरीतियों के खिलाफ जागरण पैदा किया। उन्होंने अपने सिद्धांतों का संकलन 'सत्यार्थप्रकाश' नामक ग्रंथ में किया । शिक्षा-पद्धति के दोषों को दूर करने में

PDFSARTHI.COM

उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। इन सभी कार्यों को करने के लिए उन्होंने 'आर्यसमाज' नामक संस्था की स्थापना की।

5. स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा के विरोधी कैसे बने?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द के माता-पिता भगवान शिव के उपासक थे । महाशिवरात्रि के दिन शिव-पार्वती की पूजा इनके परिवार में विशेष रूप में मनाई जाती थी। एक बार महाशिवरात्रि के दिन इन्होंने देखा कि एक चूहा भगवान शंकर की मूर्ति के ऊपर चढ़कर उनपर चढ़ाए हुए प्रसाद को खा रहा है। इससे उन्हें विश्वास हो गया कि मूर्ति में भगवान नहीं होते । इस प्रकार वे मूर्तिपूजा के विरोधी हो गए।

6. आर्यसमाज की स्थापना किसने की और कब की? आर्य समाज के बारे में लिखें।

उत्तर⇒ आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1885 में मुंबई नगर में की । आर्यसमाज वैदिक धर्म और सत्य के प्रचार पर बल देता है । यह संस्था मूर्तिपूजा का विरोध करती है। आर्यसमाज में नवीन शिक्षा पद्धति को अपनाया । डी०ए०वी० नामक विद्यालयों की समूह की स्थापना की। आज इस संस्था की शाखाएँ-प्रशाखाएँ देश-विदेश के प्रायः हरेक प्रमुख नगर में अवस्थित है।

7. स्वामी दयानन्द ने समाज के उद्धार के लिए क्या किया?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द ने समाज के उद्धार के लिए स्त्री शिक्षा पर बल दिया और विधवा विवाह हेतु समाज को प्रोत्साहित किया। उन्होंने बाल विवाह समाप्त करवाने, मूर्तिपूजा का विरोध और छुआछूत समाप्त कराने का प्रयत्न किया।

8. वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वामी दयानन्द ने क्या किया?

PDFSARTHI.COM

उत्तर⇒ वैदिक धर्म और सत्य के प्रचार के लिए स्वामी दयानन्द ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया । वेदों के प्रति सभी अनुयायियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने वेदों के उपदेशों को संस्कृत एवं हिंदी में लिखा।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. गुजरात- प्रदेश स्थित टंकाराग्राम किसका जन्मस्थल है?

(A) स्वामी विवेकानन्दः

(B) स्वामी विरजानन्दः

(C) स्वामी दयानंदः

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

2. स्वामी दयानंद के गुरु कौन थे?

(A) महानन्द

(B) कबीरदास

(C) बिरजानन्द

(D) शंकर

Ans – (C)

3. दयानन्द किस शताब्दी में जन्म लिए थे?

(A) 17 वीं

(B) 19 वीं

(C) 18 वीं

PDF SARTHI.COM

(D) 20 वीं

Ans – (B)

4. स्वामी दयानन्द की शिक्षा किस भाषा से प्रारंभ हुई?

(A) हिंदी

(B) गुजराती

(C) अंग्रेजी

(D) संस्कृत

Ans – (D)

5. दयानन्द को कौन उपदेश दिये?

(A) विरजानन्द

(B) विवेकानन्द

(C) शंकर

(D) नन्द

Ans – (A)

6. स्वामी दयानन्द किस प्रकार का पाठ है?

(A) लघुकथा

(B) निबंध

(C) काव्य

(D) कथा

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

7. आर्य समाज के संस्थापक कौन थे?

(A) विवेकानंद

(B) रामप्रवेश राम

(C) स्वामी दयानंद

(D) चन्द्रगुप्त

Ans – (C)

8. स्वामी दयानन्द का जन्म किस प्रदेश में हुआ था?

(A) बिहार

(B) महाराष्ट्र

(C) उड़ीसा

(D) गुजरात

Ans – (D)

9. स्वामी दयानन्द किसके संस्थापक थे?

(A) आर्यसमाज

(B) ब्रह्मसमाज

(C) समग्रविकास

(D) संस्कृतसमाज

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

10. स्वामी दयानन्द ने किसकी रचना की है?

(A) वेद

(B) मेघदूतम

(C) सत्यार्थप्रकाश

(D) पुराण

Ans – (C)

11. दयानन्द का निधन कब हुआ?

(A) 1884 ई०

(B) 1885 ई०

(C) 1883 ई०

(D) 1882 ई०

Ans – (C)

12. किसका नाम मूलशंकर था?

(A) विवेकानंद

(B) कालिदास

(C) दयानन्द

(D) बिरजानन्द

Ans – (C)

13. स्वामी दयानन्द का जन्म किस ई० में हुआ था?

PDF SARTHI.COM

(A) 1825

(B) 1850

(C) 1824

(D) 1800

Ans – (C)

14. स्वामी दयानन्द का बचपन का क्या नाम था ?

(A) मूलशंकर

(B) दयानन्द

(C) विवेक

(D) राम

Ans – (A)

15. स्वामी दयानंद का जन्म किस प्रकार के परिवार में हुआ था ?

(A) गृहस्थ

(B) कर्मकाण्ड

(C) किसान

(D) मजदूर

Ans – (B)

16. दयानन्द का परिवार किसका उपासक था?

(A) विष्णु

PDF SARTHI.COM

(B) हनुमान

(C) शिव

(D) गणेश

Ans – (C)

17. कौन हिन्दू समाज से तिरस्कृत होकर धर्म परिवर्तन कर रहा था ?

(A) दरिद्र

(B) दलित

(C) विधवा

(D) कुलीन

Ans – (B)

18. आर्यसमाज की स्थापना किस नगर में किया ?

(A) दिल्ली

(B) कोलकाता

(C) चेन्नई

(D) मुम्बई

Ans – (D)

19. आर्यसमाज की स्थापना किस ई० में हुआ?

(A) 1875

PDF SARTHI.COM

(B) 1870

(C) 1883

(D) 1888

Ans – (A)

20. सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ को किस भाषा में रचना किया?

(A) हिन्दी

(B) बंगला

(C) मराठी

(D) संस्कृत

Ans – (A)

21. किस काल में समाज दूषित हो गया था।

(A) मध्यकाल

(B) प्राचीनकाल

(C) मुगलकाल

(D) गुप्तकाल

Ans – (A)

22. रात्रिजागरण को छोड़कर मूलशंकर कहाँ गया?

(A) वन

(B) घर

PDF SARTHI.COM

(C) विद्यालय

(D) कार्यालय

Ans – (B)

23. किसकी स्थापना 1875 ई० में हुआ?

(A) ब्रह्मसमाज

(B) आर्यसमाज

(C) मंदिर

(D) ग्राम

Ans – (B)

24. किसका प्रचार, दयानन्द ने किया?

(A) शुद्ध तत्व ज्ञान

(B) सामाजिकज्ञान

(C) विज्ञान

(D) गीत

Ans – (A)

25. समाज और शिक्षा के उद्धारक कौन थे?

(A) विवेकानन्द

(B) दयानन्द

(C) कर्ण

PDF SARTHI.COM

(D) रामप्रवेश

Ans – (B)

26. मध्यकाल में किसमें आडम्बर (दिखावा) था ?

(A) गृहकार्य

(B) ग्रंथकार्य

(C) खेलकार्य

(D) धार्मिक कार्य

Ans – (D)

27. कौन मेधावी थे?

(A) छात्रः

(B) नन्दः

(C) दयानन्दः

(D) रामानन्दः

Ans – (C)

28. किसकी शाखा देश-विदेश में है?

(A) ब्रह्मसमाज

(B) आर्यसमाज

(C) विद्यालय

PDF SARTHI.COM

(D) ग्रंथ

Ans – (B)

29. मूलशंकर को किसके प्रति अनास्था हुई?

(A) दुर्गापूजा

(B) सूर्यपूजा

(C) मूर्तिपूजा

(D) शस्त्रपूजा

Ans – (C)

30. कौन प्रसाद को खा रहा था?

(A) चूहा

(B) बाघ

(C) बैल

(D) बकरा

Ans – (A)

31. सत्यार्थप्रकाश के रचनाकार कौन थे?

(A) रामानन्द

(B) कालिदास

(D) दयानन्द

(C) बिरजानन्द

PDF SARTHI.COM

Ans – (D)

32. स्वामी दयानन्द कौन थे?

(A) शिक्षाविद्

(B) समाजोद्धारक

(C) धर्मोपदेशक

(D) राजनीतिज्ञ

Ans – (B)

33. स्वामी दयानन्द का जन्म किस गाँव में हुआ था?

(A) कंटारा

(B) टंकापुर

(C) टंकारा

(D) भीखन टोला

Ans – (C)

34. स्वामी दयानन्द के लिए कौन पर्व उद्बोधक सिद्ध हुआ?

(A) दुर्गापूजा

(B) दीपावली

(C) रामनवमी

(D) शिवरात्रि

Ans – (D)

PDFSARTHI.COM

35. डी०ए० बी० विद्यालय की स्थापना किसने की?

(A) स्वामी विरंजानन्द ने

(B) स्वामी विवेकानन्द ने

(C) राजा राममोहन राय ने

(D) स्वामी दयानन्द के अनुयायिक

Ans – (D)

36. मूल शंकर को विरजानन्द के दर्शन कहाँ हुए?

(A) मथुरा में

(B) वृन्दावन में

(C) वाराणसी में

(D) प्रयाग में

Ans – (A)

37. मूल शंकर को मूर्ति पूजा के प्रति अनास्था होने के दूसरे वर्ष में किसका निधन हो गया?

(A) मूलशंकर की माता का

(B) मूलशंकर की बहन का

(C) मूलशंकर की पिता का

(D) मूलशंकर की पत्नी का

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

10. मन्दाकिनीवर्णनम् (मन्दाकिनी का वर्णन)

प्रस्तुतः पाठः वाल्मीकीयरामायणस्य अयोध्याकाण्डस्य पंचनवति (95) तमात् सर्गात् संकलितः। वनवासप्रसंगेः रामः सीतया लक्ष्मेणेन च सह चित्रकूटं प्राप्नोति।

प्रस्तुत पाठ वाल्मीकी रामायण के अयोध्या काण्ड के पंचानवें सर्ग से संकलित किया गया है। वनवास प्रसंग में राम-सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकुट पहुँचते हैं।

तत्रस्थितां मन्दाकिनीनदीं वर्णयन् सीतां सम्बोधयति। इयं नदी प्राकृतिकैरुपादानैः संवलिता चित्तं हरति। अस्याः वर्णनं कालिदासो रघुवंशकाव्येऽपि (त्रयोदशसर्गे) करोति। अनुष्टुप्छनदसि महर्षिः वाल्मीकिः मन्दाकिनीवर्णने प्रकृतेः यथार्थं चित्रणं करोति।

यहाँ स्थित मन्दाकनी नदी का वर्णन करते हुए सीता को कहते हैं। यह नदी प्राकृतिक संपदाओं से घिरी होने के कारण मन को आकर्षित करती है। इसका वर्णन कालीदास ने रघुवंश काव्य में भी ;तेरहवें सर्ग में द्ध किये है। अनुष्टुप छन्द में महर्षि वाल्मीकी मन्दाकिनी वर्णन में प्रकृति का यथार्थ चित्रण करते हैं।

विचित्रपुलिनां रम्यां हंससारससेविताम्।
कुसुमैरुपसंपन्नां पश्य मन्दाकिनीं नदीम्।।1।।

हे सीते! फुलों से परिपुर्ण हंस-सारस से सेवित और रंग-विरंगी तटों वाली सुंदर मन्दाकनी नदी को देखों।

नानाविधैस्तीररुहैर्वृतां पुष्पफलद्रुमैः।
राजन्तीं राजराजस्य नलिनीमिव सर्वतः।।2।।

हे सीते! अनेक प्रकार के फल-फुलों के वृक्षों से घिरा हुआ किनारा राजाओं के सरोवर के समान सभी जगह प्रतीत हो रहा है।

मृगयूथनिपीतानि कलुषाम्भांसि साम्प्रतम्।
तीर्थानि रमणीयानि रतिं संजनयन्ति मे।।3।।

हे सीते! अभी हरिणों के समुह द्वारा पीए गए जल गंदे हो गये जो मन को मोहित करने वाले तीर्थों के प्रति मेरे मन को जगा रहे हैं। अर्थात् यहाँ की सुंदरता, पवित्रता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर मेरे मन में प्रेम रस का संचार करने लगे हैं।

जटाजिनधराः काले वल्कलोत्तरवाससः।
ऋषयस्त्ववगाहन्ते नदीं मन्दाकिनीं प्रिये।।4।।

PDFSARTHI.COM

हे प्रिय सीते! जटा और मृगचर्म धारण करने वाले और पेड़ की छाल को वस्त्ररूप में धारण करने वाले ऋषिगण तो इसी मंदाकनी नदी में स्नान करते हैं।

आदित्यमुपतिष्ठनते नियमादूर्ध्वबाहवः।

एते परे विशालाक्षि मुनयः संशितव्रताः।।5।।

हे विशाल नयन वाली सीते! ये श्रेष्ठ तथा प्रशंसनीय व्रत रखने वाले मुनीलोग अपनी बाँहों को ऊपर किये हुए सुर्य की उपासना में लगे हैं।

मारुतोद्धूतशिखरैः प्रनृत्त इव पर्वतः।

पादपैः पुष्पपत्राणि सृजद्भिरभितो नदीम्।।6।।

हे सीते! नदी के चारों ओर फुल एवं पत्तों से युक्त एवं हवा में चलायमान शिखर से पर्वत झुमते हुए जैसे लग रहे हैं।

क्वचिन्मणिनिकाशोदां क्वचित्पुलिनशालिनीम्।

क्वचित्सिद्धजनाकीर्णां पश्य मन्दाकिनीं नदीम्।।7।।

हे सीते! मणि जैसे निर्मल जलवाली मन्दाकनी को देखो-जिसकी कहीं तटें सजी-धजी हैं तो कहीं ऋषि-मुनियों से भरी हुई हैं।

निर्धूतान् वायुना पश्य विततान् पुष्पसंचयान्।

पोप्लूयमानानपरान्पश्य त्वं जलमध्यगान्।।8।।

हे सीते! वायु द्वारा उड़ाये गये फुल समुहों को देखो और दुसरी तरफ जल के बीच में तैरते हुए फुलों के ढ़ेरों को देखो।

तांश्चातिवल्गुवचसो रथांगह्वयना द्विजाः।

अधिरोहन्ति कल्याणि निष्कूजन्तः शुभा गिरः।।9।।

हे कल्याणी! अत्यन्त मीठी वाणी वाला चकवा-चकई पक्षी को देखो जो मधुर आवाज से मन्दाकनी की शोभा को बढ़ा रहे हैं।

दर्शनं चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने।

अधिकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात्।।10।।

हे शोभने! यहाँ चित्रकुट और मंदाकनी के दृश्यों का दर्शन जो हो रहा है। यह दृश्य तुम्हारे द्वारा किया गया अन्य दृश्यों के दर्शन से अधिक सुंदर माना जायेगा।

PDFSARTHI.COM

1.मंदाकिनी की शोभा का वर्णन किस रूप में किया गया है?

उत्तर ⇒ वनवास काल में जब राम सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट जाते हैं तब मंदाकिनी की प्राकृतिक सुषमा से प्रभावित हो जाते हैं। वे सीता से कहते हैं कि यह नदी प्राकृतिक उपादानों से संवलित चित्त को आकर्षित कर रही है। रंग-बिरंगी छटा वाली यह, हंसों द्वारा सुशोभित है। ऋषिगण इसके निर्मल जल में स्नान कर रहे हैं। ऊँची कछारों वाली यह नदी अत्यन्त रमणीय लगती है।

2. मंदाकिनी का वर्णन करने में 'राम' सीता को किन-किन रूपों में संबोधित करते हैं?

उत्तर ⇒ परमपावनी गंगा' अनायास मन को आकर्षित करनेवाली है। निर्मल जल, रंग-बिरंगी छटा, ऊँची कछारें आदि राम को आह्लादित करती रहती हैं। इसकी शोभा से वशीभूत 'राम' सीता को इसकी सुन्दरता का निरीक्षण करने के लिए अपने भाव प्रकट करते हैं; हे सीते । प्रिये । विशालाक्षि ! शोभने ! आदि संबोधन से संबोधित करते हैं।

3. मन्दाकिनी-वर्णनम् पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर ⇒ वाल्मीकीय रामायण के अयोध्याकाण्ड की सर्ग संख्या-95 से संकलित इस पाठ में चित्रकूट के निकट बहने वाली मन्दाकिनी नामक छोटी नदी का वर्णन है। इस पाठ में आदिकवि वाल्मीकि को काव्यशैली तथा वर्णनक्षमता अभिव्यक्त हुई है। श्री राम सीता को मन्दाकिनी का वर्णन सुनाते हैं ।

4. मंदाकिनीवर्णनम् से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर ⇒ मंदाकिनीवर्णनम् महर्षि वाल्मिकी-कृत रामायण के अयोध्याकांड के 95 सर्ग से संकलित है। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि प्रकृति हमारे चित्त को हर लेती है तथा इससे पर्यावरण सुरक्षित रहता है। प्रकृति की शुद्धता के प्रति हमें हमेशा ध्यान देना चाहिए।

PDFSARTHI.COM

5. मनुष्य को प्रकृति से क्यों लगाव रखना चाहिए?

उत्तर ⇒ प्रकृति ही मनुष्य को पालती है, अतएव प्रकृति को शुद्ध होना चाहिए। यहाँ महर्षि वाल्मीकि प्रकृति के यथार्थ रूप का वर्णन करके मनुष्य को लगाव रखने का संदेश देते हैं। इससे हमारा जीवन सुखमय एवं आनंदमय होगा ।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. किस छन्द में मन्दाकिनीवर्णनम् पाठ है?

(A) अलंकार

(B) अनुप्रास

(C) अनुष्टुप

(D) छन्द

Ans – (C)

2. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(A) वेदव्यास

(B) कालिदास

(C) वाल्मीकि

(D) माघ

Ans – (C)

3. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ रामायण के किस काण्ड से लिया गया है?

(A) बालकाण्ड

PDF SARTHI.COM

(B) लंकाकाण्ड

(C) अरण्यकाण्ड

(D) अयोध्याकाण्ड

Ans – (D)

4. मंदाकिनी नदी किसके तालाब के समान दिखाई पड़ रहा है?

(A) इन्द्र

(B) विष्णु

(C) कुबेर

(D) शिव

Ans – (C)

5. मन्दाकिनी नदी किस पर्वत के निकट बहती है?

(A) मंदार

(B) हिमालय

(C) चित्रकुट

(D) राजगृह

Ans – (C)

6. मन्दाकिनी नदी का किसके पीने से गंदा हो गया है?

(A) खरगोश

(B) गाय

(C) मोर

PDF SARTHI.COM

(D) हरिण

Ans – (D)

7. 'रामायण' के रचनाकार कौन है?

(A) वाल्मीकि

(B) व्यास

(C) तुलसीदास

(D) कालिदास

Ans – (A)

8. कालिदास की कौन-सी रचना है?

(A) रामायण

(B) रघुवंशम्

(C) गीतगोविंद

(D) हर्षचरित

Ans – (B)

9. राम किसको मंदाकिनी नदी दिखा रहे हैं?

(A) राधा

(B) माता

(C) सीता

(D) लक्ष्मण

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

10. वनवास प्रसंग में राम सीता लक्ष्मण के साथ कहाँ पहुँचते हैं?

(A) विचित्रकूट

(B) स्वर्णकूट

(C) चित्रकूट

(D) पर्णकुट

Ans – (C)

11. राम किसे संबोधित करते हुए 'मंदाकिनी नदी का वर्णन करते हैं?

(A) सीता

(B) लक्ष्मण

(C) केवट

(D) वाल्मीकि

Ans – (A)

12. जटा और मृगचर्म कौन धारण किये हुए है?

(A) मुनि

(B) छात्र

(C) कालिदास

(D) शिक्षक

Ans – (A)

13. सीता रामचन्द्र के कौन थी?

(A) भगिनी

PDF SARTHI.COM

(B) माता

(C) पत्नी

(D) भ्राता

Ans – (C)

14. पक्षी का पर्यायवाची क्या होता है?

(A) रवि

(B) द्विज

(C) काक

(D) मृग

Ans – (B)

15. दोनों भुजाओं को ऊपर कर कौन उपासना करते हैं?

(A) देवता

(B) मुनि लोग

(C) सैनिक

(D) सीता

Ans – (B)

16. कौन नृत्य के समान प्रतीत हो रहा है?

(A) भक्त

(B) मुनि

PDF SARTHI.COM

(C) वृक्ष

(D) पर्वत

Ans – (D)

17. रंग-बिरंगे तटों वाली कौन नदी है?

(A) गंडक

(B) यमुना

(C) मंदाकिनी

(D) सरस्वती

Ans – (C)

18. हंस- सारस से युक्त कौन-सी नदी है।

(A) मंदाकिनी

(B) गंडक

(C) कोशी

(D) यमुना

Ans – (A)

19. जल के बीच में कौन तैर रहा है?

(A) मुनि

(B) फूल

(C) पता

PDF SARTHI.COM

(D) सारस /फूल

Ans – (D)

20. कौन-सी नदी प्राकृतिक सम्पदाओं से घिरी हुई है?

(A) मंदाकिनी

(B) यमुना

(C) सरस्वती

(D) काबेरी

Ans – (A)

21. 'रघुवंश' महाकाव्य के रचनाकार कौन हैं?

(A) वाल्मीकि

(B) कालिदास

(C) तुलसीदास

(D) व्यास

Ans – (B)

22. विशाल नेत्रों वाली कौन है?

(A) श्रीराम

(B) केवट

(C) सीता

(D) राधा

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

23. सुनिलोग किनकी उपासना करते हैं?

(A) शिव

(B) सूर्य

(C) राम

(D) राधा

Ans – (B)

24. कौन नदी को दोनों ओर से घेरे है?

(A) घरा

(B) नगर

(C) पर्वत

(D) वृक्ष

Ans – (C)

25. कौन सब नदी में स्नान करते हैं?

(A) भक्त

(B) दुर्जन

(C) सज्जन

(D) ऋषि

Ans – (D)

26. रामचन्द्र जी ने 'शोभन' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

(A) लक्ष्मण के लिए

PDF SARTHI.COM

(B) तपस्वियों के लिए

(C) गंगा के लिए

(D) सीताजी के लिए

Ans – (D)

27. जटाजिनधरा वल्कलीनरवाससः ।'इस श्लोकांश के रिक्त स्थान में कौन-सा पद होगा?

(A) भाले

(B) बाले

(C) काले

(D) ताले

Ans – (C)

28. कालिदास ने किस नदी का वर्णन किया है?

(A) बूढ़ी गंगा

(B) मन्दाकिनी

(C) यमुना

(D) कावेरी

Ans – (B)

29. वाल्मीकि रामायण से कौन-सा पाठ संकलित है?

(A) विश्वशांतिः

(B) कर्णस्य दानवीरता

PDF SARTHI.COM

(C) नीतिश्लोकाः

(D) मन्दाकिनी वर्णनम्

Ans – (D)

30. 'मन्दाकिनी वर्णनम्' पाठ में किस नदी का वर्णन है?

(A) गङ्गा

(B) यमुना

(C) सरस्वती

(D) सरयु

Ans – (A)

31. चित्रकूट स्थित गङ्गा का वर्णन किस पाठ में है?

(A) कर्णस्य दानवीरता

(B) व्याघ्रपथिक-कथा

(C) मन्दाकिनी वर्णनम्

(D) भारतमहिमा

Ans – (C)

32. रमणीयानि तीर्थानि किं रंजनयन्ति ? रमणीय तीर्थ क्या उत्पन्न कर रहे हैं?

(A) रति को

(B) गति को

(C) मति को

(D) भक्ति को

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

11. व्याघ्रपथिककथा (बाघ और पथिक की कहानी)

अयं पाठः नारायणपण्डितरचितस्य हितोपदेशनामकस्य नीतिकथाग्रन्थस्य मित्रलाभनामकखण्डात् संकलितः।

यह पाठ नारायण पंडित द्वारा रचित हितोपदेश नामक नीतिकथा ग्रन्थ के मित्रलाभ नामक खण्ड से संकलित है।

हितोपदेशे बालकानां मनोरंजनाय नीतिशिक्षणाय च नानाकथाः पशुपक्षिसम्बद्धाः श्राविताः।

हितोपदेश में बालकों के मनोरंजन के लिए और नीति-शिक्षा के लिए अनेक कहानियाँ पशु-पक्षी से सम्बन्धित हैं।

प्रस्तुत कथायां लोभस्य दुष्परिणामः प्रकटितः।

प्रस्तुत कथा में लोभ के दुष्परिणाम प्रकट किया गया है।

पशुपक्षिकथानां मूल्यं मानवानां शिक्षार्थं प्रभूतं भवति इति एतादृशीभिः कथाभिः ज्ञायते।

पशु-पक्षी के कहानी का महत्व मानवों की शिक्षा हेतु अचूक होता है। कहानीयों से ज्ञान होता है।

और पथिक की कहानी)

कश्चित् वृद्धव्याघ्रः स्नातः कुशहस्तः सरस्तीरे ब्रुते- 'भो भोः पान्थाः। इदं सुवर्णकंकणं गृह्यताम्।'

कोई बूढ़ा बाघ स्नान कर कुश हाथ में लेकर तालाब के किनारे बोल रहा था- '' वो राही, वो राही ! यह सोने का कंगन ग्रहण करो।''

ततो लोभाकृष्टेन केनचित्पान्थेनालोचितम्- भाग्येनैतत्संभवति। किंत्वस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृŸार्न विधेया। यतः –

इसके बाद लोभ से आकृष्ट होकर किसी राही के द्वारा सोचा गया- भाग्य से ऐसा मिलता है। किन्तु यहाँ आत्म संदेह है। आत्म संदेह की स्थिति में कार्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि-

अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा।
यत्रास्ते विषसंसर्गोऽमृतं तदपि मृत्यवे।।

जहाँ अमंगल की आशंका होती है, वहाँ जाने से व्यक्ति को परहेज करना चाहिए। लाभ वहीं होता है जहाँ अनुकूल परिवेश होता है। क्योंकि विषयुक्त अमृत पीने से भी मृत्यु प्राप्त होती है।

किंतु सर्वत्रार्थार्जने प्रवृतिः संदेह एव। तन्निरूपयामि तावत्।' प्रकाशं ब्रुते- 'कुत्र तव कंकणम् ?'

लेकिन हर जगह धन प्राप्ति की इच्छा करना अच्छा नहीं होता । इसलिए तब तक विचार लेता हुँ। सुनकर कहता है- 'कहाँ है तुम्हारा कंगन?'

व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति।

बाघ हाथ फेलाकर दिखा देता है।

PDFSARTHI.COM

पन्थोऽवदत्- 'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः ?

पथिक ने पूछा- 'तुम हिंसक पर कैसे विश्वास किया जाए ?'

व्याघ्र उवाच- 'शृणु रे पान्थ ! प्रागेव यौवनदशायामतिदुर्वृत्त आसम्।

बाघ ने कहा- 'हे पथिक सुनो' पहले युवास्था में मैं अत्यंत दुराचारी था।

अनेकगोमानुषाणां वर्धान्मे पुत्रा मृता दाराश्च वंशहीनश्चाहम्।

अनेक गायों तथा मनुष्यों के मारने से मेरे पुत्र और पत्नि की मृत्यु हो गई और मैं वंशहीन हो गया।

ततः केनचिद्धार्मिकेणाहमादिष्टः – 'दानधर्मादिकं चरतु भवान्।'

इसके बाद किसी धर्मात्मा ने मुझे उपदेश दिया- '' आप दान और धर्म आदि करें।

तदुपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलितनखदन्तो कथं न विश्वासभूमिः ? मया च धर्मशास्त्राण्यधीतानि। शृणु –

उनके उपदेश से मैं इस समय स्नानशील , दानी हुँ तथा बुढ़ा और दंतविहीन हूँ, फिर कैसे विश्वासपात्र नहीं हुँ ? मेरे द्वार धर्मशास्त्र भी पढ़ा गया है। सुनो-

दरिन्द्रान्भर कौन्तेय ! मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य किमौषधैः।।

हे कुन्तीपुत्र ! गरीबों को धन दो, धनवानों को धन मत दो । रोगी को दवा की जरूरत होती है। नीरोगी को दवा की कोई जरूरत नहीं होती है।

अन्यच्च –

और दूसरी बात यह है कि-

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं विदुः ।।

दान देना चाहिए। दान उसी को देना चाहिए। जिससे कोई उपकार नहीं कराना हो, उचित जगह, उपयुक्त समय और उपयुक्त व्यक्ति को दिया हुआ दान साŸवक दान होता है।

तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकंकणं गृहाण।

तुम यहाँ तालाब में स्नानकर सोने का कंगन ले लो।

ततो यावदसौ तद्वचः प्रतीतो लोभात्सरः स्नातुं प्रविशति। तावन्महापंके निमग्नः पलायितुमक्षमः।

उसके बाद उसकी बातों पर विश्वास कर ज्योंही वह लोभ से तालाब में स्नान के लिए प्रविष्ठ हुआ त्योंहि गहरे किचड़ में डुब गया और भागने में असमर्थ हो गया।

PDFSARTHI.COM

पंके पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत् – 'अहह, महापंके पतिताऽसि। अतस्त्वामहमुत्थापयामि।'

उसको किचड़ में फंसा देखकर बाघ बोला- अरे रे, तुम गहरे किचड़ में फंस गये हों। इसलिए मैं तुमको निकाल देता हुँ ।

इत्युक्त्वा शनैः शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः स पन्थोऽचिन्तयत् –

यह कहकर धीरे-धीरे उसके निकट जाकर उस बाघ ने उस पथिक को पकड़ लिया। उस पथिक ने सोचा-

अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया।

दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना।।

जिस व्यक्ति की इन्द्रियाँ और मन अपने वश में नही हो, उसकी सारी क्रियाएँ हाथी के स्नान के समान हैं। जिस प्रकार बंध्या स्त्री का पालन पोषण बेकार है, उसी प्रकार क्रिया के बिना ज्ञान भार स्वरूप है।

इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च। अत उच्यते –

ऐसा सोचता हुआ पथिक बाघ से पकड़ा गया और खाया गया। इसलिए कहा जाता है-

कंकणस्य तु लोभेन मग्नः पंके सुदुस्तरे।

वृद्धव्याघ्रेण संप्राप्तः पथिकः स मृतो यथा।।

जिस प्रकार कंगन के लोभ में पथिक गहरे किचड़ में फँस गया तथा बूढ़े बाघ द्वारा पकड़कर मार दिया गया।

1. व्याघ्रपथिक कथा से क्या शिक्षा मिलती है ? अथवा, व्याघ्रपथिक कथा में मूल संदेश क्या है ?

उत्तर⇒ नारायण पण्डित विरचित हितोपदेश के नीतिकथाग्रन्थ के मित्रलाभखण्ड से ली गयी कथा 'व्याघ्रपण्डित' है । इस कथा में एक पथिक वृद्ध व्याघ्र द्वारा दिये गये प्रलोभन में पड़ जाता है। वृद्ध व्याघ्र हाथ में सुवर्णकंकण लेकर पथिक को अपनी ओर आकृष्ट करता है। पथिक निर्धन होने के बावजूद व्याघ्र पर विश्वास नहीं करता । तब व्याघ्र द्वारा सटीक तर्क दिये जाने पर पथिक संतुष्ट होकर कंकण ले लेना उचित समझता है। व्याघ्र द्वारा स्नान कर ग्रहण करने की बात स्वीकार कर पथिक महाकीचड़ में गिर जाता है और व्याघ्र द्वारा मारा जाता है। इस कथा में संदेश और शिक्षा यही है कि नरमक्षी प्राणियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए और अपनी किसी भी समस्या का समाधान ऐसे व्यक्ति द्वारा नजर आये तब भी उसके लोभ में नहीं फँसना चाहिए

PDFSARTHI.COM

2. व्याघ्रपथिक कथा पाठ का पाँच वाक्यों में परिचयं दें।

उत्तर⇒ यह कथा नारायणपंडित रचित प्रसिद्ध नीतिकथाग्रन्थ 'हितोपदेश' के प्रथम भाग 'मित्रलाभ' से संकलित है । इस कथा में लोभाविष्ट व्यक्ति की दुर्दशा का निरूपण है । आज के समाज में छल-छद्म का वातावरण विद्यमान है जहाँ अल्प वस्तु के लोभ से आकृष्ट होकर लोग अपने प्राण और सम्मान से वंचित हो जाते हैं। यह उपदेश इस कथा से मिलता है कि वंचकों के चक्कर में न पड़ें।

3. वृद्ध बाघ ने पथिकों को फंसाने के लिए किस तरह का भेष रचाया ?

उत्तर⇒ वृद्ध बाघ ने पथिकों को फंसाने के लिए एक धार्मिक का भेष रचाया । उसने स्नान कर और हाथ में कुश लेकर तालाब के किनारे पथिकों से बात कर उन्हें दानस्वरूप सोने का कंगन पाने का लालच दिया ।

4. पथिक वृद्ध बाघ की बातों में क्यों आ गया ?

उत्तर⇒ पथिक ने सोने के कंगन की बात सुनकर सोचा कि ऐसा भाग्य से ही मिल सकता है, किन्तु जिस कार्य में खतरा हो उसे नहीं करना चाहिए। फिर लोभवश उसने सोचा कि धन कमाने के कार्य में खतरा तो होता ही है। इस तरह वह लोभ से वशीभूत होकर बाघ की बातों में आ गया।

5. वृद्ध बाघ पथिक को पकड़ने में कैसे सफल हुआ था ? अथवा, बाघ ने पथिक को पकड़ने के लिए क्या चाल चली ?

उत्तर⇒ वृद्ध बाघ ने एक धार्मिक का भेष रचकर तालाब के किनारे पथिकों को सोने का कंगन लेने के लिए कहा। उस तालाब में अधिकाधिक कीचड़ था। एक लोभी पथिक उसकी बातों में आ गया। बाघ ने लोभी पथिक को स्वर्ण कंगन लेने से पहले तालाब में स्नान करने के लिए कहा। उस बाघ के बात पर विश्वास कर जब पथिक तालाब में घूसा, वह अधिकाधिक कीचड़ में धंस गया और बाघ ने उसे पकड़ लिया।

PDFSARTHI.COM

6. पथिक को फंसाने के लिए वृद्ध बाघ ने क्या तर्क दिया ?

उत्तर⇒ पथिक लोभी तथा चालाक था। उसे फंसाने के लिए वृद्ध बाघ ने कहा कि मैं युवावस्था में अति हिंसक था। अनेक गायों और मनुष्यों का वध किया करता था। परिणामस्वरूप मेरे पत्र और पत्नी मर गए और मैं अब वंशहीन हैं। किसी धार्मिक व्यक्ति का उपदेश का पालन कर अब मैं स्वच्छ हृदयवाला, दानी और गले हुए नख-दंतवाला वृद्ध हूँ। इसलिए मुझपर विश्वास किया जा सकता है ।

7. धार्मिक व्यक्ति ने वृद्ध बाप को क्या उपदेश दिया ?

उत्तर⇒ वद्ध बाघ अतिदराचारी था। यवावस्था में अनेक गायों और मनष्यों के वध करने के पाप के कारण वह नि:संतान और पत्नीविहीन हो गया था। तब एक धार्मिक व्यक्ति ने पापमुक्त होने के लिए बाघ को उपदेश दिया कि आप दान-पुण्य करें।

8.नारायण पंडित रचित व्याघ्रपथिककथा पाठ का मल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर⇒ व्याघ्रपथिककथा का मूल उद्देश्य यह है कि हिंसक जीव अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता। इस कथा के द्वारा नारायणपंडित हमें यह शिक्षा देते हैं कि दुष्टों की बातों पर लोभ में आकर विश्वास नहीं करना चाहिए । सोच-समझकर ही काम करना चाहिए। इस कथा का उद्देश्य मनोरंजन के साथ व्यावहारिक ज्ञान देना है।

9.'व्याघ्र-पथिक कथा को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर⇒ यह मेरा है वह दूसरों का है अर्थात् यह मेरा परिवार है वह दूसरे का परिवार है, ऐसा संकुचित बुद्धिवाले कहते हैं, किन्तु उदार विचार वाला पुरुष के लिए तो समस्त संसार ही अपना कुटुम्ब है। यह भारत की नीति है और इस नीति से आज संसार में शांति स्थापित किया जा सकता है।

PDFSARTHI.COM

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'व्याघ्र पथिक कथा' पाठ के रचयिता कौन हैं।

(A) विष्णु शर्मा

(B) नारायण पण्डित

(C) दण्डी

(D) बाणभट्ट

Ans – (B)

2. 'व्याघ्रपथिककथा' पाठ कहाँ से लिया गया है।

(A) पंचतंत्र

(B) हितोपदेश

(C) भारत महिमा

(D) अलसकथा

Ans – (B)

3. "दरिद्रान्भर कौन्तेय! मा नीरुजस्य किमौषधे: "-पद्य किस पाठ से संकलित है?

(A) व्याघ्र पथिक कथा

(B) कर्मवीर कथा

(C) शास्त्रकारा:

(D) विश्वशान्ति:

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

4. 'हितोपदेश' के रचयिता कौन हैं?

(A) नारायण पण्डित

(B) विष्णुशर्मा

(C) चाणक्य

(D) विद्यापति

Ans – (A)

5. 'हितोपदेश' में कहानियाँ किससे संबंधित है?

(A) मानव

(B) दानव

(C) देवता

(D) पशु-पक्षी

Ans (D)

6. अनिष्टादिष्टलाभेऽपि ..... तदपि मृत्यवे ।। यह श्लोक कहाँ से लिया गया है?

(A) भारत महिमा

(B) व्याघ्रपथिक कथा

(C) नीतिश्लोक

(D) विदूर नीति

Ans – (B)

7. बाघ हाथ फैलाकर क्या दिखाता है?

(A) कंगन

PDF SARTHI.COM

(B) रुपया

(C) कलम

(D) धन

Ans – (A)

8. "सोने का कंगन ग्रहण करो!" ऐसा कौन बोल रहा था ?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) पशु

(D) गाय

Ans – (A)

9. कौन कीचड़ में फँस गया?

(A) बाघ

(B) सिंह

(C) साँप

(D) पथिक

Ans – (D)

10. बूढ़ा बाघ क्या देना चाहता था?

(A) चाँदी का कंगन

(B) साइकिल

PDF SARTHI.COM

(C) सुवर्णकंगन

(D) रुपया

Ans – (C)

11. पथिक कहाँ फँस गया?

(A) सरोवर में

(B) नदी में

(C) कुआँ में

(D) कीचड़ में

Ans – (D)

12. पथिक किसके द्वारा पकड़ा और खाया गया?

(A) बाघ

(C) मीन

(B) सिंह

(D) सर्प

Ans – (A)

13. कौन स्नानकर हाथ में कुश लेकर सरोवर के किनारे बोल रहा था?

(A) भालु

(B) बाघ

(C) मृग

PDF SARTHI.COM

(D) पथिक

Ans – (B)

14. मैं वंशहीन हूँ" किसने कहा?

(A) पथिक

(B) राजा

(C) बाघ

(D) सर्प

Ans – (C)

15. किसका भरण-पोषण व्यर्थ है?

(A) विधवा

(B) बाघ

(C) पथिक

(D) हाथी

Ans – (A)

16. ..... भारः क्रिया बिना ।।

(A) दानम्

(B) ज्ञानम्

(C) ग्रंथ

(D) नृत्यम्

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

17. भाग्य से ही संभव है!" ऐसा किसने सोचा?

(A) पत्नी

(B) माता

(C) पिता

(D) पथिक

Ans – (B)

18. विष के संपर्क से अमृत किसका कारण बन जाता है?

(A) दोष

(B) गुण

(C) जीवन

(D) मृत्यु

Ans – (D)

19. युवावस्था में दुराचारी कौन था?

(A) मानव

(B) देवता

(C) बाघ

(D) पथिक

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

20. दान किसे देना चाहिए?

(A) राजा

(B) मंत्री

(C) बाघ

(D) गरीब

Ans – (D)

21. किसे धन नहीं देना चाहिए?

(A) धनिक

(B) गरीब

(C) मंत्री

(D) किसान

Ans – (A)

22. दवा किसका मित्र है?

(A) डाक्टर

(C) बाघ

(B) रोगी

(D) पथिक

Ans – (B)

23. क्रिया के बिना क्या बोझ होता है?

PDF SARTHI.COM

(A) विवेक

(B) शास्त्र

(C) शील

(D) ज्ञान

Ans – (D)

24. किसके बिना ज्ञान बोझ के समान है?

(A) क्रिया

(B) ग्रंथ

(C) पुस्तक

(D) खेल

Ans – (A)

25. अविश्वासी पात्र पर विश्वास करने से क्या होता है?

(A) लाभ

(B) हानि

(C) ज्ञानी

(D) मूर्ख

Ans – (B)

26. 'दानधर्मादिकं चरतु भवान्।' बाघ को यह उपदेश किसने दिया?

(A) पथिक

PDF SARTHI.COM

(B) धार्मिक

(C) विद्वान्

(D) ऋषि

Ans – (B)

27. बूढ़े बाघ के हाथ में क्या था?

(A) सोने के कंगन

(B) चाँदी का कंगन

(C) ताँबे का कंगन

(D) लकड़ी के कंगन

Ans – (A)

28. 'व्याघ्रपथिक कथा' पाठ में किसके दुष्परिणाम का वर्णन किया गया है?

(A) क्रोध

(C) मोह

(B) लोभ

(D) काम

Ans – (B)

29. 'इदं सुवर्ण कङ्कणं गृह्यताम्!' किसने कहा?

(A) पथिक

(C) बाघ

PDF SARTHI.COM

(B) कथाकार

(D) दानी

Ans – (C)

30. 'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः?' किसकी उक्ति है?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) धार्मिक

(D) लेखक

Ans – (B)

31. 'व्याघ्र - पथिक कथा' पाठ में किसके लिए कौन्तेय शब्द का प्रयोग हुआ है?

(A) पथिक

(B) बाघ

(C) अर्जुन

(D) युधिष्ठिर

Ans – (B)

32. 'अहह, महापंके पतितोऽसि।' किसने कहा?

(A) बाघ

(B) पथिक

(C) धार्मिक

PDF SARTHI.COM

(D) साधु

Ans – (A)

33. पथिक स्नान करने कहाँ गया?

(A) तालाब

(B) नदी

(C) झरना

(D) समुद्र

Ans – (A)

34. 'व्याघ्रपथिक-कथा' हितोपदेश के किस भाग से संकलित है?

(A) सुहृद् भेद

(C) संधि

(B) विग्रह

(D) मित्रलाभ

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

12. कर्णस्य दानवीरता (कर्ण की दानवीरता)

अयं पाठः भासरचितस्य कर्णभारनामकस्य रूपकस्य भागविशेषः।

यह पाठ 'भास' रचित कर्ण भार नामक नाटक का भाग विशेष है।

अस्य रूपकस्य कथानकं महाभारतात् गृहीतम्।

इस नाटक की कहानी महाभारत से ग्रहण किया गया है।

महाभारतयुद्धे कुन्तीपुत्रः कर्णः कौरवपक्षतः युद्धं करोति।

महाभारत युद्ध में कुन्तीपुत्र कर्ण कौरव के पक्ष से युद्ध करते हैं।

कर्णस्य शरीरेण संबद्ध कवचं कुण्डले च तस्य रक्षके स्तः।

कर्ण के शरीर में स्थित कवच और कुण्डल से वह रक्षित था।

यावत् कवचं कुण्डले च कर्णस्य शरीरे वर्तेते तावत् न कोऽपि कर्णं हन्तुं प्रभवति।

जब तक कवच और कुण्डल कर्ण के शरीर में है। तबतक कोई भी कर्ण को नहीं मार सकता है।

अतएव अर्जुनस्य सहायतार्थम् इन्द्रः छलपूर्वकं कर्णस्य दानवीरस्य शरीरात् कवचं कुण्डले च गृह्णाति।

इसलिए अर्जुण की सहायता के लिए इन्द्र छलपुर्वक दानवीर कर्ण के शरीर से कवच और कुण्डल लेते हैं।

कर्णः समोदम् अङ्गभूतं कवचं कुण्डले च ददाति।

कर्ण खुशी पूर्वक अंग में स्थित कवच और कुण्डल दे देता है।

भासस्य त्रयोदश नाटकानि लभ्यन्ते।

भास के तेरह नाटक मिले हैं।

तेषु कर्णभारम् अतिसरलम् अभिनेयं च वर्तते।

उनमे कर्णभारम् अति सरल अभिनय है।

(ततः प्रविशति ब्राह्मणरूपेण शक्रः)

(इसके बाद प्रवेश करता है ब्राह्मण रूप में इन्द्र)

शक्रः- भो मेघाः, सूर्येणैव निवर्त्य गच्छन्तु भवन्तः। (कर्णमुपगम्य) भोः कर्ण ! महत्तरां भिक्षां याचे।

इन्द्र- अरे मेघों ! सुर्य से कहो आप जाएँ। (कर्ण के समीप जाकर) बहुत बड़ी भिक्षा माँग रहा हुँ।

कर्णः- दृढं प्रीतोऽस्मि भगवन् ! कर्णो भवन्तमहमेष नमस्करोमि।

कर्ण- मैं खुब प्रसन्न हुँ। कर्ण आपको प्रणाम करता है।

शक्रः- (आत्मगतम्) किं नु खलु मया वक्तव्यं, यदि दीर्घायुर्भवेति वक्ष्ये दीर्घायुर्भविष्यति। यदि न वक्ष्ये मूढ़ इति मां परिभवति। तस्मादुभयं परिहृत्य किं नु खलु वक्ष्यामि। भवतु दृष्टम्। (प्रकाशम्) भो कर्ण ! सूर्य इव, चन्द्र इव, हिमवान् इव, सागर इव तिष्ठतु ते यशः।

इन्द्र- (मन में) क्या इस व्यक्ति के लिए बोला जाए, यदि दिर्घायु हो बोलता हुँ तो दिर्घायु हो जायेगा, यदि ऐसा नहीं बालता हुँ तो मुझको मुर्ख समझेगा। इसलिए दोनों को छोड़कर क्यों न ऐसा बोलूँ आप प्रसन्न हों। ;खुलकरद्ध

PDFSARTHI.COM

ओ कर्ण ! सुर्य की तरह, चन्द्रमा की तरह, हिमालय की तरह, समुद्र की तरह तुम्हारा यश कायम रहे।

कर्णः- भगवन् ! किं न वक्तव्यं दीर्घायुर्भवेति। अथवा एतदेव शोभनम्।

कर्ण- क्या दिर्घायु हो ऐसा नहीं बोलना चाहिए। अथवा यहीं ठीक है

कुतः-

क्योंकि-

धर्मो हि यत्नैः पुरुषेण साध्यो भुजङ्गजिह्वाचपला नृपश्रियः।

तस्मात्प्रजापालनमात्रबुद्ध्या हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते ।।

भगवन्, किमिच्छसि! किमहं ददामि।

व्यक्ति को धर्म की रक्षा अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि राजा का एश्वर्य साँप की जीभ की तरह चंचल होता है। इसलिए प्रजापालन करने वाले राजा प्राण देकर भी प्रजा की रक्षा करते हैं तथा यश धारण करते हैं। अतः कर्ण के कहने का भाव है कि राजा अपने सुख के लिए नहीं जते हैं, प्रजा की रक्षा करने के लिए देह धारण करते हैं। धन या एश्वर्य तो आते जाते हैं, किन्तु यश तथा सुकर्म चिर काल तक कायम रहते हैं।

भगवन् ! आप क्या चाहते हैं ? मैं क्या दूँ ?

शक्रः- महत्तरां भिक्षां याचे।

इन्द्र- बहुत बड़ी भिक्षा माँगता हूँ।

कर्णः- महत्तरां भिक्षां भवते प्रदास्ये। सालङ्कारं गोसहस्रं ददामि।

कर्ण- मैं आपको बहुत बड़ी भिक्षा दूँगा। आभूषण सहित एक हजार गाय देता हूँ।

शक्रः- गोसहस्रमिति। मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि। नेच्छामि कर्ण ! नेच्छामि।

इन्द्र- एक हजार गाय। मैं थोड़ी दुध पीऊँगा। नहीं चाहिए कर्ण, नहीं चाहता हूँ।

कर्णः- किं नेच्छति भवान्। इदमपि श्रूयताम्। बहुसहस्रं वाजिनां ते ददामि।

कर्ण- आप क्या चाहते हैं ? यहीं भी तो बताएँ। हजारों घोड़े आपको देता हूँ।

शक्रः- अश्वमिति। मुहूर्तकम् आरोहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।

इन्द्र- घोड़े ही। थोड़ी देर मैं सवारी करुँगा। नहीं चाहता हूँ कर्ण, नहीं चाहता हूँ।

कर्णः- किं नेच्छति भगवान्। अन्यदपि श्रूयताम्। वारणानामनेकं वृन्दमपि ते ददामि।

कर्ण- आप क्या चाहते हैं ? दूसरा भी सुनें ! हाथियों का अनेक समुह आपको देता हूँ।

शक्रः- गजमिति। मुहूर्तकम् आरोहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।

PDFSARTHI.COM

इन्द्र- हाथी ही। थोड़ी चढूँगा । नहीं चाहता हूँ कर्ण। नहीं चाहता हूँ।

कर्णः- किं नेच्छति भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्, अपर्याप्तं कनकं ददामि।

कर्ण- आप क्या चाहते हैं ? और भी सुनें ! जरूरत से अधिक सोना देता हूँ।

शक्रः- गृहीत्वा गच्छामि। (किंचिद् गत्वा) नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।

इन्द्र- लेकर जाता हूँ। ;थोड़ी दूर जाकरद्ध मैं नहीं चाहता हूँ कर्ण। मैं नहीं चाहता हूँ।

कर्णः- तेन हि जित्वा पृथिवीं ददामि।

कर्ण- तो जीतकर भूमि देता हूँ।

शक्रः- पृथिव्या किं करिष्यामि।

इन्द्र- भूमि लेकर क्या करुँगा ?

कर्णः- तैन ह्यग्निष्टोमफलं ददामि ।

कर्ण- तो अग्निष्टोम फल देता हूँ।

शक्रः- अग्निष्टोमफलेन किं कार्यम् ।

इन्द्र- अग्निष्टोम फल लेकर क्या करुँगा।

कर्णः- तेन हि मच्छिरो ददामि।

कर्ण- तो मैं अपना सिर देता हूँ।

शक्रः- अविहा अविहा।

इन्द्र- नही-नहीं, ऐसा मत करो।

कर्णः- न भेतव्यं न भेतव्यम्। प्रसीदतु भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्।

कर्ण- डरो नहीं, डरो नहीं, आप प्रसन्न हो जाएँ। और भी सुनें।

अङ्गे सहैव जनितं मम देहरक्षा
देवासुरैरपि न भेद्यमिदं सहस्रैः ।
देयं तथापि कवचं सह कुण्डलाभ्यां
प्रीत्या मया भगवते रुचितं यदि स्यात् ॥

कर्ण ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र से कहता है कि मेरा जन्म इन कवच कुण्डलों के साथ हुआ है। यह कवच देवता और असुरों के द्वारा भेद नही है, फिर भी यदि आपको यहीं कवच और कुण्डल लेने की इच्छा है तो मैं प्रसन्नता पूर्वक देता हूँ। अर्थात् कर्ण अपने दानवीरता की रक्षा के लिए कवच कुण्डल देने को तैयार हो जाता है।

PDFSARTHI.COM

शक्र – (सहर्षम्) ददातु, ददातु।

इन्द्र- (प्रसन्नतापूर्वक) दे दीजिए।

कर्णः-(आत्मगतम्) एष एवास्य कामः। किं नु खल्वनेककपटबुद्धेः कृष्णस्योपायः। सोऽपि भवतु।

धिगयुक्तमनुशाचितम्। नास्ति संशयः। (प्रकाशम्) गृह्यताम्।

कर्ण- (मन-ही-मन) यहीं इसकी इच्छा है। निश्चय ही कपटबुद्धिवाले श्रीकृष्ण की योजना है। वह भी हो। धिक्कार है अनुचित विचार करना। ;प्रकट रुप सुनाकरद्ध ले लीजिए।

शल्यः- अङ्गराज ! न दातव्यं न दातव्यम्।

शल्यराज- हे अंगराज ! मत दीजिए, मत दीजिए।

कर्णः- शल्यराज ! अलमलं वारयितुम् । पश्य –

कर्ण- मत रोको ! मत रोको । देखो-

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्

सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः।

जलं जलस्थानगतं च शुष्यति ।

हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति।

तस्मात् गृह्यताम् (निकृत्य ददाति)।

समय बीतने पर शिक्षा नष्ट हो जाती है। मजबुत जड़ो वाले वृक्ष गीर जाते हैं। नदी तालाब के जल सुख जाते हैं। लेकिन दिया गया दान और दी गई आहूति हमेशा स्थिर रहती है। अर्थात् हवन करने तथा दान करने से प्राप्त होनेवाले पुण्य हमेशा अमर रहता है।

ग्रहण कीजिए। (निकाल कर दे देता है।)

1.कर्ण की दानवीरता कैसे प्रकट होती है ? उत्तर दें।

उत्तर⇒ कर्ण ब्राह्मवेशधारी इन्द्र को विनम्रतापूर्वक सर्वप्रथम भौतिक वस्तुएँ प्रदान करना चाहते यथा-गौ, हाथी, पृथ्वी । यहाँ तक कि अपने अग्रिष्टों फल भी देना चाहते हैं और अन्ततः अपना सिर तक अर्पित करने के लिए उद्यत हो उठते हैं। परन्तु ब्राह्मणवेशधारी शक्र (इन्द्र) तो दृढ़ संकल्पित कुछ अन्य वस्तु के प्रति थे । कर्ण उनकी मनोदशा को

PDFSARTHI.COM

समझकर अपनी रक्षार्थ शरीर से जुड़े कवच-कुण्डल को दान दे देते हैं। इतना बड़ा दान कर्ण को सम्पूर्ण ब्राह्मण्ड का दानवीर सिद्ध करता है।

2.कर्ण की दानवीरता का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर⇒ कर्ण सूर्यपुत्र है। जन्म से ही उसे कवच और कुण्डल प्राप्त है। जबतक कर्ण के शरीर में कवच कुण्डल है तब तक वह अजेय है । उसे कोई मार नहीं सकता है। कर्ण महाभारत युद्ध में कौरवों के पक्ष में युद्ध करता है। अर्जुन इन्द्रपुत्र हैं। इन्द्र अपने पुत्र हेतु छलपूर्वक कर्ण से कवच और कुण्डल माँगने जाते हैं। दानवीर कर्ण सूर्योपासना के समय याचक को निराश नहीं लौटाता है। इन्द्र इसका लाभ उठाकर दान में कवच, कुण्डल माँग लेते हैं। सब कुछ जानते हुए भी इन्द्र को कर्ण अपना कवच कुंडल दे देता है।

3. कर्णस्य दानवीरता पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर⇒ यह पाठ संस्कृत के प्रथम नाटककार भास द्वारा रचित कर्णभार नामक एकांकी रूपक से संकलित किया गया है । इसमें महाभारत के प्रसिद्ध पात्र कर्ण की दानवीरता दिखाई गयी है। इन्द्र कर्ण से छलपूर्वक उनके रक्षक कवचकुण्डल को मांग लेते हैं और कर्ण उन्हें दे देता है। कर्ण बिहार के अङ्गराज्य (मुंगेर तथा भागलपुर) का शासक था। इसमें संदेश है कि दान करते हुए मांगने वाले की पृष्ठभूमि जान लेनी चाहिए, अन्यथा परोपकार विनाशक भी हो जाता है।

4. कर्ण कौन था? उसकी क्या विशेषता थी ?

उत्तर⇒ कर्ण कुंती का पुत्र था, परंतु महाभारत के युद्ध में उसने कौरव पक्ष से लड़ाई की। उसके शरीर पर जन्मजात कवच और कुंडल था । जब तक कवच और कुंडल उसके शरीर से अलग नहीं होता, तब तक कर्ण की मृत्यु असंभव थी ।

PDF SARTHI.COM

5. इन्द्र ने कर्ण से कौन-सी बड़ी भिक्षा माँगी, और क्यों?

उत्तर⇒ इन्द्र ने कर्ण से बड़ी भिक्षा के रूप में कवच और कुंडल माँगी । अर्जुन की सहायता करने के लिए इन्द्र ने कर्ण से छलपूर्वक कवच और कुंडल माँगे, क्योंकि जब तक कवच और कुंडल उसके शरीर पर विद्यमान रहता, तब तक कर्ण की मृत्यु नहीं हो सकती थी। चूँकि कर्ण कौरव पक्ष से युद्ध कर रहे थे, अतः पांडवों को युद्ध में जिताने के लिए कर्ण से इन्द्र ने कवच और कुंडल की याचना की।

6. कर्ण ने कवच और कंडल देने के पूर्व इन्द्र से किन-किन चीजों को दानस्वरूप लेने के लिए आग्रह किया?

उत्तर⇒ इन्द्र कर्ण से बड़ी भिक्षा चाहते थे। कर्ण समझ नहीं सका कि इन्द्र भिक्षा के रूप में उनका कवच और कंडल चाहते हैं। इसलिए कवच और कुंडल देने से पर्व कर्ण ने इन्द्र से अनरोध किया कि वे सहस्त्र गाएँ, बहुसहस्त्र घोड़े, अपर्याप्त स्वर्ण मुद्राएँ और पृथ्वी (भूमि) ग्रहण करें।

7. कर्ण की दानवीरता क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर⇒ कर्ण महान दानवीर के रूप में प्रसिद्ध है, क्योंकि उसने अभेद्य कवच और कुंडल भी इन्द्र को दे दिया । कर्ण जानता था कि जब तक उसके पास कवच और कुंडल विद्यमान है, तब तक उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता । कर्ण को यह आभास हो गया था कि कृष्ण ने इन्द्र के माध्यम से कवच और कुंडल माँगा है। कृष्ण चाहते थे कि पाण्डव विजयी हों । यह जानते हुए भी कर्ण ने कवच और कुंडल का दान किया । इसलिए उसकी दानवीरता विश्व-प्रसिद्ध है।

8.कर्ण के प्रणाम करने पर इन्द्र ने उसे दीर्घाय होने का आशीर्वाद क्यों नहीं दिया ?

उत्तर⇒ इन्द्र जानते थे कि कर्ण को युद्ध में मरना अवश्यंभावी है । कर्ण को द दीर्घायु होने का आशीर्वाद दे देते, तो कर्ण की मृत्यु युद्ध में संभव नहीं थी। वह दीर्घायु हो जाता । कुछ नहीं बोलने पर कर्ण उन्हें मूर्ख समझता । इसलिए इन्द्र ने उसे दीर्घायु होने का आशीर्वाद न देकर सूर्य, चंद्रमा, हिमालय और समुद्र की तरह यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया।

PDFSARTHI.COM

9. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ कहाँ से उद्धत है? इसके विषय में लिखें।

उत्तर⇒ 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ भास-रचित कर्णभार नामक रूपक से उद्धृत है। इस रूपक का कथानक महाभारत से लिया गया है । महाभारत युद्ध में कुंतीपुत्र कर्ण कौरव पक्ष से युद्ध करता है। कर्ण के शरीर में स्थित जन्मजात कवच और कुंडल उसकी रक्षा करते हैं। इसलिए इन्द्र छलपूर्वक कर्ण से कवच और कुंडल माँगकर पांडवों की सहायता करते हैं।

10. भास के नाटकों की क्या विशेषता है?

उत्तर⇒ भास के तेरह नाटक हैं, जिनमें कर्णभार नाटक सबसे सरल और अभिनय-योग्य है। इनके नाटकों की विशेषता यह है कि साधारण जनता भी उनका अभिनय कर सकती है। इसके नाटकों की कथाएँ विशेष रूप से महाभारत से ली जाती है।

11. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ के आधार पर दान की महिमा का वर्णन करें।

उत्तर⇒ कर्ण जब कवच और कुंडल इन्द्र को देने लगते हैं तब शल्य उन्हें रोकते हैं । इसपर कर्ण दान की महिमा बतलाते हुए कहते हैं कि समय के परिवर्तन से शिक्षा नष्ट हो जाता है। बड़े-बड़े वृक्ष उखड़ जाते हैं, जलाशय सूख जाते हैं, परंतु दिया गया दान सदैव स्थिर रहते हैं, अर्थात दान कदापि नष्ट नहीं होता है।

12. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर⇒ 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ में कर्ण ने इन्द्र को जन्मजात कवच और कुंडल दान किया। इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दान ही मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है, क्योंकि केवल दान ही स्थिर रहता है। शिक्षा समय-परिवर्तन के साथ समाप्त हो जाती है। वृक्ष भी समय के साथ नष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं. जलाशय भी सूखकर समाप्त हो जाता है । इसलिए शरीर का मोह किए बिना दान अवश्य करना चाहिए।

PDFSARTHI.COM

13. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ के नाटककार कौन हैं? कर्ण किनका पत्र था तथा उन्होंने इन्द्र को दान में क्या दिया ?

उत्तर⇒ 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ के नाटककार 'भास' हैं। कर्ण कुन्ती का पुत्र था तथा उन्होंने इन्द्र को दान में अपना कवच और कुण्डल दिया।

14. दानवीर कर्ण ने इन्द्र को दान में क्या दिया? तीन वाक्यों में उत्तर दें।

उत्तर⇒ दानवीर कर्ण ने इन्द्र को अपना कवच और कुण्डल दान में दिया । कर्ण को ज्ञात था कि यह कवच और कुण्डल उसका प्राण-रक्षक है लेकिन दानी स्वभाव होने के कारण उसने इन्द्ररूपी याचक को खाली लौटने नहीं दिया ।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. कर्णस्य दानवीरता पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(A) भास

(B) चन्द्रगुप्त

(C) कर्ण

(D) व्यास

Ans – (A)

2. कर्णस्य दानवीरता किस प्रकार का पाठ है?

(A) नाटक

(B) निबंध

(C) कथा

PDF SARTHI.COM

(D) पद्यात्मक

Ans – (A)

3. कर्णस्य दानवीरता पाठ कहाँ से लिया गया है?

(A) मेघदूत

(B) महाभारत

(C) कर्णभार

(D) रामायण

Ans – (C)

4. सूर्यपुत्र कौन है?

(A) अर्जुन

(B) भीम

(C) कर्ण

(D) लक्ष्मण

Ans – (C)

5. कर्ण किसको कवच और कुण्डल देता है?

(A) धृतराष्ट्र

(B) कृष्ण

(C) इंद्र

(D) भीष्म

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

6. कर्ण किस देश का राजा था?

(A) मगध

(B) राजगृह

(C) अंग

(D) गोकुल

Ans – (C)

7. कर्ण किसको नमस्कार करता है?

(A) कृष्ण

(B) दुर्योधन

(C) इंद्र

(D) नकुल

Ans – (C)

8. कुंतीपुत्र कौन है?

(A) कर्ण

(B) भीष्म

(C) दुर्योधन

(D) कृष्ण

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

9. कर्ण किसके पक्ष में युद्ध करता था?

(A) पाण्डव

(B) कौरव

(C) कृष्ण

(D) विदुर

Ans – (B)

10. 'कर्णभार' नामक नाटक के रचनाकार कौन

(A) कालिदास

(B) चाणक्य

(C) वाल्मीकि

(D) भास

Ans – (D)

11. 'महत्तरां भिक्षा याचे' यह किसकी उक्ति

(A) कर्ण की

(B) शल्य की

(C) शक्र की

(D) इनमें से कोई

Ans – (C)

12. क्या हमेशा स्थिर रहता है?

PDF SARTHI.COM

(A) हवन

(B) दान

(C) धर्म

(D) विद्या

Ans – (B)

13. शक्र (इन्द्र) किस वेश में प्रवेश करता है?

(A) ब्राह्मण

(B) साधु

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (A)

14. मजबूत जड़ वाले कौन गिर जाते हैं?

(A) सिर

(B) वृक्ष

(C) बाघ

(D) घर

Ans – (B)

15. किसने छलपूर्वक दान में कवच और कुण्डल ले लिया?

(A) इन्द्र

PDF SARTHI.COM

(B) भीष्म

(C) अर्जुन

(D) कृष्ण

Ans – (A)

16. धर्मो हि यत्रै गुणा धारन्ते।। श्लोक कहाँ से लिया गया है?

(A) भारत महिमा

(B) कर्णस्य दानवीरता

(C) मंगलम

(D) अलसकथा

Ans – (B)

17. देवता और असुरों द्वारा क्या भेदने योग्य नहीं है?

(A) शिक्षा

(B) आग

(C) शरीर

(D) कवच

Ans – (D)

18. कवच कुण्डल के साथ किसका जन्म हुआ था?

(A) कर्ण

(B) दुर्योधन

(C) अर्जुन

PDF SARTHI.COM

(D) विदुर

Ans – (A)

19. भास के कितने नाटक उपलब्ध हैं?

(A) 10

(B) 12

(C) 13

(D) 14

Ans – (C)

20. ब्राह्मणवेशधारी कौन था?

(A) आदित्य

(B) शिव

(C) कर्ण

(D) इंद्र

Ans – (D)

21. किसका धन साँप के जीभ के समान चंचल होता है?

(A) मंत्री

(B) राजा

(C) कर्ण

(D) देवता

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

22. सर्वप्रथम कर्ण क्या देता है?

(A) वाजि

(B) कनक

(C) चाँदी

(D) गोसहस्र

Ans – (D)

23. समय आने पर किसका नाश हो जाता है?

(A) विद्या

(B) शिक्षा

(C) क्षेत्र

(D) धन

Ans – (B)

24. न दातव्यम् न दातव्यम्।' यह उक्ति किसकी है?

(A) शल्य

(B) शक्र

(C) कर्ण

(D) कुन्ती

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

25. शरीर के नष्ट होने के बाद भी किसका नाश नहीं होता है?

(A) सम्पत्ति

(B) गुण

(C) कामना

(D) राजलक्ष्मी

Ans – (B)

26. दानवीर कौन था?

(A) कर्ण

(B) इन्द्र

(C) कृष्ण

(D) अर्जुन

Ans – (A)

27. ब्राह्मण के वेश में कौन प्रवेश करता है?

(A) कर्ण

(B) शल्य

(C) अर्जुन

(D) शक्र

Ans – (D)

28. 'भवन्तमहमेव नमस्करोमि।' किसका कथन है?

PDF SARTHI.COM

(A) शक्र

(B) कर्ण

(C) भीष्म

(D) कुन्ती

Ans – (B)

29. इन्द्र ने कर्ण से छल क्यों किया?

(A) कृष्ण की सहमति के लिए

(B) कौरवों को जीताने के लिए।

(C) अर्जुन की सहायता के लिए।

(D) पाण्डवों को हराने के लिए

Ans – (C)

30. 'अङ्गराज' किसे कहा गया है?

(A) कर्ण

(B) शल्य

(C) अर्जुन

(D) दुर्योधन

Ans – (A)

31. 'नेच्छामि नेच्छामि' किसने बार-बार कहा?

(A) कुन्ती

PDF SARTHI.COM

(B) शक्र

(C) कर्ण

(D) शल्य

Ans – (B)

32. कर्ण शक्र को चौथी बार क्या देना चाहा?

(A) हाथी

(C) गाय

(B) घोड़ा

(D) सोना

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

13. विश्वशान्ति

पाठ परिचय (Viswa Shanti)- आज विश्वभर में विभिन्न प्रकार के विवाद छिड़े हुए हैं जिनसे देशों में आन्तरिक और बाह्य अशान्ति फैली हुई है। सीमा, नदी-जल, धर्म, दल इत्यादि को लेकर स्वार्थप्रेरित होकर असहिष्णु हो गये हैं।

इससे अशांति के वातावरण बना हुआ है। इस समस्या को उठाकर इसके निवारण के लिए इस पाठ में वर्तमान स्थिति का निरूपण किया गया है।

पाठेऽस्मिन् संसारे वर्तमानस्य अशान्तिवातावरणस्य चित्रणं तत्समाधानोपायश्च निरूपितौ । देशेषु आन्तरिकी बाह्या च अशान्तिः वर्तते । तामुपेक्ष्य न कश्चित् स्वजीवनं नेतुं समर्थः । सेयम् अशान्तिः सार्वभौमिकी वर्तते इति दुःखस्य विषयः । सर्वे जनाः तया अशान्त्या चिन्तिताः सन्ति । संसारे तन्निवारणाय प्रयासाः क्रियन्ते ।)

इस पाठ में वर्तमान संसार में अशांति का चित्रण और इसके समाधान को निरूपित किया गया है। देशों में आंतरिक और बाह्य अशांति है। हर कोई अपना जीवन जीने में असमर्थ है। पूरे विश्व में अशांति फैला हुआ है। यह दुख का विषय है। सभी लोग चिन्तित है। संसार में निवारण का प्रयास किया जा रहा है।

वर्तमाने ससारे प्रायशः सर्वेषु देशेषु उपद्रवः अशान्तिर्वा दृश्यते । क्वचिदेव शान्त वातावरणं वर्तते । क्वचित् देशस्य आन्तरिकी समस्यामाश्रित्य कलहो वर्तते, तेन शत्रुराज्यानि मोदमानानि कलहं वर्धयन्ति । क्वचित् अनेकेषु राज्येषु परस्परं शीतयुद्धं प्रचलति । वस्तुतः संसारः अशान्तिसागरस्य कूलमध्यासीनो दृश्यते ।

इस समय प्रायः संसार के सभी देशों में अशान्ति देखे जाते हैं। संयोग से ही कहीं शान्ति का वातावरण देखेने को मिलता है। किसी देश में आन्तरिक अव्यवस्था के कारण अशांति है तो कहीं शत्रु देश द्वारा अशांति फैलाया जा रहा है तो कहीं अनेक देशों में शीतयुद्ध चल रहा है। इस प्रकार सारा संसार ही अशांति के वातावरण में जी रहा है।

अशान्तिश्च मानवताविनाशाय कल्पते । अद्य विश्वविध्वंसकान्यस्त्राणि बहून्याविष्कृतानि सन्ति । तैरेव मानवतानाशस्य भयम् । अशान्तेः कारणं तस्याः निवारणोपायश्च सावधानतया चिन्तनीयौ । कारणे ज्ञाते निवारणस्य उपायोऽपि ज्ञायते इति नीतिः ।

अशांति मानवता के विनाश का कारण है। इस समय विनाशकारी अस्त्रों का निर्माण विशाल पैमाने पर हो रहा है, उससे ही मानवता के विनाश का भय बना हुआ है। अशांति के कारणों के निवारण के उपायों पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। अशांति के कारणों का पता लगाते हुए उनके समाधान के उपायों का भी पता करना चाहिए।

वस्तुतः द्वेषः असहिष्णुता च अशान्तेः कारणद्वयम् । एको देशः अपरस्य उत्कर्षं दृष्ट्वा द्वेष्टि, तस्य देशस्य उत्कर्षनाशाय निरन्तरं प्रयतते । द्वेषः एवं असहिष्णुतां जनयति । इमौ दोषौ परस्परं वैरमुत्पादयतः । स्वार्थश्च वैरं प्रवर्धयति । स्वार्थप्रेरितो जनः अहंभावेन परस्य धर्मं जाति सम्पत्तिं क्षेत्रं भाषां वा न सहते ।

वास्तव में, ईर्ष्या एवं असहनशीलता अशान्ति के मुख्य दो कारण है। एक देश दूसरे देश की उन्नति अथवा विकास देखकर जलभुन जाते हैं, और उस देश को हानि पहुँचाने का प्रयास करने लगते हैं। द्वेष ही असहनशीलता पैदा

PDFSARTHI.COM

करता है। इन दोनों दोषों के कारण शत्रुता जन्म लेती हैं। स्वार्थ दुश्मनी बढ़ाती है। स्वार्थ से अंधा व्यक्ति अहंकारवश दुसरों के धार्मिक, सामाजिक और भाषाई एकता सहन नहीं कर पातें।

आत्मन एव सर्वमुत्कृष्टमिति मन्यते। राजनीतिज्ञाश्च अत्र विशेषेण प्रेरकाः । सामान्यो जनः न तथा विश्वसन्नपि बलेन प्रेरितो जायते । स्वार्थोपदेशः बलपूर्वकं निवारणीयः। परोपकारं प्रति यदि प्रवृत्तिः उत्पाद्यते तदा सर्वे स्वार्थं त्यजेयुः। अत्र महापुरुषाः विद्वांसः चिन्तकाश्च न विरलाः सन्ति ।

वे निजी विकास को ही उत्तम मानते हैं। इस निकृष्ट विचार के मुख्य प्रेरक राजनेता हैं। सामान्य लोग ही नहीं, विशिष्ट जन भी बलपूर्वक प्रेरित किए जाते हैं। इसलिए स्वार्थी भावना को बलपूर्वक दूर करना चाहिए। यदि परोपकार के प्रति रूचि जग जाती है तब स्वतः सारे स्वार्थ मिट जाते हैं। यहाँ महापुरूष, विद्वान तथा चिन्तकों का अभाव नहीं है।

तेषां कर्तव्यमिदं यत् जने-जने, समाजे-समाजे, राज्ये राज्ये च परमार्थ वृत्तिं जनयेयुः । शुष्कः उपदेशश्च न पर्याप्तः, प्रत्युत तस्य कार्यान्वयनञ्च जीवनेऽनिवार्यम् । उक्तञ्च ज्ञानं भारः क्रियां विना । देशानां मध्ये च विवादान् शमयितुमेव संयुक्तराष्ट्रसंघप्रभृतयः संस्थाः सन्ति । ताश्च काले-काले आशङ्कितमपि विश्वयुद्धं निवारयन्ति ।

उनका कर्तव्य है कि वे हर व्यक्ति, हर समाज तथा हर देश में परोपकार की भावना का प्रचार करें। थोथा उपदेश काफी नहीं है, बल्कि वैसा आचरण भी अपनाना जरूरी है। क्योंकि कहा गया है कि. क्रिया के बिना ज्ञान बोझ स्वरूप होता है। दो देशों के आपसी विवाद को खत्म करने के लिए संयुक्त राष्ट संघ आदि संस्थाएँ हैं। यहीं समय-समय पर संभावित विश्व युद्ध को दूर करती है।

भगवान बुद्धः पुराकाले एव वैरेण वैरस्य शमनम् असम्भवं प्रोक्तवान् । अवैरेण करुणया मैत्रीभावेन च वैरस्य शान्तिः भवतीति सर्वे मन्यन्ते ।। भारतीयाः नीतिकाराः सत्यमेव उद्घोषयन्ति - अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

प्राचीन काल में भगवान बुद्ध ने कहा था, दुश्मनी से दुश्मनी को खत्म करना संभव नहीं है। मित्रता एवं दया से शत्रुता भाव को शांत करना संभव है। ऐसा सबका मानना है। भारतीय नीतिज्ञों ने सच ही कहा है। यह मेरा है, वह दुसरों का है ऐसा नीच विचारवाले मानते हैं। उदारचित वाले अर्थात् महापुरूषों के लिए सारा संसार ही अपने परिवार जैसा है।

परपीडनम् आत्मनाशाय जायते, परोपकारश्च शान्तिकारणं भवति । अद्यापि परस्य देशस्य संकटकाले अन्ये देशाः सहायतारशि सामग्री च प्रेषयन्ति इति विश्वशान्तेः सूर्योदयो दृश्यते ।

PDFSARTHI.COM

दूसरों के कष्ट पहुँचाने से अपना ही नुकसान होता है और दूसरों के सहयोग से शांति मिलती है। आज भी किसी दूसरे देश के संकट में शहायता राशि भेजी जाती है। इससे विश्व शांति की आशा प्रकट होती है।

1.' 'विश्वशान्तिः' पाठ का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर⇒ विश्वशान्तिः शब्द का शाब्दिक अर्थ विश्व की शान्ति है। आज सर्वत्र ईर्ष्या, द्वेष, असहिष्णुता, अविश्वास, असंतोष आदि जैसे दुर्गुण विद्यमान हैं। ये दुर्गुण जहाँ विद्यमान हो वहाँ की शान्ति की कल्पना कैसे की जा सकती है। शान्ति भारतीय दर्शन का मूल तत्व है। यह शान्ति धर्ममूलक है। धर्मो रक्षित रक्षितः-ऐसा प्राचीन संदेश विश्व का अस्तित्व और रक्षा के लिए ही प्रेरित है। इस पाठ का मुख्य उद्देश्य, व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों को आपसी द्वेष, असंतोष आदि से दूर कर शान्ति, सहिष्णुता आदि का पाठ पढ़ाना है।

2. अशान्ति का प्रमुख कारण कौन-कौन है ? तथा इसका निदान क्या है ?

उत्तर⇒ अशान्ति का प्रमुख कारण द्वेष और असहिष्णुता है। आज हर देश दसेरे देश की उन्नति को देखकर ईर्ष्या की अग्नि से जल रहा है। उसकी उन्नति को नष्ट करने के लिए छल-प्रपंच आदि का सहारा ले रहा है। आयुधों की होड़ में आज मानवता विनष्ट हो रही है। निर्वैर से शान्ति की कल्पना की जा सकती है। अतः परोपकार, सहिष्णुता आदि को धारण कर ही अशान्ति को दूर किया जा सकता है।

3. विश्वशान्तिः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर⇒ आज विश्वभर में विभिन्न प्रकार के विवाद छिड़े हुए हैं जिनसे देशों में आंतरिक और बाह्य अशांति फैली हुई है । सीमा, नदी-जल, धर्म, दल इत्यादि को लेकर स्वार्थप्रेरित होकर असहिष्णु हो गये हैं। इससे अशांति का वातावरण बना हुआ है। इस समस्या को उठाकर इसके निवारण के लिए इस पाठ में वर्तमान स्थिति का निरूपण किया गया है।

4. वर्तमान में विश्व की स्थिति का वर्णन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर⇒ वर्तमान में प्रायः विश्व के सभी देशों में अशांति और कलह छाए हुए हैं। कुछ देशों में आंतरिक समस्याएँ हैं तो कुछ देशों में परस्पर शीतयुद्ध चल रहे हैं। संपूर्ण संसार में अशांति के कारण मानवता का विनाश हो रहा है । विध्वंसकारी अस्त्रों द्वारा मानवता के विनाश का भय सर्वत्र व्याप्त है।

5. अशांति के मूल कारण क्या हैं ?

उत्तर⇒ वास्तव में अशांति के दो मूल कारण हैं-द्वेष और असहिष्णुता । एक देश दूसरे देश की उन्नति देख जलते हैं, और इससे असहिष्णुता पैदा होती है। ये दोनों दोष आपसी वैर और अशांति के मूल कारण हैं।

6. संसार में अशांति कैसे नष्ट हो सकती है ? (अथवा, विश्व अशान्ति का क्या कारण है ? तीन वाक्यों में हिन्दी में उत्तर दें।

उत्तर⇒ अशांति के मूल कारण हैं-द्वेष और असहिष्णुता । स्वार्थ से यह अशांति बढ़ती है। इस अशांति को वैर से नहीं रोका जा सकता । करुणा और मित्रता से ही वैर नष्ट कर संसार में शांति लाई जा सकती है।

7. विश्व शांति के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर⇒ केवल उपदेश से विश्व शांति नहीं होगी। हमें उपदेशों के अनुसार आचरण करना होगा । हमलोग जानते हैं कि क्रिया के बिना, अर्थात व्यवहार के बिना ज्ञान भार-स्वरूप है । वैर कभी भी वैर से शांत नहीं होता। हमें निर्वैर दया, परोपकार, सहिष्णुता और मित्रता का भाव दूसरों के प्रति रखनी होगी, तभी विश्वशांति हो सकती है।

8. विश्व में शांति कैसे स्थापित हो सकती है ?

उत्तर⇒ विश्व में शांति का आधार एकमात्र परोपकार है। परोपकार की भावना मानवीय गुण है । संकटकाल में सहयोग की भावना रखना ही लक्ष्य हो तभी हम निर्वैर, सहिष्णुता और परोपकार से शांति स्थापित कर सकते हैं।

9. 'विश्वशांति' पाठ के आधार पर भारतीय दर्शन का मूल तत्त्व बतलाएँ।

PDF SARTHI.COM

उत्तर⇒ भारतीय दर्शन का मूल तत्त्व शांति है। इसमें संदेह नहीं, क्योंकि धर्म का आधार भी शांति ही है। इसी भाव से विश्व की रक्षा तथा कल्याण संभव है इसलिए हमें जन जागरण द्वारा सहिष्णुता, परोपकार और निर्वेर के महत्त्व पर प्रकाश डालना चाहिए।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'विश्वशांति' पाठ में किस वातावरण का वर्णन है?

(A) शांति

(C) शिक्षा

(B) अशांति

(D) युद्ध

Ans – (B)

2. 'विश्वशांति' किस प्रकार का पाठ है?

(A) निबंध

(B) नाटक

(C) कथा

(D) पद्य

Ans – (A)

3. अशांति रूपी सागर के किनारे कौन है?

(A) मानव

PDF SARTHI.COM

(B) दानव

(C) संसार

(D) छात्र

Ans – (C)

4. अशांति किसके विनाश का कारण हैं ?

(A) मानवता

(B) लड़कपन

(C) बूढ़ापा

(D) युवा

Ans – (A)

5. अशांति के कितने कारण हैं?

(A) एक

(B) तीन

(C) दो

(D) चार

Ans – (C)

6. देश में अशांति के प्रेरक कौन हैं?

(A) विद्वान

(B) राजनेता

PDF SARTHI.COM

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (B)

7. शांति का कारण क्या है?

(A) स्वार्थ

(C) परमार्थ

(B) अशांति

(D) परोपकार

Ans – (D)

8. कैसा चरित वाले संसार को परिवार मानते हैं?

(A) उदार

(B) अनुदार

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (A)

9. वैर से वैर का शमन क्या है?

(A) संभव

(C) नाम्भव

(B) असंभव

PDF SARTHI.COM

(D) साम्भव

Ans – (B)

10. परपीडन किस लिए होता है?

(A) पुण्य के लिए

(B) पाप के लिए

(C) नाश के लिए

(D) धर्म के लिए

Ans – (B)

11. एक देश दूसरे देश को क्या देखकर जलता है?

(A) अपकर्ष

(B) उत्कर्ष

(C) आकर्ष

(D) परापकर्ष

Ans – (B)

12. वस्तुतः इस समय संसार किस महासागर के कूलमध्य स्थित दिख रहा है?

(A) प्रशान्त महासागर

(B) हिन्द महासागर

(C) अशान्ति महासागर

(D) अटलांटिक महागसार

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

13. "वैरेण वैरस्य शमनम् असम्भवम्" यह किसकी उक्ति है?

(A) महात्मा बुद्ध

(B) भगवान महावीर

(C) चन्द्रगुप्त

(D) कर्ण

Ans – (A)

14. देशों के बीच कौन-सा युद्ध चल रहा है?

(A) ग्रीष्म

(B) अंधकार

(C) युद्ध

(D) शीत

Ans – (D)

15. शत्रु राज्यों में क्या बढ़ रहा है?

(A) कलह

(B) ज्ञान

(C) सत्य

(D) कोलाहल

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

16. दुख का विषय क्या है?

(A) सार्वभौमिक अशांति

(B) हिंसा

(C) युद्ध

(D) कोलाहलं

Ans – (A)

17. आज विध्वंस के लिए किसका निर्माण हो रहा है?

(A) अस्त्रों का

(B) पुस्तकों का

(C) कमल

(D) नगर

Ans – (A)

18. दूसरों को दुख देने से किसका नाश होता है?

(A) विद्वान

(B) अपना

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (B)

19. संकट के समय एक देश दूसरे देश को क्या करते हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) युद्ध

(B) अशांति

(C) सहायता

(D) शांति

Ans – (C)

20. विश्व को नष्ट करने के लिए किसका निर्माण हो रहा है?

(A) बंदुक

(C) शास्त्र

(B) अस्त्र

(D) ग्रंथ

Ans – (B)

21. एक देश दूसरे देश की उन्नति को देखकर क्या करते हैं?

(A) प्रेम

(B) लड़ाई

(C) ईर्ष्या

(D) शांतिवार्ता

Ans – (C)

22. ईर्ष्या से किसका जन्म होता है?

PDF SARTHI.COM

(A) असहनशीलता

(C) युद्ध

(B) सहनशीलता

(D) शांदि

Ans – (A)

23. उदारचरित वाले संसार को क्या मानते हैं?

(A) परिवार

(B) मंदिर

(C) देवता

(D) छात्र

Ans – (A)

24. "यह मेरा है, यह तुम्हारा है।" ऐसा कौन मानता है?

(A) विद्वान

(B) छात्र

(C) लघुबुद्धि वाला

(D) अग्रसोची

Ans – (C)

25. वैर से किसका नाश असंभव है?

PDF SARTHI.COM

(A) वैर का

(B) शांति

(C) अशांति

(D) अवैर का

Ans – (A)

26. हम सबों को किसका त्याग करना चाहिए?

(A) परमार्थ

(B) नि:स्वार्थ

(C) विवाद

(D) स्वार्

Ans – (B)

27. किसके बिना ज्ञान बोझ है?

(A) पुस्तक

(B) राजनेता

(C) क्रिया

(D) विद्या

Ans – (C)

28. असहिष्णुता को जन्म कौन देता है?

=(A) प्रेम

(B) करुणा

PDF SARTHI.COM

(C) द्वेष

(D) क्षमा

Ans – (C)

29. ईर्ष्या और असहिष्णुता किसको उत्पन्न करते हैं?

(A) शांति

(B) अशांति

(C) सुख समृद्धि

(D) प्रेम

Ans – (B)

30. अपने और पराये की गणना कौन करता है?

(A) विशाल हृदय वाला

(B) संकुचित हृदय वाला

(C) दुर्जन

(D) सज्जन

Ans – (B)

31. शत्रुता को कौन बढ़ाता है?

(A) स्वार्थ

(B) परमार्थ

(C) परोपकार

(D) अहिंसा

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

32. अवैर, करुणा और मैत्रीभाव से किसकी उत्पत्ति होती है?

(A) अशांति की

(B) शांति की

(C) उपद्रव की

(D) स्थिरता

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

14. शास्त्रकाराः

[भारते वर्षे शास्त्राणां महती परम्परा श्रूयते । शास्त्राणि प्रमाणभूतानि समस्तज्ञानस्य स्त्रोतःस्वरूपाणि सन्ति । अस्मिन् पाठे प्रमुखशास्त्राणां निर्देशपूर्वकं तत्प्रवर्तकानाञ्च निरूपणं विद्यते । मनोरञ्जनाय पाठेऽस्मिन् प्रश्नोत्तरशैली आसादिता वर्तते ।] (शिक्षकः कक्षायां प्रविशति, छात्राः सादरमुत्थाय तस्याभिवादनम् कुर्वन्ति ।)

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

[भारतवर्ष में शास्त्रों के महान परंपरा सुने जाते हैं। शास्त्र प्रमाण के रूप में समस्त ज्ञान का स्रोत स्वरूप हैं। इस पाठ में प्रमुख शास्त्रों एवं उनके प्रवर्तककों के नाम निर्देश पूर्वक निरूपित हैं। इस पाठ में मनोरंजन के लिए प्रश्नोत्तर शैली अपनाई गई हैं ।] (शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं, छात्र आदर सहित खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं ।)

शिक्षकः - उपविशन्तु सर्वे। अद्य युष्माकं परिचयः संस्कृतशास्त्रैः भविष्यति ।

सभी बैठ जाए। आज आपलोगों का परिचय संस्कृत शास्त्रों से होगी ।

युवराजः - गुरूदेव ! शास्त्रं किं भवति ।

गुरूदेव ! शास्त्र क्या होता है ?

शिक्षकः - शास्त्रं नाम ज्ञानस्य शासकमस्ति । मानवानां कर्त्तव्याकर्त्तव्यविषयान् तत् शिक्षयति । शास्त्रमेव अधुना अध्ययनविषयः (Subject) कथ्यते, पाश्चात्यदेशेषु अनुशासनम् (Discipline) अपि अभिधीयते । तथापि शास्त्रस्य लक्षणं धर्मशासत्रेषु इत्थं वर्तते –

शास्त्र का नाम ही ज्ञान का शासक है। वे मानवों के कर्तव्य और अकर्तव्य विषयों की शिक्षा देती है। शास्त्र को ही इस समय अध्ययन का विषय कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसे अनुशासन भी कहा जाता है। वैसे भी शास्त्रों का लक्षण धर्मशास्त्रों में इस प्रकार हैं

प्रवृत्तिर्वा निवृत्तिर्वा नित्येन कृतकेन वा । पुंसां येनोपदिश्यते तच्छास्त्रमभिधीयते ।।

जो वाङ्मय (शास्त्र) मनुष्यों को प्रवृत्ति (काम-वासना) या निवृत्ति (त्याग) मार्ग में, या सदाचार से प्रेरित होकर, मार्गदर्शन करता है, उसे शास्त्र कहा जाता है।

अभिनवः - अर्थात् शास्त्रं मानवेभ्यः कर्त्तव्यम् अकर्त्तव्यञ्च बोधयति । शास्त्रं नित्यं भवतु वेदरूपम्, अथवा कृतकं भवतु ऋष्यादिप्रणीतम् ।

अर्थात शास्त्र मानवों के कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराती है । शास्त्र वेद के रूप में ऋषि आदि के द्वारा रचित होते हैं।

शिक्षकः- सम्यक् जानासि वत्स! कृतकं शास्त्रं ऋषयः अन्ये विद्वांसः वा रचितवन्तः । सर्वप्रथमं षट् वेदाङ्गानि शास्त्राणि सन्ति । तानि शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरूक्तम्, छन्दः, ज्योतिषं चेति ।

PDFSARTHI.COM

सही जानते हो वत्स ! बनावटी शास्त्र ऋषि तथा अन्य विद्वानों के द्वारा रचित हैं। सर्वप्रथम छः वेदांग शास्त्र हैं। उनमें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष हैं।

इमरानः - गुरूदेव ! एतेषां विषयाणां के-के प्रणेतारः?

गुरूदेव ये सब विषयों के लेखक कौन-कौन हैं ?

शिक्षकः - श्रृणुत यूयं सर्वे सावहितम् । शिक्षा उच्चारणप्रक्रियां बोधयति । पाणिनीयशिक्षा तस्याः प्रसिद्धो ग्रन्थः । कल्पः कर्मकाण्डग्रन्थः सूत्रात्मकः । बौधायन-भारद्वाज-गौतम-वसिष्ठादयः ऋषयः अस्य शास्त्रस्य रचयितारः । व्याकरणं तु पाणिनिकृतं प्रसिद्धं । निरूक्तस्य कार्य वेदार्थबोधः । तस्य रचयिता यास्कः छन्दः पिङ्गलरचिते सूत्रग्रन्थे प्रारब्धम्। ज्योतिषं लगधरचितेन वेदाङ्ग ज्योतिषग्रन्थेन प्रावर्तत।

सभी छात्र एवं छात्राएँ सावधान होकर सुनें। शिक्षा उच्चारण प्रक्रिया का बोध कराता है। "पाणिनीयशिक्षा" इसका प्रसिद्ध ग्रंथ है। कल्प कर्मकांड सुत्रात्मक ग्रंथ है। बौधायन, भारद्वाज, गौतम, वसिष्ठ आदि ऋषिगण इस शास्त्र के रचनाकार है। व्याकरण तो महर्षि पाणिनि द्वारा रचित प्रसिद्ध हैं। निरूक्त वेद के अर्थों का बोध कराता है। उसका रचनाकार महर्षि यास्क है एवं छन्द महर्षि पिङ्गल द्वारा रचित सुत्रग्रन्थ में प्रारंभ हुआ। ज्योतिष महर्षि लगध द्वारा रचित वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ से प्रारंभ हुआ।

अब्राहमः - किमेतावन्तः एव शास्त्रकाराः सन्ति ?

क्या इतने ही शास्त्रकार हैं?

शिक्षकः - नहि नहि । एते प्रवर्त्तकाः एव। वस्तुतः महती परम्परा एतेषां शास्त्राणां परवर्त्तिभिः सञ्चालिता। किञ्च, दर्शनशास्त्राणि षट् देशेऽस्मिन् उपक्रान्तानि ।

नहीं नहीं। येसब प्रवर्तक ही हैं। वास्तव में शास्त्रों का महान परंपरा है येसब शास्त्र प्रवर्तकों के द्वारा संचालित है। और कुछ दर्शनशास्त्र छः देशों में आरंभ हुए ।

श्रुतिः - आचार्यवर ! दर्शनानां के-के प्रवर्तकाः शास्त्रकाराः ?

आचार्यवर दर्शन शास्त्रों के प्रवर्तक व शास्त्रकर कौन-कौन हैं।

PDFSARTHI.COM

शिक्षकः- सांख्यदर्शनस्य प्रवर्तकः कपिलः। योगदर्शनस्य पतञ्जलिः। एवं गौतमेन न्यायदर्शनं रचितं कणादेन च वैशेषिकदर्शनम्। जैमिनिना मीमांसादर्शनम्, बादरायणेन च वेदान्तदर्शनं प्रणीतम् । सर्वेषां शताधिकाः व्याख्यातारः स्वतन्त्रग्रन्थकाराश्च वर्तन्ते ।

सांख्यदर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल है। योग दर्शन के महर्षि पतंजलि एवं महर्षि गौतम के द्वारा न्यायदर्शन और महर्षि कणाद के द्वारा वैशेषिक दर्शन का रचना किया गया। महर्षि जैमिनि द्वारा मीमांसादर्शन और बादरायण द्वारा वेदांतदर्शन का रचना किया गया है। सभी सौ से अधिक व्याख्याता और स्वतंत्रग्रंथकार हैं।

गार्गी - गुरूदेव ! भवान् वैज्ञानिकानि शास्त्राणि कथं न वदति ?

गुरूदेव! आप वैज्ञानिक शास्त्र को क्यों बोलते हैं ?

शिक्षकः- उक्तं कथयसि। प्राचीनभारते विज्ञानस्य विभिन्नशाखानां शास्त्राणि प्रावर्तन्त । आयुर्वेदशास्त्रे चकरसंहिता, सुश्रुतसंहिता चेति शास्त्रकारनाम्नैव प्रसिद्धे स्तः । तत्रैव रसायनविज्ञानम्, भौतिकविज्ञानञ्च अन्तर्भू स्तः । ज्योतिषशास्त्रेऽपि खगोलविज्ञानं गणितम् इत्यादीनि शास्त्राणि सन्ति । आर्यभटस्य ग्रन्थः आर्यभटीयनामा प्रसिद्धः । एवं वराहमिहिरस्य बृहत्संहिता विशालो ग्रन्थः यत्र नाना विषयाः समन्विताः । वास्तुशास्त्रमपि अत्र व्यापं शास्त्रमासीत्। कृषिविज्ञानं च पराशरेण रचितम् । वस्तुतो नास्ति शास्त्रकाराणाम् अल्पा संख्या ।

सही कहते हो। प्राचीन भारत में विज्ञान के विभिन्न शाखा शास्त्र से प्रारंभ हुआ । आयुर्वेद शास्त्र में चकरसंहिता और सुश्रुतसंहिता ये शास्त्रकारों के नाम से प्रसिद्ध हैं। वहीं रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान अन्तरर्भूत हैं। ज्योतिष शास्त्र में भी खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र हैं। आर्यभट्ट का ग्रन्थ "आर्यभटीय" नाम से प्रसिद्ध है। इसप्रकार वराहमिहिर के वृहत्संहिता विशाल ग्रंथ है। इसमें अनेक विषय सम्मिलित है। यहाँ वास्तुशास्त्र भी व्यापक शास्त्र था । कृषिविज्ञान के रचनाकार महर्षि पराशर है। वास्तव में शास्त्रकारों के संख्या कम नहीं है।

वर्गनायकः - गुरुदेव ! अद्य बहुज्ञातम् । प्राचीनस्य भारतस्य गौरवं सर्वथा समृद्धम् । (शिक्षकः वर्गात् निष्क्रामति । छात्राः अनुगच्छन्ति ।)

गुरूदेव! आज बहुत ज्ञात हुआ। प्राचीन भारत का गौरव सर्वथा समृद्ध रहा है ।

PDFSARTHI.COM

1. वेदाङ्ग कितने है? उनके प्रवर्तकों एवं शास्त्रों के नाम लिखें। अथवा, वेदाङ्ग के नाम लिखें। अथवा, 'वेदाङ्ग" संख्या में कितने हैं ?

उत्तर- वेदाङ्ग छः हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष । शिक्षा उच्चारण प्रक्रिया का बोध कराता है। इसके प्रवर्तक पाणिनी है। कल्प अंग में सूत्रात्मक कर्मकाण्ड ग्रन्थ है, जिसके प्रवर्तक बौधायन, भारद्वाज, गौतम, वशिष्टआदि ऋषि है। निरुक्त वेद अर्थ का बोध कराता है, इसके प्रवर्तक यास्क है। छन्द अङ्ग सूत्र ग्रन्थ हैं, जिसके प्रवर्तक पिङ्गल हैं तथा ज्योतिष अङ्ग के प्रवर्तक लगधर ऋषि हैं।

2. वेद कितने हैं ? सभी के नाम लिखें।

उत्तर- वेद चार हैं, इनके नाम इस प्रकार से हैं-ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद ।

3. शास्त्रकाराः पाठ के आधार पर संस्कृत की विशेषता बताएँ ।

उत्तर- संस्कृत ज्ञान का समुद्र है। यह देववाणी है। यह कर्त्तव्य औरअकर्त्तव्य की शिक्षा देती है। वेदांत भी संस्कृत रूप है। योगदर्शन, न्यायदर्शन, मीमांसादर्शन आदि सभी संस्कृत की व्यापकता ही है। आर्यभट्टीय विज्ञान, गणित की पृष्ठभूमि है। भारतीय शास्त्रकार प्रायः संस्कृत में ही लिखित है

4. 'शास्त्रकाराः' पाठ के आधार पर शास्त्र की परिभाषा अपनेशब्दों में लिखें। अथवा, गुरु के द्वारा शास्त्र का क्या लक्ष्य बताया गया है अथवा, शास्त्र क्या है ?

उत्तर- शास्त्र ज्ञान का शासक है। वह मनुष्यों के कर्त्तव्य एवं अकर्त्तव्य विषयों की शिक्षा देता है। शास्त्र ही इस समय अध्ययन का विषय कहा जाता है। पाश्चात्य देशों में इसे अनुशासन भी कहा जाता है। इस प्रकार, आसक्ति अथवाविरक्ति, नित्य अथवा कृत्रिम की शिक्षा मनुष्यों को जिससे दिया जाता है, वहशास्त्र है।

5. भारतीय शास्त्र कारों का परिचय दें।

उत्तर - आयुर्वेद में चरक संहिता सुषुप्त संहिता आदि शस्त्र का विश्व प्रसिद्ध है खगोल ज्ञान में आर्यभट्ट बड़ा हमीरा प्रसिद्ध है बताया भारद्वाज गौतम वरिष्ठ आदि ऋषियों ने शास्त्रों की रचना की है तथा पाणिनि कृतज्ञ व्याकरण विश्व प्रसिद्ध है अत: मकर

6. 'शास्त्रकाराः' पाठ में प्रश्नोत्तर शैली अपनाने से हमें क्याशिक्षा मिलती है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर-'शास्त्रकाराः' पाठ में प्रश्नोत्तर शैली अपनाने से हमें यह शिक्षा मिलती है कि शास्त्रों का ज्ञान करना कठिन है, किन्तु उसका ज्ञान मनोरंजन द्वारा हल और शीघ्र हो जाता है। प्रश्नोत्तर शैली में प्रश्न और उत्तर सहित सहज भावमें होते हैं। इस पाठ में प्राचीन शास्त्रों का ज्ञान शास्त्र की परिभाषा, भारतीय वैज्ञानिक का वर्णन, दर्शन शास्त्रों तथा व्याकरण के प्रवर्तकों की जानकारी इस शैली में छात्रों को आसानी से होती है।

7. विज्ञान की शिक्षा देनेवाले शास्त्र का परिचय दें।

उत्तर- प्राचीन भारत में विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की पुस्तकों की रचना हुई। आयुर्वेदशास्त्र में चरक संहिता और सुश्रुत तो शास्त्रकार के नाम से ही प्रसिद्धहै। वही रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान अन्तर्भुत हैं। ज्योतिश शास्त्र में खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र हैं। आर्यभट्ट की पुस्तक आर्यभट्टीयम् नामसे विख्यात है। वास्तुशास्त्र भी यहाँ व्यापक शास्त्र है। कृषि विज्ञान पराशर केद्वारा रचित है।

8. ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत कौन-कौन शास्त्र है तथा उनके प्रमुख ग्रन्थ कौन से हैं ?

उत्तर- ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र है। उनके प्रमुख ग्रंथ आर्यभट्ट रचित 'आर्यमहिमा' और वराहमिहिर रचित वृहत्संहिता आदि है।

9. कल्प ग्रन्थों के प्रमुख रचनाकारों का नामोल्लेख करें।

उत्तर-कल्प ग्रन्थों के प्रमुख रचनाकार बोधायन, भारद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, आदि ऋषि है।

10. शास्त्रकाराः पाठ में वर्णित वैज्ञानिक शास्त्रों पर प्रकाश अथवा, भारतीय वैज्ञानिक शास्त्रकारों की संक्षेप में करें।

उत्तर- प्राचीन भारत में अनेक वैज्ञानिक ऋषि थे। जिन्होंने विज्ञान सम्बन्धी रचनाएँ लिखीं। आयुर्वेद शास्त्र में चरक विरचित 'चरक संहिता' एवं सुश्रुत संहिता' अति प्रसिद्ध है। इनमें रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का भी वर्णन है। आर्यभट्ट का आर्यभट्टीय अति प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसमें अनेक विषयों का वर्णन है। कृषि विज्ञान के रचयिता महर्षि पराशर है। इसमें वैज्ञानिक कृषिका वर्णन है। इस प्रकार भारतीय वैज्ञानिक शास्त्रकार किसी भी क्षेत्र में अन्य देशों से कम नहीं है।

11. आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ कौन-कौन है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर- आयुर्वेद शास्त्र के प्रमुख दो चिकित्सकों चरक और सुश्रुत के द्वाराआयुर्वेद शास्त्र में चरकसंहिता और सुश्रुत संहिता प्रमुख ग्रन्थ है।

12. शास्त्र मनुष्यों को किन-किन चीजों का बोध कराता है ?

उत्तर- शास्त्र मनुष्यों को काव्य और अकर्तव्य का बोध कराता है। कृत्रिम शास्त्र अर्थात् ऋषियों द्वारा लिखे गए शास्त्र तथा वेद स्वरूप शास्त्र अर्थात् ईश्वर-प्रदत्त शास्त्र का भी बोध कराता है। 'रामायण' कृत्रिम शास्त्र तथा 'वेद' वेद स्वरूप शास्त्र है। इसके अतिरिक्त शास्त्र वेदाङ्ग तथा दर्शन एवं वैज्ञानिक शास्त्रों का भी बोध कराता है।

13. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं उनके प्रवर्तकों की चर्चा करें।

उत्तर- सांख्य दर्शन के संस्थापक कपिल, योग-दर्शन के पतंजलि, न्यायदर्शन के गौतम, वैशेषिक दर्शन के कणाद ऋषि, मीमांसा दर्शन के जैमिनी और वेदान्त दर्शन के संस्थापक वादायण है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. व्याकरण के रचनाकार कौन है?

(A) चाणक्य

(B) पाणिनि

(C) कालिदास

(D) भास

Ans – (B)

2. 'शास्त्रकारा: ' किस प्रकार का पाठ है?

(A) वार्तालाप

(B) निबंध

(C) कथा

PDF SARTHI.COM

(D) नाटक

Ans – (A)

3. शास्त्र मानवों को किसका बोध कराता है?

(A) हर्तव्य

(B) धर्तव्य

(C) कर्तव्याकर्तव्य

(D) मन्तव्य

Ans – (C)

4. वेदरूपी शास्त्र क्या होता है?

(A) अनित्य

(B) नित्य

(C) कृत्य

(D) भृत्य

Ans – (B)

5. शास्त्र किसके लिए कर्त्तव्य और अकर्तव्य का विधान करते हैं?

(A) दानवों के लिए

(B) मानवों के लिए

(C) छात्रों के लिए

(D) पशुओं के लिए

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

6. शास्त्र किसके द्वारा रचित है?

(A) दानव

(C) छात्र

(B) शिक्षक

(D) ऋषियों

Ans – (D)

7. शास्त्र किसको कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध कराता है?

(A) मानव

(B) दानव

(C) देवता

(D) मूर्ख

Ans – (A)

8. "कृषि विज्ञान" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) पाणिनि

(B) कपिल

(C) पराशर

(D) गौतम

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

9. "मीमांसादर्शन" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कपिल

(B) पराशर

(C) गौतम

(D) जैमिनी

Ans – (D)

10. "चरक संहिता" की रचना किसने की?

(A) कपिल

(B) माघ

(C) चरक

(D) गौतम

Ans – (C)

11. "आर्यभट्टीयनामा" ग्रंथ किनका है?

(A) आर्यभट्ट

(B) गौतम

(C) चरक

(D) पराशर

Ans – (A)

PDFSARTHI.COM

12. "योगदर्शन" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) बौधयायन

(B) पतंजलि

(C) पिंगल

(D) चरक

Ans – (B)

13. 'निरुक्त' के रचयिता कौन हैं?

(A) यास्क

(B) लगध

(C) गौतम

(D) पराशर

Ans – (A)

14. न्यायदर्शन के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कपिल

(B) गौतम

(C) कणाद

(D) पतञ्जलि

Ans – (B)

15. वराहमिहिर द्वारा रचित कौन-सा ग्रन्थ है?

PDF SARTHI.COM

(A) आचार संहिता

(B) विचार संहिता

(C) बृहत्संहिता

(D) मंत्रसंहिता

Ans – (C)

16. ऋष्यादि प्रणीत को क्या कहते हैं?

(A) भृतक

(B) मृतक

(C) कृतक

(D) हृतक

Ans – (C)

17. ऋषि गौतम ने किस दर्शन की रचना की?

(A) सांख्य दर्शन

(B) न्याय दर्शन

(C) योग दर्शन

(D) चन्द्र दर्शन

Ans – (B)

18. निरुक्त का क्या कार्य है?

(A) यथार्थ बोध

PDF SARTHI.COM

(B) वेदार्थ बोध

(C) अर्थ बोध

(D) तत्व बोध

Ans – (B)

19. महर्षि यास्क द्वारा रचित ग्रंथ का नाम क्या है?

(A) निरूक्तम्

(B) शुल्ब सूत्र

(C) न्यायादर्शन

(D) चरक संहिता

Ans – (A)

20. सभी छात्र किसका अभिवादन करते हैं?

(A) छात्र

(B) पिता

(C) शिक्षक

(D) प्राचार्य

Ans – (C)

21. सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कणाद

(B) पाणिनि

PDF SARTHI.COM

(C) विष्णुशर्मा

(D) कपिल

Ans – (D)

22. किसके छः अंग हैं?

(A) व्याकरण

(B) वेद

(C) पुराण

(D) ईश्वर

Ans – (B)

23. भारतवर्ष में किसकी महती परम्परा सुनने को मिलता है?

(A) सामाजिक

(B) ग्रंथ

(C) शास्त्रों की

(D) व्याकरण

Ans – (C)

24. पाणिनि ने किसकी रचना की?

(A) ग्रंथ

(B) व्याकरण

(C) दर्शन

PDF SARTHI.COM

(D) पुराण

Ans – (B)

25. वेदरूप शास्त्र क्या होते हैं?

(A) ज्ञान

(B) धर्म

(C) सत्य

(D) नित्य

Ans – (D)

26. मनोरंजन के लिए 'शास्त्रकारा' पाठ किस शैली में है?

(A) गद्य

(B) पद्य

(C) प्रश्नोत्तर

(D) नाटक

Ans – (C)

27. कक्षा में कौन प्रवेश करते हैं?

(A) छात्र

(B) शिक्षक

(C) प्राचार्य

(D) अभिभावक

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

28. छात्र किसके शास्त्रों से अवगत होगा ?

(A) हिन्दी

(B) कन्नड़

(C) मैथिली

(D) संस्कृत

Ans – (D)

29. ज्ञान का शासक कौन है?

(A) अस्त्र

(B) वेद

(C) शास्त्र

(D) ग्रंथ

Ans – (C)

30. मनुष्यों को कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की शिक्षा कौन देती है?

(A) मुनि

(B) शास्त्र

(C) पुस्तक

(D) छात्र

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

31. वेदों के कितने अंग हैं?

(A) छ:

(B) पाँच

(C) सात

(D) आठ

Ans – (A)

32. शिक्षा क्या बोध कराता है?

(A) काल

(B) उच्चारण क्रिया

(C) स्वर

(D) समास

Ans – (B)

33. कल्प किस प्रकार का ग्रंथ है?

(A) कर्मकाण्ड

(B) पुराण

(C) वेद

(D) कथा

Ans – (A)

34. कर्मकांड का वर्णन करने वाले ग्रंथ कौन हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) शिक्षा

(B) कल्प

(C) व्याकरण

(D) निरुक्त

Ans – (B)

35. 'छात्राणाम् ..... तपः' रिक्त स्थान में कौन पद होगा?

(A) शयनम्

(B) भ्रमणम्

(C) अध्ययनम्

(D) ध्यानम्

Ans – (C)

36. पिंगल किस वेदाङ्ग शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य हैं?

(A) ज्योतिष

(B) छन्द

(C) कल्प

(D) व्याकरण

Ans – (C)

37. चरक और सुश्रुत ने किस शास्त्र का प्रवर्तन किया?

(A) आयुर्वेदशास्त्र

PDF SARTHI.COM

(B) वास्तुशास्त्र

(C) ज्योतिषशास्त्र

(D) कृषि विज्ञान

Ans – (A)

38. 'बृहत्संहिता' के रचनाकार कौन हैं?

(A) वराहमिहिर

(B) आर्यभट्ट

(C) वादरायण

(D) कणादं

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM